अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

वर्ष: 6 अंक : 25 जुलाई – सितम्बर, 2021

इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क, विशाखापट्टनम

टाइटैनिक व्यू, कैलाशगिरी

मेलुकोट्टे गोपुरम का एक स्तम्भ

मांडला का बैगा नृत्य

विशाखपट्टनम का श्री वेंकटेश्वर मन्दिर

अतुल्य भारत

।। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका।।

संरक्षक : श्री अरविंद सिंह, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक : सुश्री संतोष सिल्पोकर,संयुक्त निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्य सहयोगी : श्री राज कुमार, पर्यटन मंत्रालय

मानद संपादन सहयोग : श्री मोहन सिंह

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में प्रयुक्त अधिकतर चित्र लेखकों द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं और कुछ 'गूगल', www.dindori.co.in तथा अन्य वेबसाइटों तथा व्यक्तियों से लिए गए हैं, जिनका उपयोग करने के लिए सभी का साभार धन्यवाद ज्ञापित है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :
संपादक, अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली- 110001.
दूरभाष : 011-23724255
ई-मेल- editor.atulybharat@gmail.com

सूचनाओं के प्रचार हेतु नि:शुल्क वितरण

अतुल्य भारत

वर्ष : 7 अंक 25 जुलाई से सितम्बर, 2021

इस बार पढ़ें .....

5.	41.
प्रधान सम्पादक की ओर से	अतुल्य भारत में युवाओं की भूमिका
7.	45.
विशाखापट्टनम : पूर्वी तट का रतन	धुंध का शहर -II : प्राकृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन मादिकेरी और मेलुकोटे
23.	66.
मंडला : प्राकृतिक, विरासत एवं आध्यात्मिक पर्यटन का संगम	गज़लें : श्री घनश्याम दास बैरवा
67.	
"पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां और समाचार"	

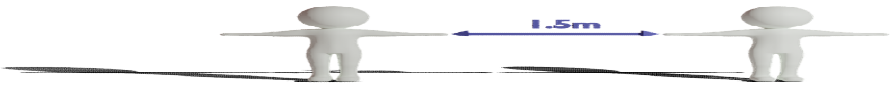

दो गज की दूरी है अभी जरूरी

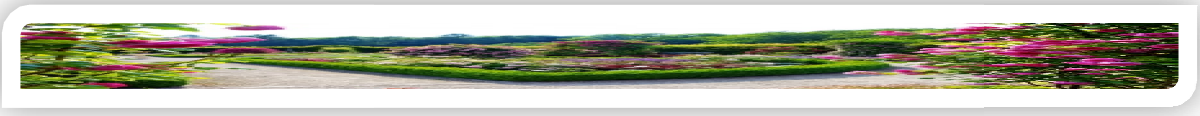

परामर्शदाता एवं प्रधान सम्पादक
ज्ञानभूषण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

✍प्रधान सम्पादक की कलम से

'अतुल्य भारत' का 25वां अंक आपके सामने हैं। जैसे कि पहले भी उल्लेख किया गया है कि हमारा प्रयास रहता है कि हम पर्यटकों को देश के अल्प ज्ञात पर्यटन क्षेत्रों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी दें। देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 73वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में सभी भारतीयों से वर्ष 2022 तक भारत के भीतर 15 स्थलों का दौरा करने का अनुरोध किया था, जिससे हमारे देश के भीतर पर्यटन का विकास होगा। उनके इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए 'अतुल्य भारत' पर्यावरणीय पर्यटन और तीर्थस्थल पर्यटन को अधिक स्थान प्रदान कर रहा है क्योंकि आज भी घरेलू पर्यटकों का एक बड़ा वर्ग ऐसे ही गंतव्य स्थलों पर जाना पसंद करता है। आंध्र प्रदेश का विशाखापट्टनम, अपने सुन्दर और रूपहले समुद्र तटों के लिए जाना जाता हैं। इन तटों के निकट बनाए गए पनडुब्बी संग्रहालय, विशाखा संग्रहालय, मछलीघर आदि यहां आने वाले लोगों को मनोरंजन के साथ ही सेना के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। आध्यात्मिक पर्यटकों के लिए प्राचीन काल के सिंहाचलम मन्दिर, कणक लक्ष्मी मन्दिर, थोटलाकोंडा बौद्ध परिसर, आधुनिक काली माता मन्दिर हैं। प्रसिद्ध कैलाशगिरी के साथ ही, बंगाल की खाड़ी का शानदार दृश्य देखने के लिए यहां का प्रसिद्ध रोप-वे आदि को होटल प्रबंध संस्थान, जयपुर में संकाय सदस्या सुश्री बशीर वंदना रावत ने अपने आलेख "विशाखापट्टनम : पूर्वी तट का रतन" में उजागर किया है।

मध्य प्रदेश का मंडला शहर मुख्य रूप से 'नर्मदा' नदी और उसके आसपास स्थित घाटों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यह जिला कई ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक दर्शनीय स्थलों से सम्पन्न है। डा. श्रीरीष श्रीवास्तव ने अपने आलेख "प्राकृतिक, विरासत एवं आध्यामिक पर्यटन का संगम" के माध्यम से पाठकों के लिए मंडला के अल्प ज्ञात आध्यात्मिक, विरासती, पर्यावरण हितैषी और अन्य दर्शनीय एवं पर्यटन स्थलों की जानकारी प्रस्तुत की हैं।

आजा़दी के बाद से ही हमारा देश चहुंमुखी विकास की दिशा में अग्रसर है और इसमें युवाओं की अहम भूमिका रही है। इस विषय को होटल प्रबंध संस्थान, हैदराबाद की छात्रा मानसी साहू ने अपने आलेख "अतुल्य भारत में युवाओं की भूमिका" में रेखांकित किया है।

कर्नाटक राज्य का कोडागु यानि कुर्ग भी ईको-पर्यटन का एक ऐसा ही पर्यटन गंतव्य है, जिसके बारे में आपने पिछली बार (अंक-24 में) पढ़ा था। इस अंतिम किश्त में कुर्ग के पर्यावरणीय पर्यटन के साथ वहां की संस्कृति, विरासत, वेश-भूषा, खानपान, विशेष व्यंजनों आवासीय सुविधाओं, प्रमुख धार्मिक स्थलों सहित ट्रैकिंग, गोल्फ, एंगलिंग (मछली पकड़ना) और रिवर राफटिंग जैसे साहसिक खेलों को रेखांकित करते हुए श्री मोहन सिंह ने "प्रकृति और आध्यात्म का अनोखा संगम" शीर्षक से अपनी इस यात्रा के अंतिम पड़ाव में मेलुकोटे के बारे में बताया है जो इस क्षेत्र के आसपास बिखरे अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य, प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों से सम्पन्न है लेकिन आज भी अधिकतर पर्यटक इससे अंजान हैं।

इनके अलावा, भारतपर्यटन, कार्यालय सिंगापुर में सहायक निदेशक श्री घनश्याम दास बैरवा की दो गजलें दी गई हैं। "पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां और समाचार" को भी समाहित किया गया है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है। इसमें "अतुल्य भारत" पत्रिका पर्यटन के क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहन देने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं। इस पत्रिका के लिए हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए हमें सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं ।

अंत में, सभी लेखकों तथा पाठकों का आभार व्यक्त करता हूं जो इस पत्रिका के लिए निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा ।

ह/-

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

विशाखापट्टनम : पूर्वी तट का रतन

*श्रीमती बशीर वंदना रावत

विशाखापट्टनम मेरे लिए सिर्फ एक जगह नहीं है, यह एक एहसास है। मैं यहां पैदा हुई थी लेकिन मैं यहां केवल अपने नाना - नानी के पास गर्मियों की छुट्टियां बिताने के लिए ही आती थी, फिर भी इस शहर ने मुझे जीवन में संजोने के लिए अपार यादें दी है। बहुत से लोग पर्यटन के इस छिपे हुए रत्न की खोज नहीं करते हैं।

विशाखापट्टनम के बारे में.....

आंध्रप्रदेश का पहला बड़ा शहर, विशाखापट्टनम वैसे तो मुख्य रूप से एक औद्योगिक शहर है। लेकिन अपने समृद्ध इतिहास और संस्कृति, हरे-भरे परिदृश्यों, मनमोहक समुद्री तटों और खूबसूरत पहाड़ियों के कारण यह एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के रूप में उभरा है। आज हम कह सकते हैं कि यह पूरे परिवार के लिए "ड्रीम हॉलिडे डेस्टिनेशन" है।

इस शहर को विज़ाग या फिर वाइजैग के नाम से भी जाना जाता है। कई उद्योगों के लिए अपनी पहचान के अलावा, इसे देश का सबसे पुराने शिपयार्ड (जहाज़ की मरम्मत करने का स्थान) होने का श्रेय भी जाता है। यह एक प्राकृतिक और भारत के पूर्वी तट पर अपनी तरह का पहला बंदरगाह है। शहर को भारतीय नौसेना की पूर्वी कमांड का मुख्यालय होने का गौरव भी प्राप्त है।

शहर के इतिहास पर एक नजर .....

प्राचीन इतिहास देखें तो यह क्षेत्र 260 ईसा पूर्व में कलिंग साम्राज्य के अधीन था। सम्राट अशोक द्वारा कलिंग विजय के बाद इस क्षेत्र पर मौर्य साम्राज्य का शासन हो गया। जिसके परिणामस्वरूप, यहां बौद्ध धर्म का आविर्भाव हुआ और पूरे क्षेत्र में थोटलाकोंडा, बाविकोंडा और बोज्जनाकोंडा जैसे बहुत सारे बौद्ध स्मारकों का निर्माण किया गया।

मौर्य साम्राज्य के बाद यह क्षेत्र सातवाहन और तत्पश्चात, 7वीं ई. में पूर्वी चालुक्य वंश के अधीन हो गया। उन्हीं के शासन के दौरान महत्वपूर्ण सिंहाचलम मन्दिर का निर्माण किया गया था। पूर्वी चालुक्यों और चोल के बीच वैवाहिक संबंध होने के कारण, कुलोत्तुंगा प्रथम के सम्मान में इस नगर का नाम कुलोत्तुंगा चोलपट्टनम रखा गया।

14वीं शताब्दी में रेड्डी साम्राज्य (जिनका उस काल में पूरे तटीय आंध्र क्षेत्र पर शासन था) और बाद में उत्कल के गजपति शासक ने पूरे परिक्षेत्र को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

1551ई. में विजयनगर साम्राज्य के राजा कृष्णदेवराय ने पद्मनाभम के निकट पोटनुरु की लड़ाई में गजपति नरेश को पराजित कर पूरे तटीय आंध्र को अपने साम्राज्य के अधीन कर दिया। 17वीं शताब्दी में विजयनगर के एक स्थानीय जमींदार, विजय रामराजू ने विशाखापट्टनम पर शासन शुरू कर दिया था। जुलाई 1794 में, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के कर्नल पेंडर गॉस्ट ने पद्मनाभम की लड़ाई में विजय रामराजू को पराजित कर उत्तरी आंध्र को ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन कर दिया।

अभिलेखों से ज्ञात होता है कि बाइबिल के अनुसार, शहर को तब इसाख-पटनम के नाम से जाना जाता था। अंग्रेजों ने अपनी सुविधा के लिए इसे इस्साक-पटनम (ISSAC) नाम दे दिया, लेकिन भारतीयता दर्शाने के लिए "वी" का उपसर्ग जोड़ कर इसे 'विस्साक-पटनम' कर दिया गया। 1803 में इसे जिला बनाते समय, लेकिन स्थानीय प्रभावशाली लोगों के दबाव में, इसका नाम विशाखापट्टनम रखा गया। वाईजैग अथवा विजाग नाम अंग्रेजों द्वारा गढ़ा गया था क्योंकि अंग्रेजों को विशाखापट्टनम बोलने में कठिनाई होती थी। 1861 में विजाग नगर पालिका का गठन किया गया। 19 दिसंबर 1933 की तारीख का विशाखापट्टनम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इस दिन यहां हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड की नींव रखी गई। विशाखापट्टनम पोर्ट ने इस छोटे से शहर के भाग्य को औद्योगिक शहर में बदल दिया।

शहर के सुरम्य परिदृश्यों के कारण विशाखापट्टनम का पर्यटन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। इसके विशाल आकर्षक समुद्र तट, प्राचीन मन्दिर, ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल के साथ ही, यहां की सुरम्य, और खूबसूरत गुफाएं और शानदार घाटियां बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

रामकृष्ण तट, ऋषिकोंडा तट, गंगावरम तट, यारडा तट समुद्र के नज़ारों का आनंद लेने के लिए यह एक आदर्श स्थान हैं। पर्यटकों के लिए एर्रा माट्टी डिब्बालू, कैलाशगिरी, इंदिरा गांधी ज़ूलॉजिकल पार्क आदि के अलावा अराकू घाटी और बोर्रा गुफाएं भी इस क्षेत्र के लोकप्रिय गंतव्यों में शामिल हैं। इसके समुद्र तट के आसपास के अतिरिक्त आकर्षण जैसे पनडुब्बी संग्रहालय, विशाखा संग्रहालय, मछलीघर, काली मन्दिर, कई भोजनालय और पार्क हैं। इनके साथ-साथ इसके धार्मिक महत्व के सिंहाचलम मन्दिर, कणक लक्ष्मी मन्दिर और काली माता मन्दिर हैं। अपने संगीत फव्वारे के लिए VUDA (वुडा) पार्क और इन सब के साथ-साथ, बंगाल की खाड़ी का शानदार दृश्य देखने के लिए डॉल्फ़िन नोज और रोप-वे भी बहुत लोकप्रिय है।

कहते हैं विशाखापट्टनम की आत्मा उसकी तीन पहाड़ियों में निहित है। इन तीन पहाड़ियों की सबसे ऊंची चोटी को 'रॉस हिल' कहा जाता है, जहां 'मदर मैरी' नाम का सफेद रंग का एक

खूबसूरत चर्च है। यह वर्ष 1864 में बनाया गया था। दूसरी चोटी पर 'बाबा इश्क मदनी' की दरगाह है और तीसरी चोटी पर 'भगवान वेंकटेश्वर का मन्दिर' है। यह तीनों पहाड़ियां विशाखापट्टनम के लोगों के बीच के सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक हैं।

सबसे पहले समुद्र तट के आस पास सुन्दर पर्यटन स्थलों की बात करते हैं :

थोटलाकोंडा बौद्ध परिसर, शहर से लगभग 15 कि.मी. दूर भीमुनिपट्टनम के पास, समुद्र तल से लगभग 420 फीट की ऊंचाई पर, एक पहाड़ी पर स्थित है। यहां से समुद्र की अनोखी लहरों को देखने का एक अलग ही अनुभव है। असल में, इस क्षेत्र में एक नौसैनिक अड्डे की स्थापना करने के लिए भारतीय नौसेना द्वारा एक हवाई सर्वेक्षण किया जा रहा था और तभी थोटलाकोंडा प्रकाश में आया। इसका पता लगने के बाद, 1988 से 1993 तक आंध्र प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा प्रमुख उत्खनन कार्य किया गया। उत्खनन में 2000 वर्ष पहले विकसित, हीनयान शाखा के एक बौद्ध परिसर का अस्तित्व पाया गया। परिसर के दक्षिण में पहाड़ी में चट्टानों को काटकर आधार में बनाए गए जलाशय (रॉक-कट सिस्टर्न) आज भी देखे जा सकते हैं, जो कभी मठ के निवासियों के लिए जल स्रोत थे।

थोटलाकोंडा पर प्राचीन कलिंग का प्रभाव था और यह श्रीलंका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न हिस्सों में बौद्ध धर्म के प्रसार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। यह स्थान दिन के समय हल्के चूने के प्लास्टर के साथ चमकने वाले ऊंचे स्तूप और रात के समय दीपकों की पंक्तियों की रोशनी से यह समुद्री यात्रियों के लिए मार्गदर्शक स्थल (लाइट हाउस) के रूप में कार्य करता था। अभिलेखों को देखने पर, ऐसा प्रतीत होता है कि इस मठ को किसी राजवंश से संरक्षण नहीं मिल सका था। कुछ व्यापारियों और स्थानीय अनुयायियों ने परिसर को सहायता प्रदान की थी। साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि थोटलाकोंडा में सौ से अधिक भिक्षुओं का निवास था। यह भारतीय संस्कृति, विशेष रूप से बौद्ध धर्म के अंतर महाद्वीपीय प्रसार की प्रक्रिया में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

एर्रा मैटी डिब्बालू :

विशाखापट्टनम और भीमुनिपट्टनम के बीच खंडित और स्थिर तटीय लाल तलछट के टीले हैं। तेलुगु में, इस क्षेत्र को "एर्रा मैटी डिब्बालू" के रूप में जाना जाता है, जिसका अनुवाद "रेड सैंड हिल्स" किया जाता है। यह उत्तर-पश्चिम में चिटिगड्डा नदी और दक्षिण-पश्चिम में पेद्दागड्डा नदी से घिरे, एर्रा मैटी डिब्बालू को विशाखापट्टनम में प्राकृतिक संपदा की एक अनोखी संरचना

स्वीकार करते हुए, **भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने इस स्थान को "भू-विरासत स्थल"** के रूप में अधिसूचित किया है।

यारादा तट :

बंगाल की खाड़ी में यारादा समुद्र तट निस्संदेह यहां का एक सबसे अच्छा समुद्र तट है। एक **तरफ बंगाल की खाड़ी और दूसरी तरफ तीन शानदार पहाड़ियों से घिरे हुए इस सुरम्य तट पर सूर्योदय और सूर्यास्त के मनोरम दृश्यों को देखने के लिए पर्यटकों की भीड़ देखी जा सकती है। ऐसे सुंदर दृश्यों के साथ यहां की सैर करने का भी एक अलग ही आनंद है। सैलानी इस तट पर ठंडे समुद्र के नीले पानी में अठखेलियां करते देखे जा सकते हैं।**

ऋषिकोंडा (रुशिकोंडा) तट :

शहर से आठ कि.मी. **दूर ऋषिकोंडा तट को सुनहरी रेत और बंगाल की खाड़ी की साफ-सुथरी** लहरों, स्वच्छता और **सुरक्षा के किए गए उपायों आदि को प्रमाणित करने के बाद,** फाउंडेशन फॉर एनवायरनमेंट एजुकेशन (एफईई), डेनमार्क, ने आंध्र प्रदेश के इस **समुद्र तट को** "ब्लू फ्लैग प्रमाणन" प्रदान किया है। हरे-भरे पौधों से घिरा यह तट प्रकृति प्रेमियों को भी आकर्षित करता है। यहां की **सुनहरी रेत के लिए प्रसिद्ध,** इस तट को **विशेष तौर पर विदेशी पर्यटकों** द्वारा बहुत पसंद किया जाता है । **ऋषिकोंडा तट तैराकी,** वाटर स्कीइंग और सर्फिंग जैसे **अन्य वाटर स्पोर्ट्स का आनंद लेने के लिए भी लोकप्रिय है।** समुद्र तट एक साहसिक तत्व को उत्प्रेरित करता है। यदि आप जलक्रीडा प्रेमी हैं तो इस समुद्र तट को अवश्य ही पसंद करेंगे। यहां जलक्रीड़ा करने के लिए कुछ प्रसिद्ध खेल उपलब्ध कराए गए हैं।

इस समुद्र तट पर विभिन्न **जलक्रीड़ाओं का आनंद लिया जा सकता है।**

स्नॉर्कलिंग : पानी की सतह देखने का सबसे अच्छा विकल्प है।

कयाकिंग : यहां उबड़-खाबड़ समुद्र में किश्ती और चप्पू चलाने का एक अविस्मरणीय अनुभव है। तट पर एक प्रशिक्षक (जो समुद्र में एक कि.मी. की दूरी तक आपका मार्गदर्शन करेगा) के साथ समुद्री कयाकिंग करके जलक्रीड़ा का एक अवसर ले सकते हैं।

पैरामोटरिंग : पैरामोटरिंग की सुविधा समुद्र तट के साथ-साथ तटों के आसपास की खूबसूरती को देखने के लिए है। आप पीछे की सीट पर बैठकर प्रशिक्षक के साथ सवारी करने का आनंद ले सकते हैं।

स्पीड बोटिंग : यदि आप अधिक आराम से समुद्री रोमांच की तलाश में हैं तो अपने दोस्तों के साथ स्पीडबोट पर सवार होकर समुद्र के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं।

जेट स्की : तट पर जेट स्की सुविधा भी उपलब्ध है, जिसमें आप अकेले या चालक या अपने दो मित्रों के साथ समुद्र में दूर तक सैर कर सकते हैं।

यहां की एक विशेषता यह भी है कि दिन भर यहां पर्यटकों की खूब मस्ती व खेलकूद चलते हैं। लेकिन शाम के समय में यह एक आदर्श और शांत स्थल बन जाता है। तट के आसपास आंध्र प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा बनाए गए कॉटेज और रेस्तरां भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

शहर के निकट होने से (लगभग दो से तीन कि.मी. की दूरी) रामकृष्ण समुद्र तट पर्यटकों के साथ-साथ स्थानीय निवासियों में भी लोकप्रिय है। यहां के निवासी इसे शहर का दिल भी कहते हैं। दोस्तों और परिवार के साथ घूमने या फिर शाम का समय बिताने के लिए यह एक अच्छा स्थान है। घोड़े की सवारी और ऊंट सवारी भी कर सकते हैं। तट के साथ साथ लगभग चार कि.मी की सीधी सड़क मेरीन ड्राइव के रूप में जानी जाती है। जिसके साथ - साथ कुछ होटल, रेस्तरां और स्ट्रीट फूड के स्टाल हैं, जहां स्थानीय खानपान के साथ अन्य स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद ले सकते हैं।

रामकृष्ण तट पर जलक्रीड़ा यानि पानी में खेलने के लिए एक अच्छी सुविधाएं हैं। यह समुद्र तट आराम करने के लिए भी सबसे अच्छी जगह है, यहां जब भी जाएंगे, यह जीवंत ही लगेगा। दिन के समय में यहां तैरना, धूप सेंकना, सर्फिंग और बीच वॉलीबॉल खेलना आदि कुछ लोकप्रिय गतिविधियां देखी जा सकती है।

चूंकि तट पर कहीं-कहीं कुछ चट्टानें भी हैं, जिन पर प्रशासन द्वारा एक निजी कंपनी से समझौता करके छतरी वाले बैंच रखवाएं हैं, आप शाम को समुद्र तट के किनारे बैठ सकते हैं। हां, इन पर बैठने के लिए ₹ 30 प्रति घंटा देकर कुछ जेब ढीली करनी पड़ेगी। पर्यटक इस क्षेत्र में पूरे दिन घूम सकते हैं और शाम के समय रेत पर मस्ती कर सकते हैं।

एनटीआर बीच रोड, पांडुरंगपुरम के निकट समुद्रतट पर पार्कों और समुद्र तटों के अलावा, पनडुब्बी और विमान संग्रहालय, विशाखा संग्रहालय, वरुण आईनॉक्स, ओपन जिम, एक्वेरियम जैसे कई

अद्भुत संग्रहालय हैं जो प्राचीन इतिहास और आधुनिक संस्कृति के अद्भुत संयोजन को प्रदर्शित करते हैं।

आईएनएस कुर्सुरा पनडुब्बी संग्रहालय :

रामकृष्ण समुद्रतट पर कुर्सुरा संग्रहालय का इस शहर के पर्यटन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी एक विशेषता है कि यह एशिया में अपनी तरह का पहला और दुनिया में दूसरा संग्रहालय है। वास्तव में, आईएनएस कुर्सुरा रूस में निर्मित एक पनडुब्बी है। यह 18 दिसंबर 1969 को बनाई गई थी और 20 फरवरी 1970 को अपनी यात्रा शुरू की और बाल्टिक सागर हुए 11 मई 1970 को विशाखापट्टनम पहुंची थी। भारतीय नौसेना द्वारा 2001 में आईएनएस कुर्सुरा को सेवामुक्त करने के बाद, नौसेना ने 5.5 करोड़ रुपए की परियोजना लागत से 2002 में इसे एक संग्रहालय में परिवर्तित कर युद्ध-स्मारक के रूप में विकसित किया है। सबमरीन की लंबाई 91.3 मीटर और चौड़ाई 8.00 मीटर है। यह अपनी तरह का एक अनूठा संग्रहालय है जो यहां आने वाले लोगों को पनडुब्बी के अंदर की यात्रा करने का अवसर देता है।

यदि आप भारतीय नौसेना के बारे में अधिक जानने के इच्छुक हैं तो इस संग्रहालय को देखने अवश्य ही जाना चाहिए। यहां पनडुब्बियों के कार्यकाल, पनडुब्बी कैसे काम करती है, इसमें क्या होता है, पनडुब्बी के आंतरिक कामकाज के साथ- साथ युद्ध के दौरान अंदर रहने का चुनौतीपूर्ण कार्य आदि के बारे में तस्वीरों, कलाकृतियों और लेखों की

मदद से आसान जानकारियां दी जाती हैं। संग्रहालय में भारतीय नौसेना द्वारा युद्धों के दौरान इस्तेमाल किए गए विभिन्न हथियारों के साथ-साथ स्थानीय लोगों द्वारा बनाई गई आदिवासी महिलाओं की ग्रामीण जीवन शैली को दर्शाती कुछ पुरानी कलाकृतियां और पेंटिंग भी लगाई गई हैं

समय: दोपहर 2:00 बजे – रात 8:30 बजे (मंगलवार से शनिवार) (रविवार) को प्रात: 10:00 बजे से 12:30 तक और फिर 2:00 बजे से 8:30 तक। प्रवेश शुल्क : बच्चों के लिए - ₹ 20/-, वयस्कों के लिए - ₹ 40/- और कैमरा अंदर ले जाने के लिए ₹ 200/- है।

टीयू 142 विमान संग्रहालय :

टीयू 142 विमान संग्रहालय शहर के लिए एक गौरव है। यह भी एक अद्‌वितीय संग्रहालय है। कुर्सुरा सबमरीन संग्रहालय के सामने लगभग एक कि.मी. दूर है। वायुसेना ने 30 वर्ष और 30,000 घंटे के उड़ान इतिहास रखने वाले एक नौसैनिक विमान को सेवामुक्त कर के उसे इस संग्रहालय में परिवर्तित किया है।

यह विमान संग्रहालय नौसेना कर्मियों के जीवन के बारे में बहुत कुछ बताता है। यहां अंदर कदम रखते ही, पूरी तरह से एक अलग दुनिया दिखाई देती है। विमान संग्रहालय में कई वैमानिकी उपकरण हैं, जैसे इंजन, प्रोपेलर, पनडुब्बी रोधी मिसाइल, ब्लैक बॉक्स, सोनोबॉय और बचाव किट आदि प्रदर्शित किए गए हैं। इसमें एक फ्लाइट सिम्युलेटर प्लेटफॉर्म भी है जो एक वास्तविक उड़ान का आभासी अनुभव प्रदान करता है।

कैलाशगिरी हिल पार्क :

समुद्र तल से 360 फीट ऊपर स्थित, शिव और पार्वती की मूर्तियों के लिए प्रसिद्‌ध, कैलाशगिरी एक छोटी सी पहाड़ी का नाम है, जिस पर एक खूबसूरत पार्क बनाया गया है। इस पार्क की चोटी पर शिव-पार्वती की धवल आकर्षक प्रतिमा है। कैलाशगिरी पहाड़ी एक प्रसिद्‌ध पर्यटन स्थल है। यह समुद्र तट और छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। कैलाशगिरी तक केबल कार द्‌वारा भी जाया जा सकता है। पहाड़ी पर ही चिल्ड्रन पार्क, टाइटैनिक व्यूप्वाइंट, फूलघड़ी, टेलीस्कोपिक प्वाइंट भी हैं। यहां बच्चों के लिए एक टॉय ट्रेन भी उपलब्ध कराई गई है। यह जगह फोटोग्राफी के लिए भी उपयुक्त स्थान है क्योंकि यह पार्क समुद्र तटों और पहाड़ियों के शानदार नजारे प्रस्तुत करता है। वातावरण इतना शांत है कि आप पूरी तरह से शांति महसूस करेंगे। जब आप
समुद्र में बोटिंग करते हैं तो वहां से भी दूर से ही पहाड़ी पर सफेद अक्षरों में लिखा कैलाशगिरी सुंदर लगता है। यहां से बंगाल की खाड़ी का दृश्य बहुत खूबसूरत नजर आता है।

विशाखापट्टनम के सबसे खूबसूरत और विहंगम दृश्य देखने के लिए भी कैलाशगिरी जरूर जाएं। पहाड़ी से एक दिशा में विशाखापट्टनम का दृश्य नजर आता है। चारों ओर हरियाली और ऊपर साफ नीला आकाश एक अनोखा अनुभव प्रदान करते हैं।

वुडा पार्क :

कैलाशगिरी से दो कि.मी. दूर, बीच रोड पर, वुडा पार्क में सुन्दर हरियाली बहुत ही मनोहारी है। लगभग 37 एकड़ भूमि में 2500 विषम पेड़ यहां की समृद्ध हरियाली को बनाए हुए हैं। यह पूरा पार्क लगभग 55 एकड़ जमीन पर बनाया गया है, जिसमें से 37 एकड़ भूमि में पौधों की विभिन्न प्रजातियां उगाई गई हैं। पार्क न केवल पर्यावरण को बढ़ावा देता है बल्कि यहां बच्चों का खेल क्षेत्र, योग केंद्र, एक सुसज्जित व्यायामशाला (जिम) और बहुत कुछ मिलता है।

वुडा पार्क सुंदर हरियाली और समुद्र के मनोरम दृश्यों के साथ एक बड़ा पार्क है। नौका विहार सुविधा और एक स्केटिंग रिंग, साथ ही घोड़ों और ऊंटों की सवारी का आनंद, जो बच्चों में लोकप्रिय हैं, वैसे बड़े भी इनका आनंद ले सकते हैं।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इसमें एक संगीतमय फव्वारा भी लगाया गया है जो संगीत की ताल पर नाचते हुए रंगीन उतार-चढ़ाव के साथ पानी का छिड़काव करता है।

सेंट्रल पार्क में म्यूजिकल फाउंटेन का समय सोमवार से शुक्रवार शाम 6:15 बजे, शाम 7:15 बजे और रात 8:30 बजे है।

VUDA सेंट्रल पार्क में प्रवेश शुल्क: सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक, वयस्क / बच्चे प्रति व्यक्ति 20 रुपये है। दोपहर 2 बजे से 8:30 बजे तक, वयस्क/बच्चे प्रति व्यक्ति ₹ 60 रुपए है, इसमें संगीत फाउंटेन शो का टिकट भी शामिल है। साइकिलिंग राइड्स (एक घंटे के लिए) का शुल्क ₹ 50 है।
सुबह 4:00 बजे से 9:00 बजे तक और शाम 4:00 बजे से रात 8:00 बजे तक, जॉगिंग और पैदल चलने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है।

विशाखापट्टनम रोपवे :

विशाखापट्टनम में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए देश का सबसे बड़ा रोपवे बनाया गया है। रोपवे के लिए विशाखापट्टनम शहरी विकास प्राधिकरण, ग्रेटर विशाखापट्टनम म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन और आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम ने दो रूट तय किए हैं। इनके तहत कैलाशगिरी से सिम्हाचलम हिल्स और कैलाशगिरी से डॉल्फिन्स नोज को रोपवे से जोड़ा गया है। कैलाशगिरी से डॉल्फिन्स नोज को जोड़ने वाला यह रोपवे रामकृष्ण समुद्र तट रोड के ऊपर से होते हुए कुल मिलाकर 12 कि.मी. की दूरी को कवर करता है। इस रोपवे की ट्रालियों के पारदर्शी केबिनों में बैठकर बंगाल की खाड़ी के अद्भुत और शानदार दृश्य देखे और कैमरे में कैद किए जा सकते हैं। इसके लिए रोपवे प्राधिकरण द्वारा कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

रोपवे – एक हवाई यात्रा :

कैलाशगिरी की सुंदरता में एक और पंख जोड़ने वाला, रोपवे कैलाशगिरी पहाड़ी की चोटी का तीसरा मार्ग है। इस रोमांचक हवाई यात्रा का औपचारिक उद्घाटन 05-05-2004 को किया गया था। यह रोपवे आंध्र प्रदेश के साथ-साथ पूरे तटीय भारत में अपनी तरह का पहला है। कैलाशगिरी जाने वाले पर्यटक 375 मीटर रोपवे के ऊपर और नीचे यात्रा करते समय फाइबर ग्लास केबिन से 360 डिग्री का दृश्य देख सकते हैं। रोपवे 'डॉल्फिन नोज' से अप्पू घर की सीमा के भीतर समुद्र तट का एक मनोरम दृश्य प्रदान करते हुए और हरियाली के साथ कंक्रीट के जंगल का एक विहंगम हवाई दृश्य प्रस्तुत करता है। इसके लिए (ऊपर और नीचे) वयस्क : ₹80/- प्रति व्यक्ति और बच्चों के लिए ₹ 45/-प्रति शुल्क लिया जाता है।

इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क :

एक और जगह जो बच्चों को आकर्षित करती है वह है इंदिरा गांधी जूलॉजिकल पार्क। यह पार्क, विशाखापट्टनम शहर से करीब 25 कि.मी. की दूरी पर कंबालकोंडा रिजर्व फॉरेस्ट के मध्य में 620 एकड़ के क्षेत्र में बनाया गया एक चिड़ियाघर है, जो पक्षियों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के प्राकृतिक आवास के लिए प्रसिद्ध है। वर्ष 1977 में स्थापित किए गए इस पार्क में ऐसी व्यवस्था की गई है कि वन्यजीवों के लिए प्राकृतिक दिखाई देता है। यहां बाघ, शेर, पैंथर्स, काले भालू, रीछ, हिप्पोपोटामस, जगुआर, बंदर, अजगर, हाथी और मगरमच्छ जैसे कई अन्य जानवरों को

देख सकते हैं। भारतीय प्रजातियों के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया के रंगीन तोते भी इस चिड़ियाघर का एक प्रमुख आकर्षण हैं।

कणक महालक्ष्मी मन्दिर :

लगभग 100 साल से भी अधिक पुराना यह मन्दिर शहर की विरासत है। जिसका समय समय पर कायाकल्प किया जाता रहा है। पुराने समय में एक छोटे मन्दिर के रूप में निर्मित यह मन्दिर धीरे धीरे आज एक विशाल मन्दिर का आकार ले चुका है। यहां एक विशेषता है कि देवी का मुख पश्चिम दिशा की ओर है जबकि पारंपरिक रूप से किसी भी मूर्ति का मुख पश्चिम या उत्तर की ओर नहीं रखा जाना चाहिए। इसे संतुलित करने के लिए एक राजा राजेश्वरी की मूर्ति को कनक महालक्ष्मी की मूर्ति के सामने रखा गया है। अन्य मूर्तियों की स्थापना के विपरीत, एक विशेषता और भी है कि यहां कणक लक्ष्मी की मूर्ति पर छत नहीं है।

देवी कणक महालक्ष्मी के बारे में यहां कई किंवदंतियां प्रचलित हैं। एक स्थानीय किंवदंती के अनुसार, विशाखापट्टनम के राजा को यह कथित रूप से 1912 में बुरुजुपेटा में एक कुएं में मिली थी, जिसे राजा ने ही वहां से निकाल कर श्री कनक महालक्ष्मी अम्मावरी की मूर्ति को स्थापित कराया था। अब यह मिथक हो या तथ्य, आज इसे विशाखापट्टनम की संरक्षिका और मातृदेवी माना जाता है।

आज भी विवाहित महिलाओं का विश्वास है कि देवी उन्हें शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद देती हैं। नवविवाहित शादी के तुरंत बाद आशीर्वाद लेने मन्दिर पहुंचते हैं। नवजात शिशुओं को मन्दिर में श्री महालक्ष्मी अम्मावारु के चरणों में रखा जाता है। कणक महालक्ष्मी मन्दिर को, आज की स्थिति के अनुसार, प्रदेश के तीन शीर्ष, सबसे महत्वपूर्ण और अमीर मंदिरों में से एक माना जाता है।

श्री कनक महालक्ष्मी अम्मावरी की प्रतिमा

मन्दिर का विस्तार करने की दिशा में, भवन की संरचना शैली में कई बड़े परिवर्तन किए गए हैं, जो मध्यकाल और आधुनिक काल का एक विलक्षण संयोजन प्रतीत होता हैं। कणक महालक्ष्मी मन्दिर सबसे पूजनीय तीर्थस्थलों में है। यहां प्रति वर्ष कई उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

काली मन्दिर :

पांडुरंग पुरम में, राम कृष्ण तट मार्ग पर स्थित काली मन्दिर विशाखापट्टनम का एक शानदार उत्तम पर्यटक स्थान और लोकप्रिय तीर्थ स्थल है। काली मन्दिर को कालीमाता मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मन्दिर का निर्माण 1984 में शुरू हुआ था। मूल रूप से, इस मन्दिर के स्थान पर एक बांस से बनी काली की मूर्ति बताई जाती है, जो इसकी विरासत और समृद्ध इतिहास का महत्वपूर्ण कारक है।

काली मन्दिर की वास्तुकला:

इंजीनियरिंग के नए तरीकों का उपयोग करके, बेहद खूबसूरती से मन्दिर का आधुनिकीकरण किया गया है। मन्दिर के प्रांगण में प्रवेश करते ही ऊंचे-ऊंचे खंभे और गुंबद आपका अभिनंदन करते हैं। इसमें एक मन्दिर की रसोई, एक कार्यालय और पुजारियों के रहने के लिए क्वार्टर भी हैं। पास में ही, देवी काली पूजन-स्थान के बाहर प्रांगण में भगवान शिव को समर्पित एक और मन्दिर है, जिसमें एक ही संपूर्ण पत्थर को मूर्तरूप देकर शिवलिंग बनाया और स्थापित किया गया है। इसका वजन लगभग 10 किलोग्राम है और इसे 'रसलिंग' नाम दिया गया है।

मन्दिर में प्रार्थना करने से लेकर टहलने और कुछ अविश्वसनीय कलाकृतियों की झलक देखने का अवसर मिलता है। मन्दिर मूलतः एक तीर्थ है, अत: अकेले बैठ कर शांति प्राप्त करने के लिए (विशेषकर बुजुर्ग श्रृद्धालुओं के लिए) एक पसंदीदा स्थान है। यहां फोटोग्राफी के लिए एक

बेहतरीन लोकेशन भी है, जहां संस्कृति और प्रकृति की भावनाओं के साथ - साथ लोगों को भी अपने कैमरे में कैप्चर कर सकते हैं।

काली मन्दिर आने के लिए शहर में कहीं से भी, एक ऑटो ले कर काली मन्दिर तक पहुंच सकते हैं। काली मन्दिर के निकट तक सरकारी बसें भी चलती हैं। यह परिवहन का एक सस्ता साधन है। यह मन्दिर सप्ताह के प्रत्येक दिन, सुबह 6:00 बजे से दोपहर 1:00 एक बजे तक और फिर शाम 4:00 बजे से रात 8:00 बजे तक खुला रहता है। काली मन्दिर में प्रवेश नि:शुल्क है।

सिंहाचलम मन्दिर :

विशाखापट्टनम में स्थित, यह एक प्रमुख प्राचीन धार्मिक तीर्थस्थल है और इसे भगवान नरसिंह का निवास स्थान माना गया है। विशाखापट्टनम में सिंहाचलम के पीठासीन देवता, श्री वराह लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी का एक अन्य लोकप्रिय नाम 'सिम्हाद्री अप्पन्ना' भी है।

सिंहाचलम मन्दिर विशाखापट्टनम शहर की सीमा के भीतर ही है, लेकिन शहर के कोने पर 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा से लगभग नौ कि.मी. और विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन से लगभग 14 कि.मी. दूर है। चूंकि शहर में सभी प्रकार के यातायात की सुविधा है, अत: यहां आने के लिए आटो, टैक्सी और सरकारी बसें आसानी से मिल जाती है।

पौराणिक महत्व :

यह मन्दिर, सिंहाचलम पर्वत पर स्थित है। सिंहाचलम का अर्थ है, सिंह का पर्वत। जब प्रह्लाद की नारायण भक्ति से उसके पिता हिरण्यकश्यप के अहंकार को ठेस पहुंची तो उसने अपने ही बेटे को बहुत कष्ट दिए और उसे दण्डित करने के लिए कई उपाय किए, लेकिन प्रह्लाद पूरी तरह से सुरक्षित रहा। अंततः श्री विष्णु ने हिरण्यकश्यप का संहार करने के लिए नरसिंह रूप धारण किया और हिरण्यकश्यप का वध करके अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इसके बाद ही सिंहाचलम पर्वत पर प्रह्लाद ने ही भगवान नरसिंह को समर्पित इस मन्दिर की स्थापना की थी। यह युगों पुरानी घटना है, इसलिए मन्दिर की स्थापना के संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। समय बीतता गया और अंततः यह मन्दिर मानवीय लापरवाही का शिकार हो गया। उचित रखरखाव के अभाव में मन्दिर अपनी स्थापना के सदियों बाद धरती में समा गया। इस मन्दिर के अस्तित्व में आने की घटना का वर्णन 'स्थल पुराण' में मिलता है। चंद्रवंशी राजा पुरुरवा अपनी पत्नी उर्वशी के साथ अपने विमान में बैठकर जा रहे थे। लेकिन किसी अदृश्य शक्ति के प्रभाव से उनका विमान सिंहाचलम पर्वत पर पहुंच गया तो वहां देववाणी (आकाशवाणी) सुनाई दी और उससे प्रेरित होकर उन्होंने धरती के अंदर से भगवान नरसिंह की यह प्रतिमा बाहर निकाली और

आकाशवाणी के आदेशानुसार उस प्रतिमा को चंदन के लेप से ढक कर पुनःस्थापित कर दिया। उसी आकाशवाणी के द्वारा यह आदेश दिया गया कि वर्ष में केवल एक बार यह चंदन का लेप भगवान नरसिंह की प्रतिमा से हटाया जाए।

इसके बाद वर्तमान मन्दिर से प्राप्त कई शिलालेखों से मन्दिर के निर्माण और जीर्णोद्धार कराने वालों की जानकारी मिलती है। इन शिलालेखों में सबसे पहले सन् 1098-99 के दौरान चोल राजा कुलोत्तुंगा प्रथम के द्वारा मन्दिर में निर्माण की जानकारी सामने आती है। इसके बाद सन् 1137-1156 के दौरान वेलानंदू की महारानी के द्वारा मन्दिर में स्थापित प्रतिमा को स्वर्णमंडित कराने की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अलावा एक अन्य शिलालेख में विजयनगर साम्राज्य के राजा श्री कृष्ण देवराय और उनकी रानी के द्वारा मन्दिर में 991 मोतियों की एक माला और अन्य बहुमूल्य रत्न समर्पित किए जाने का उल्लेख है।

सिंहाचलम मन्दिर प्रवेश द्वार (साभार: विशाखापट्टनम पर्यटन)

संरचना :

मन्दिर का निर्माण द्रविड़ वास्तुकला के अनुसार किया गया है। मन्दिर में एक गोपुरम है और उसके बाद एक 16 स्तंभों वाला एक मंडप, जिसे मुखमंडपम कहा जाता है। (जिसे हम 'मेन हाल' कह सकते हैं)। इसके साथ ही काले ग्रेनाइट पत्थर से बनाया गया एक बरामदा है। इस बरामदे में पत्थरों पर पुराणों की घटनाओं पर आधारित अद्वितीय नक्काशियां देख सकते हैं, जो सिर्फ

सिंहाचलम मन्दिर में ही देखने को मिलती है। इसके बाद मन्दिर के उत्तरी हिस्से में 96 स्तंभों पर आधारित नाट्यमंडपम बनाया गया है।

मन्दिर के गर्भगृह में श्री वराह-नरसिंह की प्रतिमा (यह प्रतिमा श्री विष्णु के वराह अवतार और नरसिंह अवतार से मिलाकर बनी है) स्थापित है। मन्दिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां भगवान नरसिंह के साथ माता लक्ष्मी भी विराजमान है। मन्दिर में स्थापित मुख्य प्रतिमा पर, आज भी चंदन का लेप किया हुआ है और वर्ष में एक बार ही, अक्षय तृतीया के दिन चंदन का यह लेप हटाया जाता है। यही वह दिन है, जब भक्त अपने भगवान की मूल प्रतिमा का दर्शन प्राप्त कर पाते हैं। प्रतिमा से चंदन का लेप हटा कर, पुन: लेप करने को 'चंदनोत्सवम' के रूप में मनाया जाता है।

वैसे तो मन्दिर तक पहुंचने के लिए पहले से ही सीढ़ियां थीं, लेकिन श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशाखापट्टनम महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण ने यहां पक्की सड़क का निर्माण कर मन्दिर के प्रवेश द्वार तक वाहनों के पहुंचने की सुविधा उपलब्ध कराई है, साथ ही सीढ़ियों को भी पक्का बनावाया गया है। मन्दिर तक का पूरा प्रवेश मार्ग अनन्नास और आम के पेड़ों से हरा भरा है। माधव धारा की ओर से मन्दिर तक पैदल आने के लिए एक अलग मार्ग है। जिससे श्रद्धालु ट्रेकिंग करते हुए भी मन्दिर तक जा सकते हैं। भक्तों के विश्राम के लिए इन वृक्षों के नीचे पत्थर के बैंच भी रखवाए गए हैं। मार्ग पर बीच-बीच में तोरण द्वार बने हुए हैं।

शनिवार और रविवार को मन्दिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं, इसलिए अच्छी-खासी भीड़ होती है। साथ ही यहां दर्शन करने के लिए सबसे उपयुक्त समय अप्रैल से जून तक का होता है। यहां पर मनाए जाने वाले मुख्य पर्व वार्षिक कल्याणम (चैत्र शुद्ध एकादशी) और चंदन यात्रा (वैशाख माह का तीसरा दिन) हैं।

सिंहाचलम मन्दिर परिक्षेत्र (साभार: विशाखापट्टनम पर्यटन)

हिल स्टेशनों के प्रेमियों के लिए, अराकू घाटी विज़ाग में रहने की जगह है। यह स्थान विज़ाग से करीबन 115 कि.मी. की दूरी पर है और यहां पहुंचने के लिए चार से पांच घंटे का समय लगता है

लगभग 1000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह हिल स्टेशन अपनी प्राकृतिक सुंदरता और मनोरम दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के खूबसूरत झरने, बगीचे और घाटियां प्रकृति प्रेमियों को भारी संख्या में अपनी ओर आकर्षित करती हैं। अराकू वैली जाने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए रेल मंत्रालय के सहयोग से, भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा अति आधुनिक 'विस्टाडोम' कोचों की व्यवस्था की है। इसके बारे में फिर कभी विस्तार से चर्चा करेंगे।

कैसे पहुंचे ?

वायु मार्ग : विशाखापट्टनम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा शहर से मात्र 13 कि.मी. दूर है।

रेल मार्ग : **विशाखापट्टनम भारत के सभी बड़े शहरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है।**

सड़क मार्ग : विशाखापट्टनम न केवल आंध्र प्रदेश बल्कि तेलंगाना, तमिलनाडु, ओडिशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों से राष्ट्रीय राजमार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है।

कहां ठहरें :

विशाखापट्टनम में बजट होटल से लेकर पांच तारा तक होटल मिल जाते हैं। आप अपनी सुविधा और बजट के अनुसार होटल का चुनाव कर सकते हैं।

इस प्राचीन शहर को अपनी समृद्ध संस्कृति और पुरानी विरासत के साथ, आज एक श्रेष्ठ आधुनिक शहर होने का गौरव प्राप्त है। विज़ाग प्रकृति प्रेमियों, पर्यावरण के प्रति उत्साही, पशु प्रेमियों और तीर्थयात्रियों के लिए सबसे अधिक मांग वाले पर्यटन गंतव्यों में से एक है। देश में पर्यटन के क्षेत्र **आंध्र प्रदेश को वर्ष 2019 में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मिला है।**

यदि आप ऐसे गंतव्य की तलाश करते हैं जो प्राकृतिक सुंदरता और मानव निर्मित चमत्कारों के साथ आपकी आत्मा को उभारता रहे, तो विशाखापट्टनम के आध्यात्मिक दर्शनीय स्थलों, यहां पर्यटन के आकर्षक स्थलों की यात्रा करें। अपने आप में अनूठे, अद्भुत और अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त करने के लिए एक बार विज़ाग ज़रूर जाएं।

सम्प्रति: वरिष्ठ व्याख्याता, होटल प्रबंधन संस्थान – जयपुर (राजस्थान)

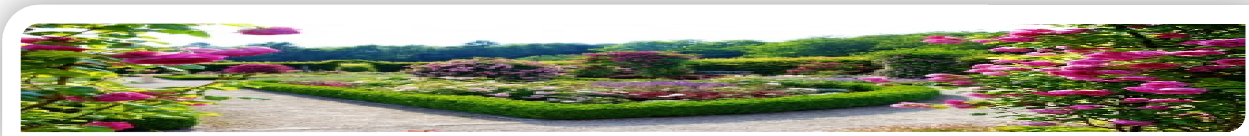

मंडला :

प्राकृतिक, विरासत एवं आध्यात्मिक पर्यटन का संगम

***डा.श्रीरीष श्रीवास्तव**

मंडला का इतिहास बहुत ही शौर्यता और वीरतापूर्ण रहा है, रानी दुर्गावती और अवन्ति बाई की वीरता की गाथाएं सभी देश प्रेमियों को स्मरण होंगी। देश पर प्राण न्योछावर करने वाली ऐसी वीरांगनाओं की भूमि मंडला, मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है। मंडला शहर और उसका बड़ा क्षेत्र पवित्र 'नर्मदा' नदी और 'बंजर' तथा 'बुढनेर' जैसी उसकी सहायक बड़ी नदियों से घिरा हुआ है। सागौन और साल के जंगलों से आच्छादित और हरा भरा, मंडला कई ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक दर्शनीय स्थलों से सम्पन्न है। इस आलेख के माध्यम से पाठकों को मंडला के अल्पज्ञात आध्यात्मिक, विरासती, पर्यावरण हितैषी और अन्य दर्शनीय एवं पर्यटन स्थलों की जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं।

मंडला के बारे में.....

नर्मदा नदी मंडला शहर को तीन तरफ से घेरती है और इसे एक बेजोड़ प्राकृतिक सुंदरता देती है। नर्मदा नदी के तट पर बनाए गए विभिन्न घाटों के साथ 37 से अधिक मन्दिर हैं, जिनका निर्माण काल 1680 से 1858 के बीच माना जाता है। कुछ प्रसिद्ध घाटों में रंगरेज़ घाट, रपटा घाट और संगम घाट हैं। इन घाटों का न केवल धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्व है, बल्कि मनोरंजन के लिए भी दूर-दूर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहां एक ओर कई मन्दिर हैं तो दूसरी ओर नदी की धाराएं, पुराने और नए पुल, उनसे दिखाई देने वाले सूर्यास्त के सुन्दर दृश्य, इन घाटों की यात्रा को महत्वपूर्ण बनाते हैं। मंडला के प्रमुख विरासत पर्यटन स्थलों में रामनगर के मोती महल, राय भगत की कोठी और बेगम महल हैं। पर्यावरणीय पर्यटन में कई बांध, जलप्रपात और

अभ्यारण्य हैं। इस नगर में संकरी गलियां है। मंडला वाणिज्य का महत्त्वपूर्ण केंद्र नहीं है। यहां सिर्फ आरा मिलें हैं या फिर भांग के उत्पाद तथा कांसे के बर्तनों का निर्माण होता है।

विरासत पर्यटन की चर्चा करें तो मंडला का किला प्रथम है :

यह मंडला शहर से करीब 17 कि.मी. दूर, रामनगर में मंडला का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, जो किसी जमाने में गोंड राजाओं की राजधानी था। महल समतल भूमि पर बना था और केवल एक दिशा में नर्मदा नदी थी। साथ ही महल में सुरक्षा दीवार नहीं होने के कारण शत्रुओं के हमलों को झेलने में समर्थ नहीं था। हृदयशाह के पौत्र राजा नरेन्द्र शाह के शासन काल में कई बार आक्रमण हुए थे। इसीलिए सुरक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए, नरेन्द्र शाह ने 1691-1731 ई. के बीच नर्मदा नदी और बंजर घाट संगम के सामने इस किले का निर्माण करवाया था। (लेकिन अधिकतर पुरातत्वविदों का मत है कि किले का निर्माण 1698 के आस-पास पूरा हो गया था।) यह किला तीन दिशाओं से नर्मदा नदी की अथाह जल राशि से घिरा हुआ था और चौथी दिशा में एक गहरी खाई का निर्माण कराया गया था और उसमें खतरनाक मगरमच्छ पाले गए थे। इस खाई के दोनों छोर नर्मदा नदी से मिले हुए थे और इस प्रकार किले को किसी भी आक्रमण से पूरी तरह सुरक्षित किया था। शत्रुओं पर निगाह रखने के लिये किले के निर्माण के समय 11 बुर्ज बनवाए गए थे। इन बुर्जों के ऊपर से दुश्मन को दूर से ही देखा जा सकता था। किले के भीतर महल और मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था। 1781ई. में यह किला होल्कर शासकों (मराठों) के अधीन आ गया था और फिर 1818 से 15 अगस्त 1947 तक यह अंग्रेजों के अधीन रहा था।

नर्मदा नदी के तट पर किले का मुख्य बुर्ज स्थित है, इस बुर्ज की ऊंचाई 60 फीट है। बुर्ज के ऊपर जाने के लिये सीढियां है। आजकल पर्यटकों को बुर्ज पर जाने की अनुमति है, जिसके लिए नाममात्र का शुल्क लिया जाता है। बुर्ज के पास ही एक बड़ा दरवाजा है जिससे से किले के बाहर नर्मदा तक जा सकते हैं। अब इस स्थान से मंडला से महाराजपुर और पुरवा तक जाने के लिये नावें चलती हैं।

मंडला किले का मुख्य बुर्ज

प्रशासन ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यहां शाम को नौका विहार की भी व्यवस्था की है। मन्दिर में 18 भुजाओं वाली माता दुर्गा की प्रतिमा स्थापित है, आज भी यहां प्रतिदिन पूजा अर्चना होती है, जिसमें सभी जातियों के लोग बड़े आदर और श्रृद्धा भाव से सम्मिलित होते हैं। किले के आसपास की अधिकांश जमीन पर लोगों ने अतिक्रमण कर लिया है। सरकार द्वारा इसे संरक्षित

स्मारक घोषित कर अतिक्रमणों को हटाया गया है।

मोती महल :

रामनगर के महलों में सबसे प्रमुख है, मोती महल। इसे "राजा का महल" भी कहा जाता है। यह तीन मंजिला भवन है। मोती महल का निर्माण सन् 1667 ई. में गोंड राजा हृदय शाह ने नर्मदा नदी के किनारे करवाया था। इसका मुख उत्तर दिशा में नर्मदा नदी की ओर है। मोती महल का आकार आयताकार अर्थात बाहर से 64.5 मी. लंबा और 61 मी. चौड़ा है। महल के भीतर विशाल आंगन है जिसके बीचो-बीच एक विशाल कुंड है, जिसे स्नानागार भी कहा जाता था। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए इसमें पानी भरा रहता है। महल के सामने एक बड़ा गेट और तीन मंजिला महल में ऊपर तक जाने के लिए सीढियां बनी हैं। महल में एक तहखाना भी है। मोती महल की हर मंजिल पर बहुत से छोटे बड़े कमरें हैं, जिनमें बीच के और बाहर की ओर स्थित कमरे लंबे है। मगर बगल के तथा अन्दर की ओर के कमरे आकार में छोटे हैं। इनमें राजा का अन्तःपुर निवास हुआ करता था। माना जाता है कि अपने निर्माण के समय महल नर्मदा नदी से 80 फीट की ऊंचाई पर था। विद्वानों के अनुसार, महल का निर्माण चूने, गारे, गुड़ और बेल की गोंद से किया गया है।

मोती महल

महल के आंगन में दीवार पर एक शिलालेख लगा है जिसमें गोंड राजवंश के संस्थापक यदुराय (जिन्हें जादौराय भी कहा जाता है) से लेकर हृदय शाह तक राजाओं की वंशावली दी गई है। इस लेख में तिथि विक्रम संवत् 1724 ई. (सन् 1667) लिखी गई है। महल की दीवार से लगा एक हाथी खाना है (जिसमें हाथियों को रखा जाता था)। हाथी खाने के पास ही घोड़ों को रखने भी व्यवस्था थी। मोती महल में कुछ सुरंगे भी पाई गई हैं, अध्ययन करने पर देखा गया कि यह सुरंगे

जबलपुर के मदन महल और मंडला के किले तक जाती हैं। कुल मिलाकर, मोती महल गोंड राजाओं की शक्ति और वैभवशाली परम्परा की अनमोल धरोहर है।

मोती महल के निर्माण के बारे में बहुत सी किवदंतियां प्रचलित हैं। एक के अनुसार राजा हृदय शाह तंत्र विद्या में सिद्धहस्त और बड़े जानकार थे। हृदय शाह ने तंत्र शक्ति से मोती महल का निर्माण ढाई दिन में हुआ था, जिसमें महल के पत्थर हवा में उड़ कर आए थे। परन्तु आधुनिक इतिहासकार इस बात को सिरे से नकारते हैं। उनके अनुसार हृदय शाह तंत्र विद्या में माहिर हो सकते हैं। परन्तु महल के निर्माण में पत्थर हवा में उड़ कर आने की बात सही नहीं कही जा सकती, केवल अतिश्योक्ति है। सन् 1651 से सन् 1667 ई. के बीच इस महल का निर्माण हुआ है और इसके निर्माण में लगे अष्टफलकीय पत्थर बाहर से मंगवाए गए थे। महल निर्माण के बाद जो पत्थर बचे थे वह पत्थर आज भी काला पहाड़ के पास देख सकते हैं। इस महल के निकट ही दो महल और हैं जिन्हें 'राय भगत की कोठी' और 'रानी महल' के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि रामनगर में इतना सोना था कि आज भी रामनगर के आसपास खुदाई के दौरान लोगों को सोना मिलने की खबरें आती रहती हैं। महल के आसपास भी लोगों ने अतिक्रमण कर लिया था। सरकार द्वारा मोती महल को सन् 1984 में संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

राय-भगत की कोठी :

मोती महल से कुछ ही दूरी पर स्थित, रामनगर का दूसरा महत्वपूर्ण महल है,राय-भगत की कोठी। इस महल का निर्माण राजा हृदय शाह ने अपने दीवान राय भगत के लिये करवाया था। यह मोती महल का संक्षिप्त संस्करण ही दिखता है। इसीलिए इसे राय भगत की कोठी या 'मंत्री महल' भी कहा जाता है। यह कोठी मोती महल और विष्णु मन्दिर के समकालीन है। संगमरमर के पत्थर से निर्मित इस कोठी का प्रवेश द्वार दक्षिण मुखी है।

प्रवेश द्वार की छत पर की गई बहुत ही सुन्दर चित्रकारी आज भी देख सकते हैं। इसके आंगन के बीच में भी पानी का कुंड है और आंगन के चारों ओर कमरे एवं मेहराबों से युक्त दालान बने हैं।

कोठी दो स्तरों में बनी है। बाहरी स्तर के कमरे बड़े हैं, जिनमें पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था की गई थी, जबकि अन्दर के कमरे छोटे हैं और इनमें कम प्रकाश आ पाता है। कोठी के ऊपर चारों ओर फलकदार गुम्बद भी बने हैं। इसे भी सन् 1984 में संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

बेगम महल :

मोती महल से तीन कि.मी. दूर स्थित बेगम महल, तीन मंजिला भवन है। यह सुन्दंर मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति के लिए जाना जाता है। इस महल का निर्माण राजा हृदय शाह ने अपनी पत्नी चिमनी रानी के लिए करवाया था। बेगम महल का निर्माण में काले पत्थर का अद्भुत रूप से इस्तेमाल किया गया था। महल दर्शनीय संरचना है।

मंडला का इतिहास बहुत ही शौर्यता और वीरता पूर्ण रहा है, 1480 ई. से पहले महिष्मति के नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र गोंडवाना का हिस्सा था। 1480 ई. में राजा संग्राम शाह मड़ावी यहां के शासक बने जिनके नाम पर इस भूभाग का नाम मण्डला पड़ा और इस राज्य का बहुत विस्तार भी हुआ। उनके पुत्र दलपत शाह से दुर्गावती का विवाह हुआ था। संग्राम शाह के बाद दलपत शाह राजा बने, कुछ समय बाद ही उनका निधन हो जाने से उनके पांच वर्षीय पुत्र को राजा बनाया गया ।

1564 ई. में अकबर के एक उप सेनापति आसिफ खां ने यहां पर हमला किया जिसका रानी दुर्गावती ने बहुत वीरता पूर्वक सामना किया और लगभग धूल ही चटा दी थी। दुर्भाग्य से उसी रात गौर और नर्मदा नदियों में बाढ आ गई, जिससे रानी की सेना दोनों नदियों के बीच की घाटी में फंस गयी और बाहर निकलने के एकमात्र का रास्ते पर मुगल सेना खड़ी थी। अंतत: युद्ध में रानी को वीरगति प्राप्त हुई और इस प्रकार यहां मुगल शासन हो गया। पेशवा बाजीराव के नेतृत्व में होल्कर शासकों (मराठों) ने 1739 ई. में मुगलों को पराजित कर इसे अपने अधीन कर लिया। 1818 ई. में मंडला और अन्य मराठा क्षेत्रों को लेकर एंग्लो- मराठा युद्ध में जनरल मार्शल ने इस टूटे-फूटे दुर्ग को मराठों से छीन कर यहां ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन में मिला लिया ।

दुर्गम वन क्षेत्र होने और आवागमन के साधनों का अभाव होने के कारण, सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में यहां पर कोई हलचल नहीं हुई और यह क्षेत्र उस संग्राम से बिलकुल अछूता रहा, 1861 में मंडला केंद्रीय राज्य का भाग बना और 1867 में इसकी नगर पालिका स्थापित की गई। इसके बाद इस जिले की मान्यता मिली जो की आज तक है।##

मंडला संग्रहालय :

मंडला शहर के बीचो-बीच सिविल लाइन में, मध्य प्रदेश पुरातत्व विभाग का संग्रहालय है। यह भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक अच्छा स्थान है। इस संग्रहालय की स्थापना डॉ. धर्मेन्द्र प्रसाद ने कुछ गणमान्य लोगों के साथ मिलकर 1976 में की थी बाद में मंडला के लोगों के उत्साह को देखते हुए सरकार ने संग्रहालय को अधिग्रहित कर लिया। यहां रखी गई सामग्री 7वीं ई.से 19वीं ई. के बीच की है। संग्रहालय में पाषाण प्रतिमाएं, धातु की प्रतिमाएं, ताम्रपत्र, अस्त्र-शस्त्र, ताम्बे तथा धातु के सिक्के, पांडुलिपियां, जीवाश्म, आदिवासियों के सांस्कृतिक उपकरण आदि कुल मिलाकर 610 पुरावशेष संग्रहीत हैं। संग्रहालय में बौद्ध कालीन, कल्चुरी कालीन, गोंड कालीन कई दुर्लभ प्रतिमाएं हैं इन प्रतिमाओं में गणेश, शिव-माता पार्वती, विष्णु और भगवान बुद्ध सहित कई दुलभ मूर्तियां सहेजकर रखी गई हैं। इसके अतिरिक्त घुघवा के जीवाश्म भी सुरक्षित रखे गए हैं। यहां 1197 ई. का कलचुरी नरेश राजा विजयसिंह देव द्वारा प्रदत ताम्र पत्र भी प्रदर्शित किया गया है।

संग्रहालय में प्रदर्शित पाषाण प्रतिमाएं

नर्मदा घाट :

मंडला शहर की पहचान मुख्य रूप से नर्मदा और इस पर बने घाट हैं। चूंकि यह शहर तीन ओर तरफ से नर्मदा नदी से घिरा हुआ है। नर्मदा के तट पर कई नए और पुराने घाट हैं और सब का अपना इतिहास और कहानियां हैं। इनमें कुछ प्रमुख घाटों का उल्लेख नीचे किया गया है :

सहस्त्रधारा :

मंडला शहर से तीन कि.मी. दूर सहस्त्र धारा प्रमुख दर्शनीय पर्यटन स्थलों में है। यहां पवित्र नर्मदा नदी की धारा कई धाराओं में विभक्त होकर छोटे- छोटे जलप्रपात बनाती है। यहां पर काले ग्रेनाईट और बेसाल्ट पत्थरों की चट्टानों के बीच से कल-कल बहती हुई नर्मदा की धारा अति मनोहारी लगती है। इस स्थान का पुराणों में भी उल्लेख मिलता है, पौराणिक मान्यता के

अनुसार इस स्थान पर हैहयवंशी राजा कार्तवीर अर्जुन, जिन्हें सहस्त्रबाहु नाम से भी जाना जाता था, ने अपनी भुजाओं से मां नर्मदा को रोकने का प्रयास किया था परन्तु मां नर्मदा हजारों धाराओं में विभक्त हो गईं और सहस्त्रबाहु उन्हें नहीं रोक सका।

भूवैज्ञानिकों के अनुसार सहस्त्रधारा की चट्टानें लावा से निर्मित प्रतीत होती हैं। तथापि, बरगी बांध के भराव के कारण यहां धाराओं और जलप्रपातों की संख्या कम हो गई है। सहस्त्रधारा में दो अति प्राचीन शिव मन्दिर हैं। शासन द्वारा इस स्थान को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। यहां के सुन्दर दृश्य को देखने के लिये वॉच टावर बनाए हैं।

रपटा घाट : नर्मदा के किनारे बना रपटा घाट शहर का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहीं पर प्रतिदिन शाम को मां नर्मदा की महा-आरती होती है। रपटा घाट में बहुत सारे मन्दिर देखने के लिए मिलते हैं। यहां पर नर्मदा जी के मन्दिर के साथ गणेश और महादेव के मन्दिर हैं जिनमें बहुत ही सुन्दर प्रतिमाएं स्थापित हैं। घाट पर बैठने के लिए बैंचों की व्यवस्था की गई है, पर्यटक यहां बैठकर नर्मदा नदी के सुन्दर दृश्यों का आनंद ले सकते हैं।

घाट के बीच में भी एक छोटा सा द्वीप है, जिसमें शिवलिंग विराजमान है। इस पर भी बहुत सारे लोग पूजा-दर्शन करने जाते हैं। यह द्वीप नर्मदा नदी की गहराई में स्थित है। पहले यहां आने के लिए श्रृद्धालु नाव का उपयोग करते थे। अब पर्यटकों की सुविधा के लिए प्रशासन ने पुल बनवाया है।

यहां पर गर्मी के मौसम में ज्यादा लोग आते हैं और नदी में में नहाने का आनंद लेते हैं। घाट में नहाने के लिए प्रशासन की ओर से महिलाओं और पुरूषों के लिए अलग अलग व्यवस्था है। स्नान के बाद कपड़े बदलने के लिए अलग अलग कक्षों का निर्माण कराया गया है। पर्यटकों को आकर्षित करने के निमित्त अनेक प्रकार के सुन्दर फूलों से सजा एक गार्डन भी बनाया गया है, जिसमें बैंचों के अलावा बच्चों के झूलों की भी व्यवस्था की है।

सूर्यास्त का दृश्य

रपटा घाट पर स्वतंत्रता दिवस समारोह

त्यौहार एवं विशेष अवसरों पर होने वाले अधिकतर कार्यक्रम इसी घाट पर होते हैं। रपटा घाट में नर्मदा जयंती और मकर संक्रांति के समय यहां पर बहुत बड़ा मेला लगता है। घाट पर साल में कभी भी घूमने के लिए आ सकते हैं। यहां पर हमेशा ही अच्छा वातावरण रहता है। यहां पर आने के लिए सड़क भी बहुत अच्छी है, इसलिए अपनी बाइक से या गाड़ी से आराम से पहुंच सकते हैं।

कुछ और उल्लेखनीय घाट :

दादा-धनीराम घाट - यह घाट रपटा घाट के सामने है इस स्थान पर दादा-धनीराम महाराज की समाधी है।

किला घाट : यह घाट मंडला के किले के पास में स्थित है। इस घाट के सामने संगम घाट है।

हनुमान घाट : इस घाट पर सीता राम बाबा की समाधी है। यहां प्राचीन मन्दिर है जिसमे भगवान् शिव और हनुमान जी का सिद्ध मन्दिर है।

नाना घाट - इस घाट का निर्माण मराठा काल में मराठा सूबेदार रहे (1807 से 1810 ई. तक) नारायण बाजी राव घाटगे (नाना घाटगे) द्वारा किया गया था। कहा जाता है कि पहले यहां गर्म पानी का एक कुंड भी था जो अब विलुप्त हो गया है। घाट पर मराठा कालीन शिव मन्दिर को आज भी देखा जा सकता है।

बाबा घाट : इस घाट का निर्माण भी मराठाकाल में, इस क्षेत्र में नायब सूबेदार रूपनाथ झा (जिनके बारे में

कहते है कि बाद में संयासी हो कर, संभवतः यहीं रहे थे) के द्वारा कराया गया था।

सिंघवाहिनी घाट : यह घाट मंडला के सिंघ वाहिनी वार्ड के अंतर्गत आता है। इस घाट के नजदीक माता सिंघवाहिनी का प्राचीन मन्दिर है। यह घाट मंडला और महाराजपुर को नाव द्वारा जोड़ता है ।

कलेक्ट्रेट घाट : यह घाट कलेक्टर बंगले से लगा हुआ है।

न्याय घाट : यह घाट जिला कोर्ट परिसर के पीछे स्थित है। इस घाट से मां नर्मदा का बहुत ही मनोहारी दृश्य दिखलाई देता है।

जेल घाट : यह घाट मंडला के जिला - जेल के सामने है। पर्यटकों के आकर्षित करने के लिए इसके पास सुन्दर नेहरू गार्डन बनाया है, जिसमें बच्चों के झूले आदि लगाए गए हैं। घाट से लगे कुछ पुराने मन्दिर है।

रंगरेज घाट : यह मंडला का प्राचीनतम घाट है। घाट पर कई प्राचीन मन्दिर हैं। इस घाट पर अब झुला पुल बना दिया गया है, जिससे मंडला शहर और पुरवा गांव के बीच की दूरी अब मात्र दो कि.मी. रह गई है ।

यहां मंडला का महापर्व डोल ग्यारस धूमधाम से आयोजित होता है इसमें भगवान कृष्ण को जलविहार कराने की प्रथा है। शहर के विभिन्न मार्गों से गाजे बाजे के साथ डोला निकालकर श्री कृष्ण को नगर भ्रमण कराया जाता है। इस दौरान भक्तों को प्रसाद के साथ ककड़ी भी बांटी जाती है। रंगरेज घाट में मेले के अवसर पर श्री कृष्ण को जलविहार करते हुए देखने बड़ी संख्या में लोग जुटते हैं। लेकिन कोविड काल के चलते लोग कम संख्या में पहुंचे। नर्मदा में भगवान कृष्ण को जल विहार सांकेतिक रूप से कराया गया।

नर्मदा - बंजर संगम घाट, महाराजपुर:

मंडला शहर से 50 कि.मी. की दूरी पर संगम घाट, महाराजपुर, मंडला के प्रमुख धार्मिक और दर्शनीय स्थलों में एक है। महाराजपुर में पवित्र नर्मदा और बंजर नदियों का संगम स्थल है। इस स्थान पर मां नर्मदा की धारा अर्धचंद्राकार ('c') रूप में दिखाई देती है। इसे एक प्राचीन घाट माना गया है। इस पर स्थान प्राचीन काल से ही मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाडा, गोंदिया, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ तक से प्रतिदिन सैकडों की संख्या में श्रृद्धालु आते हैं। इन जिलों के आस-पास

के क्षेत्र में संगम घाट को प्रयागराज में त्रिवेणी संगम घाट के समान ही धार्मिक मान्यता दी जाती है।

संगम घाट

बंजर नदी के सामने की ओर मंडला किला, इसके एक तट पर राधा कृष्ण मन्दिर और दूसरे तट पर संगम घाट है। हाल ही में इस घाट का जीर्णोद्धार किया गया है।

महाराजपुर संगम घाट में नर्मदा की अधिक गहराई और अथाह जल राशि होने के कारण पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रशासन ने यहां बोटिंग की व्यवस्था की है और साथ ही स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विशेषकर शाम के समय लोग वोटिंग का आनंद लेते हैं। घाट पर कई प्राचीन मन्दिर हैं इनमे सबसे प्रमुख है, बूढी माई का मन्दिर।

सीता रपटन :

महिष्मति नगरी जिसका कि पुराणों में भी उल्लेख मिलता है, मंडला शहर से 25 कि.मी. दूर अंजनिया के पास स्थित है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह महर्षि बाल्मीकि का आश्रम था और मान्यता है कि इसी स्थान पर ऋषि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी। इसी आश्रम में लव और कुश का जन्म हुआ था। सुरपन नदी के तट पर स्थित आश्रम के आसपास इस कथा से संबंधित कुछ साक्ष्य आज भी मौजूद हैं। यहां महर्षि का आश्रम, लव-कुश अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा, सीता कुटी सहित मन्दिर भी मौजूद हैं।

लोगों की मान्यता है कि सीता जी सुरपन नदी से पानी लेकर आ रही थीं कि इसी स्थान पर फिसलकर गिर गई थीं। फिसलने को स्थानीय भाषा में रपटना कहा जाता है, तभी से इस स्थान को 'सीता रपटन' कहा जाने लगा है। यहां चट्टानों के बीच में फिसलपट्टी बनी है। पास ही में चट्टाननुमा पत्थरों को बजाने से नगाड़ों की आवाज आती है, माना जाता है की लव-कुश के जन्म के समय जो नगाड़े बजाए गए थे, वह अब पत्थरों में बदल चुके हैं। यहां एक विशेष प्रजाति का पेड़ मौजूद है जिसे अनजान पेड़ के नाम से जाना जाता है, यहां अनेक वनस्पति शास्त्री आए, लेकिन इस पेड़ का नाम जानने में सफल नहीं हो सके। कार्तिक पूर्णिमा को यहां

प्रत्येक वर्ष तीन दिवसीय मेले का आयोजन होता है, जिसे 'सीता रपटन मड़ई' के नाम से जाना जाता है। पुरातात्विक दृष्टिकोण से यह स्थान महत्वपूर्ण है, इसे और सहेजने एवं संवारने की आवश्यकता है।

ईको - पर्यटन में मंडला का उल्लेखनीय योगदान :

मटियारी बांध :

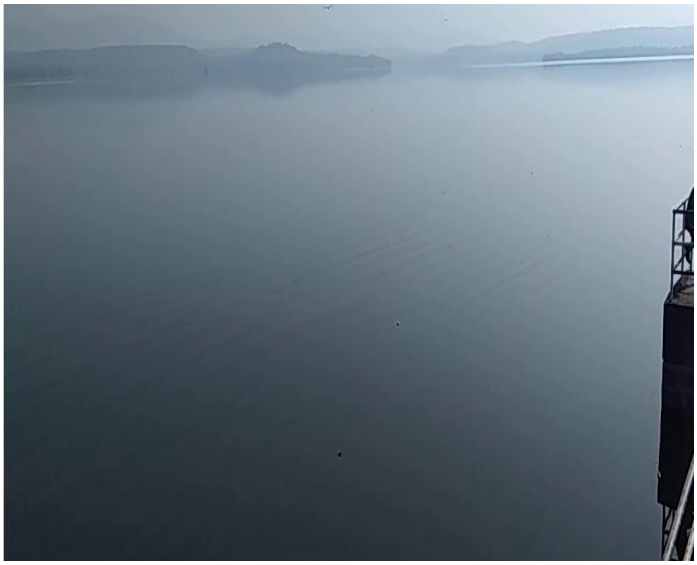

शहर से एक घंटे की ड्राइव पर मटियारी बांध एक प्रमुख पिकनिक स्थल है। ग्राम सिमरिया के पास स्थित मटियारी नदी पर बना यह माध्यम दर्जे का बांध है। सन् 1980 में आरम्भ हुए इस बांध के दोनों तरफ नहरें निकलने से यह स्थान बहुत सुन्दर लगता है। जिला पर्यटन संवर्धन समिति की ओर से यहां पगडंडियों का विकास, बैंचों के अलावा बांध से थोड़ा हटकर खानपान की दुकानों की व्यवस्था की गई है।

थान्वर बांध :

यह बांध नैनपुर तहसील के बीजेगांव में थान्वर नदी पर 1980 में मिट्टी से बनाया गया था। थान्वर नदी का उद्गम स्थल कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के समीप है। जिला पर्यटन विकास समिति द्वारा थान्वर बांध के अति निकट पर्यटकों के लिए कई सुविधाएं प्रदान कराने से यह स्थान घूमने और पिकनिक मनाने के लिए बहुत अच्छी जगह है।

गरम पानी कुंड :

मंडला - जबलपुर मार्ग पर मंडला शहर से करीब 18 कि.मी. दूर बबेहा ग्राम के पास, यह स्थान चारों तरफ पानी से घिरा एक छोटा सा टापू है। यहीं पर चमत्कारी गर्म पानी का कुंड है, जिसमें हर मौसम में, पूरे साल भर गर्म पानी रहता है। यह स्थल नर्मदा के समीप और बरगी बांध के प्रतिधावन अर्थात लौटती हुई लहरों की गति के क्षेत्र में आता है। गर्म कुंड का पानी हमेशा गर्म और इसके चारों ओर बैक वाटर का पानी ठंडा रहता है और विशेष बात यह है कि इन दोनों जगहों के पानी का स्वाद भी अलग अलग है।

गर्म पानी कुंड के बारे में....

मान्यता है कि इस स्थान पर परशुराम जी ने तपस्या की थी। उस समय यह एक छोटा सा कुंड था जिसमें साल भर गर्म पानी निकलता रहता था। आज भी माना जाता है कि इस कुंड में स्नान करने से सभी प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं। गर्म पानी के कुंड के बारे में वैज्ञानिकों का कहना है कि इस स्थान के नीचे सल्फर की चट्टानें हो सकती हैं और सल्फर की चट्टानों के कारण ही इस कुंड का पानी गर्म रहता है। इसी सल्फर युक्त पानी के कारण ही चर्म रोग ठीक होते हैं।

ग्रामीणों के प्रयास से इस कुंड के चारों तरफ मिट्टी का भराव कर गरम पानी के कुंड को कुएं के रूप में आकृति देकर बैक वाटर के जलस्तर के ऊपर लाया गया। शासन द्वारा इस स्थान का पुननिर्माण कर इसे नवजीवन दिया गया है। वर्तमान में गर्म पानी कुंड की उंचाई बहूत अधिक है। कूएं की ऊपरी सतह से लगभग 5.5 फीट नीचे की तरफ लोहे की रेलिंग लगाई गई है। कुंड की गहराई बहूत अधिक है इसीलिये यहां स्नान करते समय सावधानी रखने के निदेश लिखे गए हैं। कुंड से बहने वाला पानी पीछे की तरफ चला जाता है।

बरगी बांध के निर्माण से पहले यह स्थान ऐसा नही था जैसा कि आज दिखाई देता है। पहले इस कुंड की ऊंचाई भी इतनी अधिक नहीं थी और पानी भी कम ही होता था। बरगी बांध के जलभराव के कारण यह कुंड पानी में डूब गया था। चूंकि कुंड पवित्र नर्मदा नदी के पास है इसीलिये यहां रामनवमी, नवरात्र आदि के समय पर मेले भी लगते रहते हैं। यह स्थान चारों तरफ़ घने पेड़-पौधों और जल से घिरा है। कुंड के पास एक छोटा सा मन्दिर भी है जिसमें प्राचीन मूर्तियां स्थापित हैं। अगर आप एक ही समय गर्म और ठंडे पानी का आनंद लेना चाहते हैं तो इस स्थान पर अवश्य जाएं।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान :

मंडला शहर से 70 कि.मी. दूर, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान न केवल मध्य प्रदेश अपितु विश्व में बाघों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। इसे विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जाता है। मंडला और बालाघाट, दो जिलों, में फैले कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का कोर परिक्षेत्र 940 वर्ग कि.मी. और बफर क्षेत्र 1009 वर्ग कि.मी. है। इसे जून 1955 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला

और 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। यह पार्क बाघों के संरक्षण के अतिरिक्त लुप्तप्राय बरसिंघा, तेंदुए, भालू और जंगली कुत्ते के संरक्षण के लिये भी जाना जाता है। जंगली जानवरों को करीब से देखने के लिए जंगल सफारी उपलब्ध है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में घूमने के लिए कान्हा संग्रहालय, बम्हनी दादर पॉइंट, श्रवण ताल, लेपसी की कब्र और घास के बड़े-बड़े मैदान प्रमुख हैं।

बामनी दादर पहाड़ी : कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के भीतर एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। यह अधिक ऊंचाई पर स्थित है, जो राष्ट्रीय उद्यान का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। ऊपर जाते समय पर्यटक घास के मैदान, भौंकने वाले हिरण, चित्तीदार हिरण, गौर और भारतीय जंगली भैंसों को भी देख सकते हैं। यहां ज्यादातर शाम के समय भीड़ होती है क्योंकि पर्यटक यहां से सूर्यास्त के भव्य दृश्य का आनंद लेने के लिए उत्सुक होते हैं। यहां से राष्ट्रीय उद्यान के पश्चिमी भाग को आसानी से देख सकते हैं। बामनी दादर के आसपास का क्षेत्र साल के पेड़ों से समृद्ध है।

अजगर दादर :

मंडला, जो अब तक कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के लिए ही विश्व में प्रसिद्ध और वन्य प्राणी प्रेमी देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र था, अब कान्हा के बफर क्षेत्र से लगे अंजनिया वन परिक्षेत्र के ग्राम ककैया में 'अजगर दादर' के कारण भी एक लोकप्रिय पर्यटन गंतव्य बन गया है। क्योंकि, इस ग्राम के करीब दो एकड़ क्षेत्र में सैकड़ों अजगरों का डेरा है। मंडला शहर से लगभग 27 कि.मी. और कान्हा से 20 कि.मी. की दूरी पर (आधा घंटे की ड्राइव) सैकड़ों की संख्या में छोटे - बड़े अजगर इस क्षेत्र में आसानी से देखे जा सकते है। जन्तुशास्त्र विज्ञानियों के अनुसार, अजगर को शांतचित्त और आलसी जीव माना जाता है। वह इन अजगरों को वन्यजीवों की अनुसूची का एक अति दुर्लभ प्राणी बताते है और इनके संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं। स्थानीय निवासियों के अनुसार, इस क्षेत्र में अजगरों को ज्यातर ठंड के मौसम में ही बड़ी संख्या में देख सकतें हैं। सर्दी के मौसम में अजगर धूप सेंकते हुए दिखाई दे जाते हैं। चूंकि अजगर जहरीला नहीं होता, इसीलिये गांव वाले भी इन्हें परेशान नहीं करते। यहां अजगर और इंसानों के बीच अजीब रिश्ता है, गांव के लोग भी अजगरों की सुरक्षा को लेकर बेहद संवेदनशील रहते हैं।

जैसे - जैसे लोगों को अजगर दादर का पता चलता जा रहा है वैसे - वैसे यहां आने वाले पर्यटकों और दर्शकों की संख्या बढ़ती जा रही है।

माना जाता है की 1926 की बाढ़ में यह स्थान पोला (खोखला) हो गया था जिनमें तरह तरह के जीव जंतु रहने लगे और इन्ही 'पोले' स्थानों में अजगरों ने भी अपना निवास बना लिया। इस स्थान को अजगर दादर कहा जाने लगा। स्थानीय लोगों के प्रयासों से वन विभाग ने 2014 से

इस स्थान को अजगर अभ्यारण्य घोषित किया है। वन विभाग द्वारा 'अजगर दादर' में इनके संरक्षण, संवर्धन की योजना तैयार की जा रही है।

मंडला के प्राचीन मन्दिर :

मंडला में कई दर्शनीय प्राचीन मन्दिर हैं। मंडला के इन मन्दिरों का निर्माण कल्चुरी राजाओं, गोंड राजाओं और मराठों के शासन काल में हुआ था। मंडला के दर्शनीय मन्दिरों में कुछ प्रमुख है।

सूर्य कुंड के चमत्कारिक हनुमान जी का मन्दिर :

मंडला शहर से तीन कि.मी. दूर नर्मदा के तट पर हनुमान जी की प्राचीन प्रतिमा तथा सूर्य कुंड स्थापित है। पौराणिक महत्व के इस सूर्यकुंड धाम का अपना एक विशेष महत्व हैं। सूर्य कुंड होने के कारण यह क्षेत्र 'सूरज कुंड' के नाम से ही जाना जाता है। नारद पुराण में भी नर्मदा के किनारे स्थापित चार कुंडों में से एक इस सूर्यकुंड का उल्लेख मिलता है।

किवदंती है कि इस स्थान पर सूर्यदेव ने तपस्या एवं यज्ञ किया था और उनकी तपस्या में कोई विघ्न उत्पन्न न हो, इसके लिए उन्होंने हनुमान को प्रहरी बनाया था। यज्ञ के उपरांत सूर्यदेव तो इस स्थान से चले गए लेकिन हनुमान जी को यहीं रहने का आदेश दे गए। लोगों का विश्वास है कि तब से ही यहां हनुमान जी विराजमान हैं। यह भी कहा जाता है कि सन् 1929 की बाढ़ में मूल कुंड नष्ट हो गया था। भू-सर्वेक्षण टीम द्वारा कुंड को तलाशने का प्रयास किया जा रहा है। यहां हनुमान जी का एक भव्य मन्दिर है। मन्दिर के ऊपर सूर्यदेव की सप्ताश्वर सवार प्रतिमा बनी है। मन्दिर में हनुमान जी की एक चमत्कारिक प्रतिमा विराजमान है। यहां के पुजारी बताते हैं कि हनुमान जी की यह प्रचीन प्रतिमा 24 घंटे में तीन बार अपना स्वरुप बदलती है। सुबह

चार बजे से दस बजे तक बाल स्वरुप, इसके बाद दस बजे से शाम छह बजे तक युवा स्वरुप, फिर छह बजे से पूरी रात वृद्ध स्वरुप में दिखाई देती आती है। इनके दर्शन करने दूर-दूर से लोग आते है।

मन्दिर समिति के अधिकारियों के अनुसार, यह एक प्राचीन स्थान है, हनुमान जी के चमत्कारी रूप के कारण लोगों की आस्था बढ़ती जा रही है। यहां जनसाधारण के अलावा अधिकारियों, राजनेताओं का आवागमन रहता है। इसके साथ ही नर्मदा परिक्रमा करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए भी यहां विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। समिति की ओर से उनके ठहरने के लिए सामुदायिक भवन बनाया गया है, जहां परिक्रमा करने वाले यात्रियों के लिए विश्राम करने के साथ ही सीमित सदाव्रत (लंगर) चलाया जाता है। समिति विविध धार्मिक आयोजनों के साथ, प्रति वर्ष हनुमान जयंती, नर्मदा महोत्सव, महाशिवरात्री, मकर संक्राति आदि पर्व भी आयोजित करती है। इसे एक तीर्थ की मान्यता के चलते यहां दूर-दूर से श्रद्धालु परिवार सहित पहुंचते हैं। समिति द्वारा लगातार यहां विकास कार्य कराया जा रहा है। वर्तमान में कोरोना संक्रमण के कारण मन्दिर के दरवाजे बंद रखे गए हैं।

नक्खी माई मन्दिर :

मंडला शहर से 20 कि.मी. की दूरी पर राज्य राजमार्ग पर पर बसे ग्राम बकौरी में 17वीं शताब्दी में एक पहाड़ी के ऊपर नक्खी माता मन्दिर आस्था का केन्द्र है।

भक्त नितिन साहू ने बताया कि जब से गांव में माता विराजमान है कभी भी गांव पर संकट नहीं आया है। जब भी गांव पर कोई संकट आने को होता है, तो माता ने भी गांव वालों को सावधान किया है। माता की पाषाण प्रतिमा जिसे देखकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। श्रृद्धालुओं के मन्दिर प्रांगण में पहुंचते ही उन्हें मानसिक सुख का अनुभव होता है और भक्तगण एक विश्वास से माता से मन्नत मांगते है और उनकी मन्नतें पूरी होती है। बताया गया कि सैकड़ों वर्ष पुराने, जीर्ण-शीर्ण मन्दिर का जीर्णोद्धार 1997 में किया गया। मन्दिर का गुंबद चौपहला बनाया गया है।

पहाड़ी पर स्थित नक्खी माई का मन्दिर

इस मन्दिर की ख्याति दूर दूर तक फैली है। मन्दिर में चैत्र नवरात्रि महोत्सव का बड़े स्तर पर आयोजन किया जाता है। नवरात्र के दौरान मां के दरबार में 339 कलश, 38 टोकनी और 18

खप्पर रखे जाते हैं। विसर्जन के समय यहां से जवारे बड़े धूम-धाम से निकाले जाते हैं।

यहां मन्दिर परिसर का विस्तार किया गया है। नक्खी माता के दरबार के आसपास अन्य देवी देवाताओं जैसे शीतला माई, खैरमाई, कालभैरव के भी स्थान है। मन्दिर के महत्व को देखते हुए प्रशासन की ओर से कई सुविधाएं प्रदान की गई हैं, जिनमें मन्दिर तक पक्की सड़क भी है। पहाड़ी पर होने के बाद भी यहां श्रृद्धालु अपने वाहन से सीधे ही मन्दिर तक पहुंच सकते हैं।
इस वर्ष कोरोना वायरस संक्रमण के चलते इस वर्ष मंदिरों और पंडालों में जवारे नहीं बोए गए, जवारे के स्थान पर माता के दरबार में एक कलश की स्थापना की गई है। मन्दिर में पूजा अर्चना पर पूर्णत: प्रतिबंध लगा है।

राजराजेश्वरी मन्दिर :

मंडला किले में स्थित राजराजेश्वरी मन्दिर मां दुर्गा को समर्पित है। गोंड राजा निजामशाह ने (सन् 1749 से 1779 ई.) इस मन्दिर का निर्माण करने के पश्चात, मध्य अपने वंश की कुलदेवी राजराजेश्वरी को बिलासपुर के निकट रंगधर की पहाडी से लाकर यहां प्रतिष्ठित किया था, तभी सें गोंड राजकुल की इष्टदेवी के रूप में 'राजराजेश्वरी देवी' की उपासना की जाती है।

माता राज-राजेश्वरी मन्दिर

वर्गाकार भूखंड पर बने मन्दिर का शिखर गुम्बदाकार है। मन्दिर में दुर्गा माता की 18 भुजाओं वाली प्रतिमा स्थापित है। मन्दिर परिसर में छोटी-छोटी मढियां बनी हैं। गर्भ गृह के बाहर परिक्रमा पथ बना है। गर्भ गृह के बाहर दीवारों मां नर्मदा, भगवान विष्णु, शिवलिंग, सूर्य देव और सहस्त्रबाहू की प्राचीन प्रतिमाएं लगी हैं।

आज भी इस मन्दिर में सभी वर्गों के लोग बड़े ही आदर पूर्वक मनोकामनाएं मांगने के लिये आते हैं और पूजा अर्चना करते हैं। राज राजेश्वरी मन्दिर के निकट ही शीतला माता, व्यास

नारायण शिव मन्दिर और अन्य देवी-देवताओं के भी प्राचीन मन्दिर हैं।

विष्णु मन्दिर :

रामनगर स्थित विष्णु मन्दिर का निर्माण 1668 ई. में राजा हृदय शाह ने पत्नी सुंदरी देवी की स्मृति में करवाया था। इस मन्दिर का शिखर गुम्बदाकार है। पहले मन्दिर के गर्भ गृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा थी परन्तु वर्तमान में मन्दिर में कोई प्रतिमा नहीं है। इस मन्दिर को पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

पंचमुखी महादेव मन्दिर :

पंचमुखी, जिसका अर्थ है पांच मुख वाले महादेव। यह किले के मुख्य बुर्ज की तलहटी में स्थित भगवान शिव का प्राचीन मन्दिर है। दिलचस्प बात यह है कि प्रतिमा में महादेव का एक ही मुख है, किन्तु उनके गले में लटकी चार कपाल की माला के कारण उनको यह नाम दिया गया था। वह एक बहुत ही हंसमुख मूर्ति है, जिसके होठों पर एक हल्की मुस्कान है।

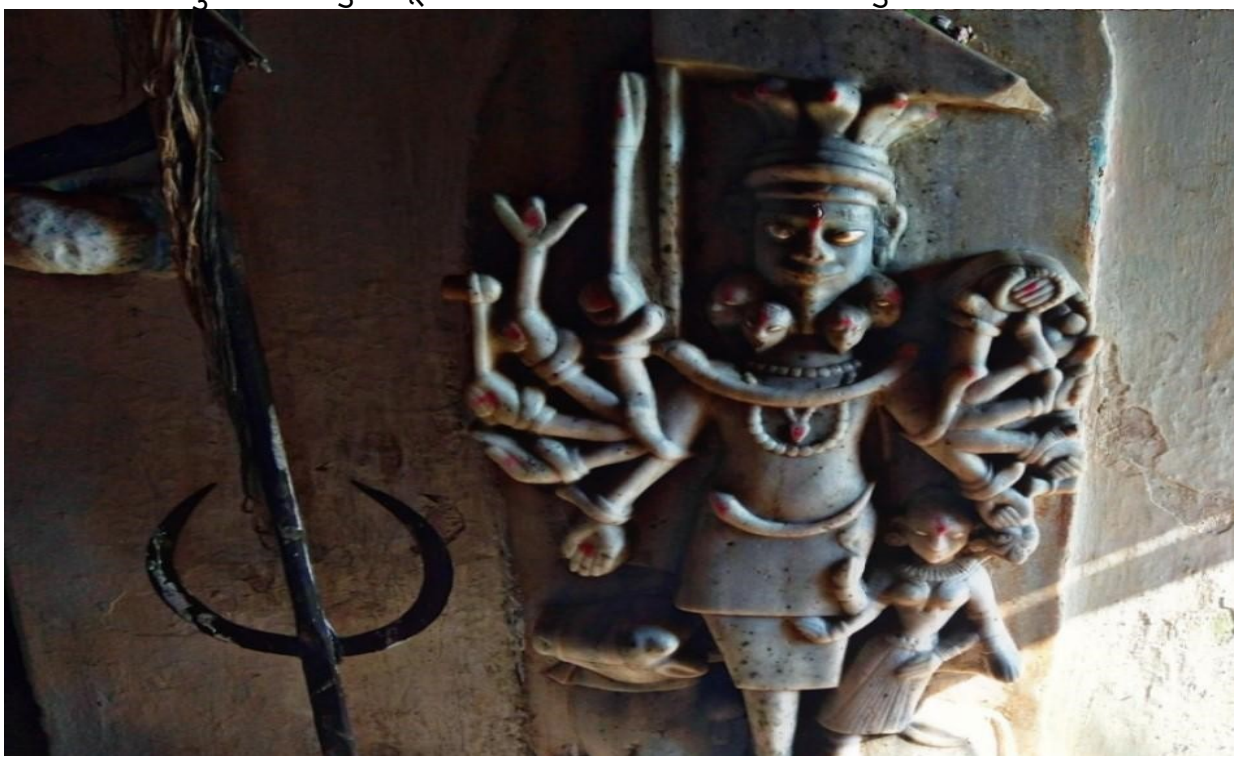

महादेव को दस भुजाओं के साथ, माता पार्वती सहित नंदी (उनके वाहन) पर बैठे हुए चित्रित किया गया है। यह शिव का अत्यंत दुर्लभ रूप है। मन्दिर प्रतिदिन केवल सुबह और शाम पूजा-अर्चना के लिए थोड़े समय ही खुला रहता है। सभी को मन्दिर में प्रवेश करने की अनुमति है और किसी तरह का शुल्क नहीं है। मन्दिर में फोटो लेने की अनुमति है। दर्शन के लिए दस मिनट से कम समय मिलता है।

अन्य प्राचीन मन्दिर :

बूढी माई का मन्दिर : मंडला के महाराजपुर घाट के निकट, नर्मदा और बंजर नदी के संगम स्थल पर स्थित यह अत्यंत सुन्दर मन्दिर है। इसे अत्यंत प्राचीन मन्दिर माना जाता है। मन्दिर के गर्भ-गृह में बूढी माई की प्राचीन मूर्ति स्थापित है। मन्दिर के सामने शेरों की विशाल प्रतिमाएं और चारों ओर देवी-देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं। यहां से नर्मदा नदी का बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। समय समय पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं। मन्दिर के निकट यात्रियों के रुकने लिये धर्म-शालाएं हैं।

सहस्त्र -धारा शिव मन्दिर :

मंडला से तीन कि.मी. दूर मां नर्मदा की सहस्त्र धाराओं के बीच दो शिव मन्दिर स्थित हैं जिनके बारे में माना जाता है कि यह गोंड-राजाओं द्वारा बनवाए गए थे। इसने से एक मन्दिर नर्मदा नदी के बीच में एक टापू पर स्थित है। इस मन्दिर तक जाने के लिये पुल बनाया गया है। जबकि दूसरा मन्दिर नर्मदा की धारा से कुछ दूरी स्थित है और दोनों ही मन्दिरों के शिखर गुम्बदाकार हैं। दोनों के गर्भ गृह में शिवलिंग स्थापित हैं।

मंडला कैसे पहुंचें :

वायु मार्ग : निकटतम एयरपोर्ट जबलपुर है,जो मंडला से 98 कि.मी. है। यहां से सरकारी बसें और पहले बुकिंग पर टैक्सियां मिल सकती है।

रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन मंडला फोर्ट है। जबकि मुख्य रेलवे स्टेशन जबलपुर लगभग 95 कि.मी. है।

सड़क मार्ग : मंडला शहर सड़क मार्ग से जबलपुर, नागपुर,रायपुर जैसे शहरों से सीधा जुड़ा है।

घूमने का सबसे अच्छा समय : मंडला घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है क्योंकि इस दौरान मौसम सुहावना होता है।

संदर्भ स्रोत:

मिश्र, सुरेश(2008), गढ़ा का गोंड राज्य, **प्रथम संस्कारण**, राजकमल प्रकाशन, न्यू दिल्ली।

अग्रवाल,राम भरोस(2011), **गढ़ा मंडला के गोंड राजा**, चतुर्थ संस्करण, **गोंडी पब्लिक ट्रस्ट संस्कृति भवन मंडला**, मध्य प्रदेश

अबुल फज़ल(1949) , आईने अकबरी; दो (अनु. जैरेट) द्वीतीय संस्करण पृष्ठ 210-11

गढ़ेशनृपवर्णनसंग्रहश्लोकाः(1947), **जी व्ही भावे**(सम्पादन) एनेलिसिस ऑफ द भंडारकर, **ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट**, पुणे पृष्ठ 295 -228

----- ----------

- **प्रदेश स्वास्थ्य सेवा में संयुक्त निदेशक (अब सेवानिवृत्त) रहे हैं।**

अतुल्य भारत में युवाओं की भूमिका

- सुश्री मानसी साहू तथा नरेश कुमार साहू

हमारा देश प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों का देश रहा है। यहां त्याग तपस्या, सेवा के मानवीय मूल्यों का पालन होता आया है। पौराणिक पात्र श्री राम, श्रीकृष्ण, गौतम जी हमारे आदर्श हैं, कबीर, तुलसी, मीरा जी की कविताओं में नैतिकता के साथ देश और समाज के प्रति समपर्ण के संदेश है। देश की आज़ादी में गोखले, गांधी, नेहरू, सुभाष, लोकमान्य तिलक जैसे नेताओं के योगदानों की वर्तमान पीढ़ी ऋणी है। प्राचीन काल से ही मर्यादा, परोपकार, सत्य, अहिंसा की बातें पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है।

आजा़दी के बाद से ही हमारा देश चहुमुखी विकास की दिशा में अग्रसर है। आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से कृषि की जा रही है। कृषि व किसान को भारत की रीढ़ की हड्डी माना गया है। भारत आज परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है। चिकित्सा के क्षेत्र में असाध्य रोगों के लिए इलाज संभव है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी भारत अग्रसर है। उपर्युक्त समस्त कार्यों में भारतीय युवाओं की अहम भूमिका रही है।

इस में कोई दो राय नहीं होंगी कि स्वच्छता के साथ जीना, जीवन जीने की आदर्शकला है। 'स्वच्छ भारत मिशन' के अन्तर्गत प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर देश के युवा मील के पत्थर साबित हुए हैं। शिक्षा के माध्यम से अपने वातावरण व परिवेश को स्वच्छ रखने के महत्व को समझ रहे हैं। एन.सी.सी, एन.एस.एस, स्काउट-गाइड, रेडक्रॉस के बैनर तले स्कूलों, कॉलेजों, संस्थाओं आदि के माध्यम में संचालित, स्वच्छ भारत मिशन के कार्यक्रमों में युवाओं और छात्रों ने अच्छा योगदान दिया है।

कहा जाता है कि किसी राष्ट्र को जानना हो तो सर्वप्रथम वहां के युवाओं के बारे में जानना चाहिए। पथभ्रष्ट और विचलित युवाओं का साम्राज्य खड़ा करके कोई राष्ट्र कभी अपना चिरकालिक सांस्कृतिक स्वरूप ग्रहण नहीं कर सका है। देश की युवा शक्ति ही समाज और देश को नई दिशा देने का सबसे बड़ा औजार है। वह अगर चाहे तो देश की सारी रूप-रेखा बदल सकती है। अपने हौसले और जज्बे से समाज में फैली विसंगतियों, असमानता, अशिक्षा, अपराध आदि बुराइयों को जड़ से समाप्त कर सकती है, लेकिन किसी भी राष्ट्र की युवा शक्ति समाज को तभी सही दिशा में ले जा सकती है जब वह स्वयं सही दिशा में अग्रसर हो।

एक समय ऐसा भी था, जब देश के युवाओं का विदेशी-वस्तुओं के प्रति कुछ अधिक ही आकर्षण रहा था तथा देश में निर्मित उत्पादों के प्रति झुकाव कम था। लेकिन अब देखने में आ रहा है

कि देश में बनी वस्तुओं की ओर रूझान में वृद्धि हुई है। आर्थिक समृद्धि के लिए स्वदेशी वस्तुओं के क्रय और उनका अधिकतम उपयोग ज़रूरी है। स्वदेशी से हम आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होंगे।

भारत को शांति का द्वीप माना जाता है। प्राचीन में भी हमारे देश के मनीषी एवं चिंतक विश्व मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी उस समय युवक ही थे, जब उन्होंने शिकागो में भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता सिद्ध की थी। आज भी युवाओं से अपेक्षा है कि विश्वमंचों पर एक बार पुनः भारत का गौरव स्थापित करें।

संयोगवश, आज भारत की युवा शक्ति कुछ उचित मार्गदर्शन और कुछ विकृत मूल्यों और संस्कृति के चलते अपनी राह से भटकी हुई प्रतीत होती है। इसलिए उभरते भारत में युवा शक्ति की आदर्श भूमिका क्या होनी चाहिए? यह सवाल काफी महत्वपूर्ण हो जाता है।

इस लिहाज से सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भावी भारत के युवा को सही मायनों में सुसंस्कृत और सुशिक्षित होना चाहिए। उसे अपने राष्ट्र और सभ्यता के विकास का वास्तविक अर्थ समझना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय मानते थे कि राष्ट्र का वास्तविक विकास सिर्फ उसके द्वारा किया जाने वाला औद्योगिक उत्पादन और बड़े पैमाने पर किया गया पूंजी निवेश मात्र नहीं है। उनका स्पष्ट मानना था कि किसी राष्ट्र का संपूर्ण और समग्र विकास तब तक होता नहीं जब तक कि उस राष्ट्र का युवा सुशिक्षित और सुसंस्कृत नहीं हो जाता।

सुसंस्कृत से उनका आशय सिर्फ शिक्षा तक नहीं था, बल्कि वह ऐसी युवा शक्ति जो राष्ट्र की देश की मिट्टी और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ाव महसूस करता हो। उनके अनुसार यह तब तक संभव नहीं है जब तक युवा देश की संस्कृति और उसकी बहुलतावादी सोच में राष्ट्र की समग्रता का दर्शन न करता हो। अगर इसे हम भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र के संदर्भ में देखें तो ज्ञात होगा कि इसकी सांस्कृतिक बहुलता में भी एक समग्र संस्कृति का बोध है जो इसे अनेकता में भी एकता के सूत्र में पिरोये रखती है। यही वह धागा है, जिसने विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के बाद भी राष्ट्र को कभी विखंडित नहीं होने दिया। पश्चिमी दार्शनिक मनुष्य के सिर्फ शारीरिक और मानसिक विकास की बात करते हैं, लेकिन अधिकांश भारतीय दार्शनिक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक विकास के साथ ही आध्यात्मिक विकास पर भी जोर देते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भारत के युवा वर्ग को अपने भीतर इस सोच को आत्मसात करना चाहिए। उसे भौतिकवादी सुविधाओं और उपभोक्तावाद से दूरी बना कर शारीरिक और बौद्धिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास पर भी जोर देना चाहिए।

इसी से संबंधित दूसरी बात यह है कि देश के युवाओं को अपने राष्ट्रहित और परंपरा को सर्वोपरि रखना चाहिए। युवा पीढ़ी ही किसी राष्ट्र के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक

विकास की नींव तैयार करती है। यह भी सत्य है कि आज के अधिकांश युवा अपनी संस्कृति के प्रतिमानों और उद्यमशीलता को भूलकर रातों-रात किसी भी तरह शीर्ष पर पहुंचना चाहते हैं, पर वह यह भूल जाते हैं कि जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार बिना उद्यम के कोई ठोस कार्य भी नहीं हो सकता। कभी देश की आजादी में युवाओं ने अहम भूमिका निभाई और जरूरत पड़ने पर नेतृत्व भी किया। तभी विवेकानंद जैसे व्यक्तित्व ने युवा कर्मठता का ज्ञान दिया। पर आज वही युवा अपनी आंतरिक शक्ति को भूलकर चंद लोगों के हाथों का खिलौना बनते जा रहे हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि आज युवा पीढ़ी राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें।

इसके अलावा देश के युवाओं को अपनी परंपराओं का सम्मान भी करना चाहिए। कालांतर में युवाओं के एक बड़े वर्ग ने आधुनिक मूल्यों के नाम पर भौतिकवाद और अवसरवाद के मूल्यों को अधिक अपनाया। इस कारण वे समाज के आंतरिक स्रोतों को कई बार समझ नहीं पाते। समाज से कटने के कारण ही उन्हें परंपराओं का महत्व समझ नहीं आता। इसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ा है। शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का अभाव होने के कारण वह न तो उपयोगी प्रतीत होती है और न ही युवा वर्ग इसमें कोई खास रुचि लेता है। अत: आज देश के युवाओं को अपनी शिक्षा और संस्कृति को एक साथ जोड़कर देखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र की युवा शक्ति का अत्यधिक भौतिकवादी होना और राष्ट्र राज्य के प्रति उदासीन होना घातक हो सकता है। देश में ही युवा आबादी का एक बड़ा हिस्सा जिस तरह नशे की गिरफ्त में है, वह इसी की देन है।

इसमें दो राय नहीं है कि नेता, शासक, डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार और कलाकार आदि के रूप में युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार होते हैं। इन सभी रूपों में उनके ऊपर अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला एवं ज्ञान की परंपराओं को मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे ले जाने का दायित्व होता है, पर इसके विपरीत अगर वही युवा वर्ग उन परंपरागत विरासतों का वाहक बनने से इन्कार कर दे तो निश्चित रूप से उस राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। बहरहाल युवा शब्द अपने आप में ही ऊर्जा और आंदोलन का प्रतीक माना जाता है। आज भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी करीब साठ प्रतिशत है। जाहिर है कि सबसे बड़ी चुनौती इसी युवा शक्ति का संपूर्ण दोहन सुनिश्चित करने की है।
युवा वर्ग देश का भविष्य होने के साथ-साथ हमारे देश के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में युवाओं की संख्या अन्य देशों से अधिक है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है। सरकार का पूरा ध्यान युवाओं के माध्यम से विकास लाने पर केन्द्रित है। उनके अनुसार युवा देश के विकास के लिए अपना सक्रिय योगदान प्रदान करें न कि

केवल उसका एक हिस्सा बनकर रह जाएं। सरकार द्वारा पेश की गई राष्ट्रीय युवा नीति-2014 का उद्देश्य "युवाओं की क्षमताओं को पहचानना और उसके अनुसार उन्हें अवसर प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाना और इसके माध्यम से विश्वभर में भारत को उसका सही स्थान दिलाना है।" युवाओं के व्यक्तित्व में सुधार लाने, उनमें नेतृत्व के गुण विकसित करने एवं उनमें ज़िम्मेदार नागरिक के गुण और स्वयंसेवा की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से युवा मामले विभाग ने विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया है।

शिक्षा एक कठिन कर्म एवं साधना है। जीवन की कठिनाईयों को चेतना से हल की जा सकती है। शिक्षा से चेतना आती है। देश के युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

भारत के विकास में युवाओं के नेतृत्व से ही 'अतुल्य भारत' की परिकल्पना संभव है। नए भारत के निर्माण की कल्पना को हकीकत में बदल सकते हैं। भारत की तुलना संसार के अन्य विकसित राष्ट्रों से हो सके ऐसी अपेक्षा केवल युवाओं से की जा सकती है। किसी कवि का कथन प्रासंगिक है-

जो चट्टानों से टकरा जाए उसे रवानी कहते है ।
जो दिलों पे नक्श हो जाए उसे जवानी करते हैं॥

* बीएससी (आतिथ्य और होटल प्रशासन)
होटल प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद (तेलंगाना)
**सुश्री मानसी साहू ने यह लेख तथा अपने दादा जी के सहयोग से तैयार किया है।

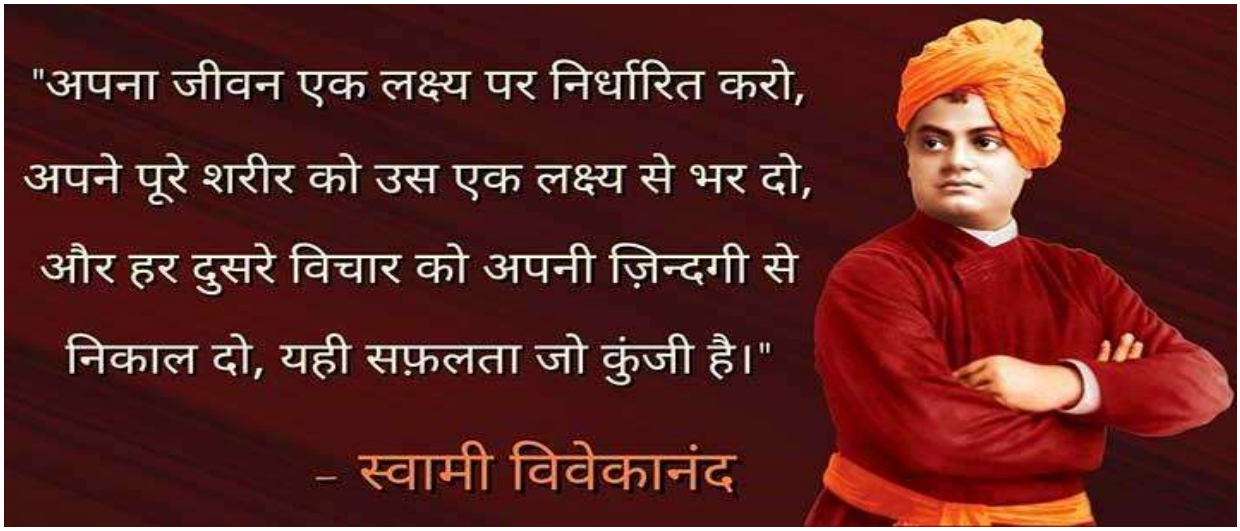

धुंध का शहर -II :

प्राकृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन
'मादिकेरी' और 'मेलुकोटे'

- मोहन सिंह

कुशलनगर :

हमने अगले दिन कुशलनगर के लिए प्रस्थान किया, जो सोमवारपेट से 26 कि.मी. दूर है। यहां पहुंचने में करीब एक घंटे का समय लगता है। कोडागु जिले के पूर्व में स्थित, प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर, एक छोटा शांत शहर और एक अच्छा पिकनिक स्पॉट, जिसका वातावरण कुर्ग की अन्य जगहों से सर्वथा भिन्न है। यहां पर आर्द्रता का स्तर मादिकेरि से अधिक है। माना जाता है कि इस स्थान का नाम हैदर अली ने कुशलनगर रखा था, यानि 'खुशी का शहर'। कॉफी के सुंदर बागों के लिए भी इस क्षेत्र का नाम है।

कुशलनगर के आसपास वीरभूमि विरासत गांव, तिब्बती मॉनेस्ट्री, नामद्रोलिंग स्वर्ण मन्दिर (मठ), हरंगी बांध जैसे कई पर्यटन स्थल हैं। इस शहर के निकट ही कावेरी निसर्गधाम, हरंगी जलाशय, चिकली होल जलाशय और हेरुर दुबारे हाथी शिविर जैसे प्रमुख आकर्षणों का आनंद लिया जा सकता है। जीवन की हलचल से दूर एक शांत वातावरण की तलाश करने वालों के लिए यह एक आदर्श गंतव्य है। यहां की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय सितंबर से जून का माना जाता है । जुलाई से अगस्त के बीच भारी वर्षा और भूस्खलन होने के कारण कुर्ग जाने से परहेज करना ही अच्छा है। यदि ट्रैकिंग के उद्देश्य से कुर्ग की यात्रा करना चाहते हैं तो अक्टूबर से मार्च के दौरान का समय सबसे अच्छा होता हैं। लगभग चार से पांच दिन में इस पर्यटन स्थल की यात्रा पूरी की जा सकती है।

अभी तक आपने जाना कि कुर्ग में क्या देख सकते हैं :

पश्चिमी ढलानों के दिल थाम लेने वाले दृश्यों के सौंदर्य को निहारते हुए, कुर्ग में मादिकेरी और उसके आसपास बहुत से ऐतिहासिक और धार्मिक पर्यटन स्थल, ओंकारेश्वर मन्दिर, मादिकेरी का किला, राजा सीट और राजा का गुंबद, जनरल थिम्मैया युद्ध संग्रहालय, गवर्नमेंट म्यूजियम में देश की विरासत आदि के साथ ही प्रकृति की असीम सुंदरता लिए अब्बे और इरूप्पु जलप्रपात मौजूद हैं।

और अब आगे :

इस अंतिम किश्त में कुर्ग में ईको-पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत, वेश-भूषा, खानपान, विशेष व्यंजनों आवासीय सुविधाओं, आदि सहित बहुत कुछ अलग जैसे भागमंडला, तलकावेरी और तिब्बती स्वर्ण

मन्दिर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों की महिमा का उल्लेख किया गया है। ब्रह्मागिरि की पहाड़ियों पर नलकनाद (नालाखंद) पैलेस के अलावा ट्रैकिंग, गोल्फ, एंगलिंग (मछली पकड़ना) और रिवर राफटिंग जैसे साहसिक खेलों का आनंद ले सकते हैं।
इसके साथ इस यात्रा के अंतिम पड़ाव मेलुकोटे के बारे में बताया गया है जो विरासती धरोहरों और आस्था के पर्यटन के साथ, घने जंगलों को अपने में समेटे हुए एक ऐसा पर्यटन गंतव्य है जिसकी खूबसूरती, प्रकृति प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

निसर्गधाम :

निसर्गधाम वास्तव में कावेरी नदी की दो धाराओं के बीच में स्थित एक खूबसूरत नदी द्वीप है। यह एक वन्यजीव अभयारण्य भी है। इस अभयारण्य में छोटे- बड़े जानवरों और पक्षियों को आसानी से देखा जा सकता है। इनके अलावा, यहां बेंत के बाग, चंदन के पेड़ और टीक के वृक्ष भी बड़ी संख्या में हैं। पर्यटक यहां बोटिंग और हाथी की सवारी जैसी अन्य गतिविधियों में हिस्सा ले सकते है। पर्यटकों ठहरने के लिए यहां सुविधायुक्त काटेज भी बने हैं, जिनमें आसानी से रूक सकते हैं। स्थानीय लोग यहां पिकनिक मनाने आते है।

प्रवेश मार्ग

कावेरी नदी से घिरे 64 एकड़ के इस द्वीप तक एक झूलते हुए पुल पर चलकर पहुंचे, यह पुल द्वीप को जोड़ता है और यात्रियों को कावेरी नदी पार करने में मदद करता है।
कावेरी निसर्गधाम में प्रवेश शुल्क मात्र 10/- प्रति व्यक्ति है। लेकिन अंदर बोटिंग, हाथी सफारी तथा दूसरे अन्य खेलों आदि का अलग-अलग टिकट लेना होता है।

बांस से बने कमरे

धाम प्रबंधन की ओर से यहां के आवासों में ठहरने का अनुरोध किया जाता है। यहां रिज़ॉर्ट में 20 कॉटेज और पांच 'ट्रीटॉप' बांस के कॉटेज भी हैं जो नदी के किनारे प्रकृति के साथ छुट्टियां बिताने के लिए एक आदर्श स्थान लगते हैं। किराया भी अधिक नहीं है। निसर्गधाम से थोड़ा पहले वन विभाग का गेस्टहाउस और कॉटेज भी हैं।

जंगलपार्क

साहसिक गतिविधियों के लिए कोपट्टी हिल्स :

भागमंडला से 10 कि.मी. की दूरी पर कोपट्टी हिल्स कुर्ग का एक खूबसूरत ट्रैकिंग स्थल है। इस स्थान से बहुत कम लोग परिचित हैं। कोपट्टी हिल्स की पैदल यात्रा पर्यटकों को बहुत अधिक लुभाती हैं जो कि छोटे मार्ग की ट्रैकिंग के लिए जानी जाती हैं। कोपट्टी हिल्स की इस ट्रैकिंग के दौरान घास के मैदान, शांत बहती नदी और आकर्षक घने जंगलों का दृश्य देखने का अनुभव मिलता हैं।

स्वर्ण मन्दिर नामद्रोलिंग मठ, बाइलाकुप्पे :

कुशल नगर से करीब पांच कि.मी. दूर स्थित नामद्रोलिंग मठ, जिसे स्वर्ण मन्दिर भी कहा जाता है, बौद्ध तीर्थयात्रियों का आस्था केंद्र है। गोल्डन टेम्पल 80 वर्ग फुट के क्षेत्र में बना है। इस मठ में भगवान बुद्ध की पद्मसंभव और अमितायुस मुद्रा में 40 फीट ऊंची मूर्तियां स्थापित हैं।

नामद्रोलिंग मठ को तिब्बती बौद्ध धर्म से संबंधित सबसे बड़ा शिक्षण केंद्र माना जाता है। तिब्बती शैली में बनाया गया स्वर्ण मन्दिर दक्षिण भारत के लिए एक अनोखी संरचना है। यह मठ तिब्बती वास्तुकला और संस्कृति का एक बेहतरीन उदाहरण है। बाइलाकुप्पे में स्थित, भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को समर्पित इस तीन मंजिला बौद्ध मन्दिर में 5000 से अधिक भिक्षुओं के रहने की व्यवस्था है। आप इस स्वर्ण मन्दिर का भ्रमण कर सकते हैं और चाहे तो यहां रात भर आराम कर सकते हैं, लेकिन यहां ठहरने के लिए अनुमति लेना जरूरी है।

कुशलनगर से मात्र छः कि.मी. दूर बाइलाकुप्पे, भारत में धर्मशाला के बाद, तिब्बती शरणार्थियों का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। लुग्स्म सामदुप्लिंग और डिकई लाओरसे के नाम से दो बड़ी कालोनियों में तिब्बती निवास करते हैं और मुख्य रूप से कृषि करते हैं।

वाल्नूर मत्स्यपालन कैम्प : एंगलिंग यानि मछली पकड़ना एक ऐसा खेल है जिसमें बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है क्योंकि आपको एक ही स्थान पर काफी समय तक बैठना पड़ता है। कुशल नगर से करीब 19 कि.मी. दूर, कावेरी के तट पर वाल्नूर मत्स्य पालन कैम्प है। मछली पकड़ने के शौकीनों (एंगलर्स) को मछली पकड़ने के लिए कुर्ग वाइल्ड लाइफ सोसाइटी से अनुमति लेना जरूरी है। उसके बाद ही वह मछली पकड़ने का शौक पूरा कर सकते हैं। अनुमति-पत्र में स्पष्ट

रूप से नदी के उस विशेष खंड का उल्लेख होता है, जिसका उपयोग मछली पकड़ने के लिए किया जा सकता है। इसमें प्रति दिन पकड़ी जा सकने वाली मछलियों की संख्या भी निर्दिष्ट होती है।

चूंकि मछली पकड़ना एक उबाऊ और बोरिंग खेल है, कई बार घंटों बाद भी मछली कांटे में नहीं आती है। लेकिन यहां आपको यह आश्वासन दिया जाता है कि आप एक "कैच" जरूर पकड़ सकते हैं। **यहां की सबसे खास बात है कि पकड़ी गई मछलियों को अपने साथ नहीं ले जा सकते, उन्हें वापस पानी में छोड़ना जरूरी है। आमतौर पर मानसून के मौसम के दौरान अनुमति नहीं दी जाती हैं क्योंकि उस समय मछलियां प्रजनन करती हैं।** वाल्नूर पक्षियों को देखने वालों का स्वर्ग है। शिविर में, पक्षी-प्रेमियों के जुनून की संतुष्टि करती पक्षियों की कई प्रजातियां देखने को मिलती हैं।

तलकावेरी स्थल :

कुर्ग का यह मशहूर धार्मिक स्थल तलकावेरी, भागमंडला के पास ब्रह्मगिरी पर्वत पर 1276 मी. की ऊंचाई स्थित कावेरी नदी का उद्गम है। यह स्थान भगवान विनायक और अगस्त्येश्वर को समर्पित हैं। मान्यता है कि यहां मां कावेरी ऋषि अगस्त्य द्वारा अवतरित की गईं थीं। इसलिए यहां एक तलकावेरी कुण्ड (तालाब) भी है जिसे इसका उद्गम माना जाता है। नदी एक झरने के रूप में प्रकट होकर इस कुंड को भरती है और फिर कुछ दूरी तक दिखने के बाद भूमिगत हो जाती है। इस स्थान पर तालाब के बगल में देवी कावेरियम्मा का एक मन्दिर है। यहां के प्रसिद्ध शिव मन्दिर में स्थापित प्राचीन शिवलिंग के बारे में किवदंती है कि यह भी मां कावेरी

के साथ ही अवतरित हुआ था। विशेष अवसरों पर इसमें स्नान करना पवित्र माना जाता है। इसलिए यहां तीर्थयात्री स्नान भी करते हैं। साथ ही यहां कुछ मन्दिर भी बनाए गए हैं।

सदाबहार वन भूमि और कुर्ग की धुंधली पहाड़ियों का विहंगम दृश्य देखने के लिए पहाड़ी की चोटी पर 407 सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। पहाड़ियों के बारे में सबसे रोमांचक बात यह है कि जब कोई सबसे ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा होता है, तब भी वह नीचे मन्दिर की घंटियों के बजने की आवाज को साफ - साफ सुन सकता है। यदि कोई बरसात के मौसम में तलकावेरी की यात्रा करता है, तो उसका स्वागत कावेरी नदी के उद्गम के मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्य से होगा।

तलकावेरी तीर्थ का एक विहंगम दृश्य।

सूर्य का तुला राशि में प्रवेश 'तुला संक्रांति' कहलाता है। तुला संक्रांति का कर्नाटक में विशेष महत्व है। कावेरी संक्रमण्म (संक्रांति) अक्टूबर के मध्य में (हिंदू कैलेंडर के अनुसार तुला महीने का पहला दिन) तलकावेरी में मनाया जाता। पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार, यह उत्सव कोडावों

की प्रमुख देवी कावेरी का प्रतीक है, जो पवित्र जल या 'तीर्थ' के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई थी । इस अवसर पर यहां विशेष उत्सव का आयोजन होता है इसलिए यहां पर विशेष रौनक होती है।

नलकनाद अरमणि (पैलेस) :

तलकावेरी से लगभग दो घंटे के समय की दूरी पर कुर्ग के येवकापड्डी क्षेत्र के कक्काबे शहर में नलकनाद (या नालाकंद) पैलेस एक खूबसूरत स्थान है। इस महल का अपना एक समृद्ध इतिहास है। मुख्य रूप से हलेरी वंश के शासक चक्काडोड्डा वीरराजेंद्र की टीपू सुल्तान पर जीत का जश्न मनाने के लिए इसे 1792 से 1794 ईस्वी के बीच बनावाया था।

बाहर से, महल किसी साधारण संरचना की तरह दिखता है। लेकिन जब आप महल में कदम रखते हैं तो उसकी बारीक नक्काशी से चकित हो जाएंगे। जटिल नक्काशी से भरा लकड़ी से बना कलशनुमा गुंबद और महल के आंगन में चार बैल स्थापित किए गए हैं और इसका हर कोना अपने आप में एक वास्तुशिल्प कला का अचरज सा है।

महल के खंभों पर एक ज्यामितीय पैटर्न में नागों को चित्रित किया गया है जिसे नागमंडल कहा जाता है। पूरे महल को खूबसूरत भित्ति चित्रों से सजाया गया है। राजा और रानी के निवास में विशेष रूप से बनाए भित्तिचित्र हैं जो पांच शताब्दियों से अधिक समय के बाद भी अपनी उत्कृष्टता बनाए हुए हैं। कोई बीस साल पहले तक, दो मंजिला महल के नीचे का तल कर्मचारियों के उपयोग के लिए था, ऊपरी तल पर राजपरिवार रहता था। अब ऊपरी तल पर केवल दो कमरों में गृह स्वामियों का एक अलग निजी निवास है। शेष महल को संग्रहालय में बदल दिया गया है।

महल के ठीक सामने एक सुंदर मंडप है जो राजा के विवाह के समय विशेष रूप से बनाया गया था। मंडप में विभिन्न देवी देवताओं और की नक्काशीदार मूर्तियां है। महल को देखने में एक से

दो घंटे का समय लग जाता है। नलकनाद पैलेस सभी दिन सुबह 9:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच खुला रहता है। प्रवेश शुल्क पांच रुपए है।

नागमंडल

महल के ठीक सामने एक सुंदर मंडप है जो राजा के विवाह के समय विशेष रूप से बनाया गया था। मंडप में विभिन्न देवी देवताओं और की नक्काशीदार मूर्तियां है। महल को देखने में एक से दो घंटे का समय लग जाता है। नलकनाद पैलेस सभी दिन सुबह 9:00 बजे से शाम 6:00 बजे के बीच खुला रहता है। प्रवेश शुल्क पांच रुपए है।

यह स्मारक कर्नाटक सरकार के पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय के तहत एक संरक्षित स्मारक है। कोडागु क्षेत्र के शिल्प को प्रदर्शित करने के निमित्त इसे संग्रहालय के रूप में परिवर्तित करके एक प्रमुख पर्यटन स्थल बनाने के उद्देश्य से INTACH द्वारा महल के पुनर्निर्माण पर 2.29 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई है।

कुर्ग के सांस्कृतिक परिधान :

दक्षिण भारत के दूसरे इलाकों से कुर्ग कुछ मायने में अलग है। यहां के निवासियों में एक अलग तरह की खुशमिज़ाज़ी है, जो कुदरत के क़रीब रहने वाले लोगों में दिखाई देती हैं। देश के इस भाग में भी महिलाएं साधारणतया लहंगा-चोली, सूट सलवार जैसे अन्य वस्त्रों के अलावा जींस आदि का उपयोग करती हैं। आमतौर पर पुरूष भी पैंट-शर्ट या फिर दक्षिण भारतीय धोती-कुर्ते में दिखाई देते हैं।

गवर्नमेंट म्यूजियम से लिया गया एक चित्र

दक्षिण भारत के इस हिस्से की समृद्ध संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए कुर्गशैली के परिधान अपने में विशिष्ट हैं। विशेष अवसरों पर इन लोगों की वेशभूषा भी प्राय: अलग-अलग होती है। पुरुष काले रंग का एक विशेष प्रकार का परिधान धारण करते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'कुप्या' कहा जाता है। इसमें कुर्ता + चुड़ीदार पायजामा के साथ काले रंग का आधी बांह का शेरवानी जैसा कोट और पगड़ीनुमा चमकीली टोपी पहनी जाती है।

कुर्ग साड़ी की विशेषता:

कूर्गी साड़ी अपनी एक खास शैली के लिए लोकप्रिय है। देश में महिलाओं द्वारा पहनी गई साड़ी की चुन्नटें (प्लीट्स) आमतौर पर आगे की ओर रहती हैं। लेकिन यहां की साड़ी की विशेषता है कि चुन्नटें कमर के पिछले हिस्से में बांधी जाती हैं और पल्लू को घुमाकर सामने लाया जाता है। साड़ी की इस (स्टाइलिश आउटफिट) शैली को डिजाइन करने के लिए साटन, सिल्क आदि का बेहतरीन कपड़ा इस्तेमाल किया जाता है।

खानपान:

खूबसूरत पर्यटन स्थलों और आकर्षक वातावरण के साथ-साथ, कुर्ग अपने लजीज व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। स्थानीय भोजन में डोसा, वड़ा, इडली, सांबर के साथ ही सुगंधित चावल, पुलाव, अक्की रोटी (चावल के आटे में गेहूं या बेसन मिलाकर बनी), मशरूम करी, सूखी मछली, चिकन, केकड़ा, पोर्क (सूअर का मांस), कई तरह की सब्जियां, नरम बांस का अचार के अलावा, तिब्बती, चीनी, कॉन्टिनेंटल, दक्षिण-भारतीय और उत्तर भारतीय अन्य व्यंजन जैसे कि तंदूरी परांठा, छोला-पठूरा, लस्सी आदि भी आसानी से मिल जाते हैं।

कुर्ग की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय:

कुर्ग की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय सितंबर से जून का माना जाता हैं। जुलाई से अगस्त के बीच भारी वर्षा और भूस्खलन होने के कारण कुर्ग जाने से परहेज करना ही अच्छा है। यदि ट्रैकिंग के उद्देश्य से कुर्ग की यात्रा करना चाहते हैं तो अक्टूबर से मार्च के दौरान का समय सबसे अच्छा होता हैं। लगभग चार से पांच दिन में इस पर्यटन स्थल की यात्रा पूरी कर सकते हैं।

कैसे पहुंचे :

कुर्ग का निकटतम हवाई अड्डा मैंगलूरू अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जो यहां से लगभग 144 कि.मी. दूर है। सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन मैसूरू रेलवे स्टेशन है,यहां से लगभग 116 कि.मी. दूर है। इन स्थानों से टैक्सी या फिर राज्य सरकार की बसों से आसानी से कुर्ग पहुंचा जा सकता है। यह कर्नाटक के मैसूरू, बैंगलोर और मैंगलूरू शहरों के साथ ही केरल के कोझीकोड, कन्नूर जैसे शहरों से राजमार्गों के द्वारा सुव्यवस्थित रूप से जुड़ा हुआ हैं।

कहां ठहरें :

कुर्ग में लो-बजट से लेकर हाई-बजट तक के कई होटल मिल जाते हैं। आप अपनी सुविधा और बजट के अनुसार होटल का चुनाव कर सकते हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र में 'होम-स्टे' की सुविधाएं भी बहुत प्रचलित हैं।

कुर्ग **'सुबह पहुंचे और शाम को लौटे'** लोगों के लिए नहीं है, यह उन लोगों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है, जो जीवन की आपाधापी में कभी-कभी सिर्फ आराम करने की इच्छा से प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेना चाहते हैं। यहां के वास्तविक अनुभवों को पर्यटक लंबे समय तक याद रखते हैं। हम भी दस दिन बिताकर, इन जगहों की यादों को मन में संजोए, कुशल नगर से ऐसे स्थान की यात्रा के लिए चल पड़े, जिसने आज भी प्राकृतिक सौंदर्य और पौराणिक स्थलों को सहेज कर रखा है और उसका नाम है, मेलुकोट्टे।

ड्राईवर ने बता दिया था कि कुशल नगर से मेलुकोट्टे जाने के लिए एक रास्ता, लगभग 100 कि.मी. है और पहुंचने में तीन घंटे लगेंगे। नागरहोले से एक दूसरा मार्ग 125 कि.मी. है पर आधा घंटा कम लगेंगा। लेकिन जंगल में रुक कर जाएंगे तो कम से दो घंटे और लगेंगे। हमने तय किया कि नागरहोले मार्ग से ही चला जाए और करीब डेढ घंटे में नागरहोल आ गए।

नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान :

नागरहोल अभयारण्य विश्व भर में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि किसी जमाने में यह स्थान मैसूर के राजाओं की शिकारगाह होता था। लेकिन बाद में इसे अभयारण्य बना दिया गया। अब इसे राजीव गांधी अभयारण्य के नाम से जाना जाता है। यहां का मौसम कुछ ज्यादा ही ठंडक भरा रहता है। इसलिए यह उद्यान अन्य की अपेक्षा शांत है। यह उन कुछ जगहों में से एक है जहां एशियाई हाथी पाए जाते हैं। पशु प्रेमियों के लिए यहां देखने और जानने के लिए बहुत कुछ है। जंगल के बीच में नागरहोल नदी बहती है। यहां अभयारण्य में ''एलिफेंट सफारी'' का आनंद भी लिया जा सकता है।

समय की कमी के कारण, हम पार्क में नहीं गए फिर भी रास्ते में रंगबिरंगे पक्षी दिखाई देते रहे और पूरा वातावरण उनकी चहचहाट से गूंज रहा था। रास्ते भर खेत-खलिहान, गांव-देहात के नजारों के बीच इस 120 कि.मी. की दूरी को पार करने में कब तीन घंटे का समय बीत गया, कुछ पता ही नहीं लग पाया।

##* **राजीव गांधी अभयारण्य, नागरहोल के बीच से गुजरती सड़क : यह कोई शाम का समय नहीं है, बल्कि दिन में 12.00 बजे के आसपास का लिया गया चित्र है। धुंध और बादल ऐसे छाए है कि सूरज देव कहीं छुप से गए है।**

मेलुकोट्टे :

लगभग डेढ़ बजे के आसपास हम मेलुकोट्टे पहुंचे। दक्षिण कर्नाटक की गोद में समुद्र तल से करीब तीन हजार फीट की उंचाई पर बसा मेलुकोटे मांड्या जिले के पांडवपुरा तालुक में एक बड़ा गांव है। मादिकेरी से अलग यहां का ग्रामीण सौंदर्य कुछ बेहतर और शांत है। पहाड़ियों के बीच बसे इस गांव में जहां तक नजर जाती, हरी भरी प्रकृति मुस्कुराती सी दिखाई देती है। मौसम को खुशग्वार रख कर जैसे प्रकृति ने यहां अपना बेशुमार प्यार लुटाया है।

ऐसे सुन्दर नजारों के बीच हम मेलुकोटे में आए। राजबीथी यानी मुख्य सड़क के दोनों ओर नारियल, आम, काजू के पेड़ ऐसे लगते हैं जैसे कि यहां आने वाले अतिथियों का स्वागत करने के लिए ही लगाए गए हों, पर ऐसा नहीं हैं। यहां हर घर और खेतों के बाड़े में पेड़ लगाने की बरसों पुरानी परंपरा है। शायद इसी परंपरा से ही यहां की शुद्ध हवाओं में मौजूद शीतलता मन

को तर कर जाती है। इन नजारों के बीच ऐतिहासिक धरोहरों के खजाने भी बिखरे हुए हैं। इन पेड़ पौधों के बीच कई दो मंजिला पुरानी इमारतें झांकती नजर आती हैं।

कतारों से बनी पुरानी हवेलियों के दरवाजे, झरोखों, लकड़ी के छज्जों की बनावट की छटा को निहारते हुए, हम एक हवेली को देखने रुक गए। अंदर बड़े से आंगन में दो महिलाएं हल्दी के साथ कुछ मसाले सुखाती नजर आईं। उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यहां पूजा में लोग हल्दी का इस्तेमाल करते हैं। वह भी हल्दी सुखाकर पिसाई करेगी।

लोग भी मिलनसार लगे, किसी से बात करने में कोई संकोच नहीं, धार्मिक केन्द्र होने के कारण यहां पूरे देश से लोगों का आवागमन होता है। इसलिए यहां की दुकानों, होटल तथा रेस्टोरेंट्स के लोगों से हिन्दी में बात करने में कोई ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। इतना ही नहीं मंदिरों के पुजारी आदि भी अच्छी तरह से हिन्दी में बात कर लेते हैं। हमें बताया कि यह स्थल वैष्णव समुदाय के लोगों के चार महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। यहां निकट ही एक कल्याणी तालाब और मंडप है, जहां लोग दूर-दूर से, खासकर शादी ब्याह कराने या फिर मन्नतें मांगने आते हैं।

मंदिरों के बीच से गुजरते हुए वेद-मंत्र उच्चारण के उद्घोष से भी पूरा क्षेत्र कोई पौराणिकलोक सा प्रतीत होता है। यहां का रूप और आभा पौराणिक और ऐतिहासिक होने के कारण मेलुकोटे पर फिल्म जगत की भी विशेष कृपा दृष्टि बनी रहती हैं। यहां ऐतिहासिक विषयों पर बनी, अधिकतर दक्षिण भारतीय फिल्मों की शूटिंग भी की जाती रही हैं। बताया गया कि इसी गांव में अक्षय कुमार की 'भूलभुल्लैया' फिल्म की शूटिंग हुई थी।

मेलुकोटे के बारे में.....

मेलुकोट्टे एक कन्नड़ शब्द है जिसका हिंदी में अर्थ होता है श्रेष्ठ दुर्ग। लेकिन मेलुकोट्टे शब्द बिगड़ते-बिगड़ते मेलुकोटे या मेलकोटे में बदल गया और मेलुकोटे ज्यादा प्रचलन में है। चार हजार वर्षों की कहानियां अपने में समेटे हरा भरा मेलुकोटे, पर्याप्त ऐतिहासिकता से भरा है। यहां के दुर्ग की दीवारें तो लगभग ढह गई हैं, लेकिन दुर्ग के अंदर कई धरोहरें आज भी अपने स्वर्णिम काल की गवाही देती नजर आती हैं। धार्मिक स्थल और संस्कृत अकादमी होने के कारण संस्कृत विद्वानों के बीच भी लोकप्रिय रहा है।

सामान्य रूप से देखें तो मेलुकोटे में दो स्थान ही सबसे विशिष्ट माने जाते हैं, जिनमें पहला है नरसिंह पहाड़ी और उसके पश्चिमी तल पर पुष्करिणी पवित्र जल कुंड। आज भी पूरे शहर में पानी की आपूर्ति का यही मुख्य स्रोत है।

दूसरा है, चेलुवनारायण स्वामी मन्दिर जिसका पूरे देश में हिंदू धर्मावलम्बियों में एक विशेष

स्थान है। यहां प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों और भक्तों का आगमन होता है। यह दिव्य देशम अभिमन स्थलम में भी सूचीबद्ध है।
एक खास बात और कि मेलुकोटे में खरीदारी करना एक अच्छा विकल्प नहीं है। इसके अलावा, दर्शनीय स्थलों के यात्रा क्षेत्रों में कोई साहसिक खेल आदि भी नहीं है। यहां 'नाइट-लाइफ़' जैसा कुछ नहीं है... लगभग साधारण सा ग्रामीण परिवेश। रात आठ बजे के बाद तो सड़कें लगभग सूनी सूनी ही हो जाती है।

चेलुवनारायण स्वामी मन्दिर :

यह मेलुकोटे का सबसे प्रसिद्ध स्थान है। भगवान विष्णु के भक्तों के लिए इसका निर्माण 1200 ई. में दार्शनिक रामानुजम ने चट्टानी पहाड़ी (जिसे यदुगिरी या यादवगिरी कहा जाता है) पर कराया था। उन्होंने ही, इसमें भगवान संपतकुमार (विष्णु जी) की मूर्ति स्थापित कराई थी। प्रोफेसर एम.ए.लक्ष्मी तातार्य इस मन्दिर के पुरोहित हैं। उनके साथ गपशप करने बैठे, तो उन्होंने बताया कि श्रीपेरंबुदूर मठ, (वर्तमान में तमिलनाडु में है) से दार्शनिक रामानुजम इस गांव में आए थे और उन्होंने ही यहां एक दुर्ग का निर्माण करवाया था। फिर तालाब और मन्दिर का निर्माण करवाया। चेलुवनारायण मन्दिर में स्थापित मुख्य मूर्ति भगवान संपतकुमार यानी विष्णु के अवतार नारायण की है और हजार साल पुरानी है।
इस मन्दिर का पूरे देश में हिंदू धर्मावलम्बियों में एक विशेष स्थान है। यहां प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों और भक्तों का आगमन होता है। हमें बताया गया कि यह मन्दिर वैष्णव सम्प्रदाय के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यह दिव्य देशम अभिमन स्थलम में भी सूचीबद्ध है। ज्यादातर वैष्णव अनुयायी जीवन में एक बार अवश्य यहां की यात्रा करने की इच्छा रखते हैं।

तिरुनारायण : चेलुवनारायण स्वामी मन्दिर को तिरूनारायणपुर (श्री नारायण का घर) भी कहा जाता है। मन्दिर के मुख्य देव भगवान विष्णु हैं, जिनकी आराधना के समय तिरुनारायण या चेलुवर्या के नाम से भी की जाती है। त्रेतायुग में इसे नारायणद्रि भी कहा जाता था क्योंकि इसे

बलराम और कृष्ण ने मूर्तिमान किया था। कलयुग में इसे संत रामानुजाचार्य ने मूर्तिमान किया था।

मन्दिर में की गई नक्काशी में ऐतिहासिक साक्ष्यों का उल्लेख मिलता है। नवरंग के स्तंभों में से एक पट्टी पर राजा वोडेयार का नाम अंकित है, जिससे ज्ञात होता है कि वह चेलुवनारायण स्वामी के बहुत बड़े भक्त थे और अक्सर माह में एक दो बार यहां आया करते थे। चेलुवनारायण स्वामी मन्दिर के प्रति मैसूर के वोडेयार राजवंश की विशेष भक्ति रही है और उनके विशेष संरक्षण में होने के कारण मन्दिर समृद्ध और संपन्न है और इसके कोष में राजा वोडेयार द्वारा भगवान को समर्पित आभूषणों का एक मूल्यवान संग्रह है।

वोडेयार ने भगवान को दो सोने के मुकुट भेंट किए थे, जिन्हें वैरामुडी या वज्रमुकुट और कृष्णराज-मुडी के नाम से जाना जाता है। एक और मुकुट है, जो किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा भगवान को उपहार में समर्पित किया गया था। यह तीनों ही मुकुट वर्तमान में सरकारी ट्रेजरी में विशेष अभिरक्षा में रखे गए हैं और विशेष अवसरों पर ही मन्दिर में लाए जाते हैं। तीनों में से, वैरामुडी सबसे कीमती है और वैरामुडी उत्सव के अवसर पर मुख्य देव श्री विष्णु के सिर पर सुशोभित किया जाता है।

वैरामुडी ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ही इन मुकुटों को बाहर निकाला जाता है और देवताओं के सिर पर सजाया जाता है, जिसके बाद देवताओं की सवारी को जुलूस के रूप में शहर में निकाला जाता है। एक दिलचस्प तथ्य यह है कि अंदर से चंदन की लकड़ी लगे लोहे के भारी सुदूकों में से मुकुट निकाले जाने से पहले मुख्य पुजारी की आंखों पर पट्टी बांध दी जाती है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि किसी को भी मुकुटों को तब तक नहीं देखना चाहिए जब तक कि इसे भगवान तिरुनारायण को पहनाया नहीं जाए। ज्ञात हुआ कि वैरामुंडी महोत्सव मार्च-अप्रैल में बड़े

पैमाने पर आयोजित किया जाता है। ऐसा अनुमान है कि इस महोत्सव के दौरान रथ जुलूस में प्रति वर्ष चार से पांच लाख तक लोग शामिल होते हैं।

रामप्रिय : जहां तक पौराणिक कथाओं का संबंध है, ऐसा माना जाता है कि भगवान राम ने भी अपने दो पुत्रों लव और कुश के साथ इस मन्दिर में आकर श्रीनारायण को पुष्पांजलि अर्पित की थी। इसलिए चेलुवनारायण स्वामी को मूल रूप से रामप्रिय कहा जाता था। इस तथ्य का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में और साथ ही मन्दिर में रखी पांडुलिपियों में भी मिलता है।

योग नरसिम्हा मन्दिर : योग नरसिम्हा भगवान को समर्पित मेलुकोटे नरसिम्हा मन्दिर समुद्र तल से लगभग 5830 फीट की ऊंचाई पर एक पहाड़ी पर अवस्थित है और मन्दिर तक पहुंचने के लिए लगभग 400 सीढ़ियां है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रह्लाद ने स्वयं योगमुद्रा में भगवान नरसिंह की मूर्ति स्थापित कर योग नरसिंह मन्दिर का निर्माण कराया था।

इस मन्दिर का कलात्मक रूप से पुनर्निमाण होयसाल शासकों के समय किया गया था, जिसे कई पीढ़ियों से अब तक संरक्षित रखा गया है।

पहाड़ी पर स्थित इस प्रतिष्ठित मन्दिर को नरसिंह पूजा के सात पवित्र केंद्रों में से एक माना जाता है। नरसिंह की योगपट्ट मुद्रा में स्थापित मूर्ति अपने आप में अद्भुत और अलौकिक है। इस मूर्ति को देख कर अंदाजा लगाया जा सकता है कि ईश्वर के लिए भी योग का कितना महत्व रहा होगा। यह मन्दिर भी हजारों साल पुराना बताया जाता है। मन्दिर का गोपुर दूर से दिखाई देता है। ऐतिहासिक मन्दिर अपनी स्थापत्य सुंदरता, शांत परिवेश और धार्मिक महत्व के कारण श्रृद्धालुओं को आकर्षित करता है।

मन्दिर की सुंदरता और धार्मिक महत्व ने हमेशा आम लोगों और राजघरानों को समान रूप से आकर्षित किया है। मन्दिर में टीपू सुल्तान द्वारा दिया गया एक विशाल नगाड़ा, मैसूर परकला मठ द्वारा चढ़ाया गया घंटा और मैसूर के पूर्व वोडेयार राजा कृष्णराज वोडेयार-III द्वारा नरसिंह देव को चढ़ाया गया सोने का एक मुकुट आज भी देख सकते हैं।

सुबह 9:30 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक और फिर शाम 5:30 से रात 8:00 बजे तक श्री योग नरसिंह स्वामी मन्दिर दर्शन किए जा सकते हैं।

* योग नरसिम्हा मन्दिर एक पहाड़ी पर स्थित है। ऊपर तक जाने के लिए लगभग चार सौ सीढ़ियां हैं। साथ ही पहाड़ी के बीचों-बीच एक पक्की सड़क होने से हम कार से ही ऊपर तक पहुंच गए, लेकिन वहां पार्किंग से भी ऊपर मन्दिर तक पहुंचने के लिए 150 सीढ़ियां हैं। अधिकांश सड़कें कुछ संकरी हैं। इसलिए यहां कई जगहों पर 'सड़क पर वाहन चलाते समय सावधान' रहने के बोर्ड लगाए गए हैं।

*मन्दिर के अंदर फोटोग्राफी करना सख्त मना है लेकिन बाहर तक अपने साथ कैमरे ले जा सकते हैं। यहां आसपास काफी बंदर मौजूद हैं और हमें बताया गया कि वह हाथ में खाने का सामान और चीजें छीन लेते हैं। सावधानी देखते हुए हमने अपने हाथों में कुछ नहीं लिया।

वैसे तो मेलुकोटे में हर एक कदम पर एक पौराणिक कथा सुनने को मिल जाती है। सबसे खास यहां का मुख्य मार्ग राजवीथी यानी राजपथ है, जहां पर डेढ़ सौ साल पुराने करीब 70-80 घर हैं। ऐसी ही एक सड़क कन्नीगल वीथी है, जिसमें मंदिरों के पंडितों और पुरोहितों के निवास हैं। संस्कृत के स्कॉलर डॉ. दिलीप कर बताते हैं गांव में छोटे बड़े करीब 108 तालाब हैं, इनमें

से तो कुछ सीढीनुमा भी हैं। सभी तालाबों के बनने की कहानी भी दिलचस्प है, जैसे अक्का तंगी कोला यानी बड़ी बहन और छोटी बहन का तालाब। कहा जाता है कि गांव में दो बहनें थी। उसके नाम पर उनके पिताजी ने तालाब बनवाया, लेकिन दोनों की प्रकृति और कर्म के आधार पर इन तालाबों की सीरत (स्वरूप) तय हुई। स्थानीय लोगों की मान्यता के अनुसार बड़ी बहन के कर्म पाप से भरे हुए थे इसलिए इस तालाब का पानी दूषित रह गया और छोटी बहन के कर्म अच्छे रहे, इसलिए तालाब का पानी पीने योग्य है। आज भी गांव के लोग इसी तालाब के पानी का उपयोग करते हैं।

पुष्करणी तालाब :

मन्दिर परिसर में नीचे एक विशाल जलकुंड को पवित्र पुष्करणी अथवा कल्याणी तालाब भी कहते हैं। इसके चारों ओर करीने से बनी सीढ़ियों और उस पर बने ऊंचे मंडपों की 900 साल पहले की वास्तुकला की सुंदरता को आज भी देखा जा सकता है। ग्रामीण लोगों के अथक प्रयास से यह तलाब आज भी संरक्षित है। तालाब के चारों ओर बने मंडप बेहद खूबसूरत वृत्ताकार मेहराब के साथ बनाए गए हैं,जिन पर देवी-देवताओं की तराशी गई मूर्तियां लगी हैं। तालाब से गांव के बाहर ऊंची चोटी पर बने योग नागेश्वर मन्दिर का दृश्य भी साफ दिखाई देता है। इस तालाब की सुंदरता बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती है।

कभी नहीं सूखता धनुषकोटि :

प्रोफेसर तातार्य ने ही बताया कि रामायण काल से भी इस गांव का विशेष संबंध है। मान्यताओं के अनुसार वनवास के दौरान भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने यहां कुछ दिन विश्राम किया था और भगवान राम ने सीता मैया की प्यास बुझाने के लिए अपने बाणों से इस छोटे पर्वत को भेद कर पानी उपलब्ध कराया और सबकी प्यास बुझाई थी। इसलिए स्थान को धनुषकोटि भी कहा जाता है। सदियां बीत जाने के बाद भी इस छोटे से जलस्त्रोत में आज भी

हमेशा मीठा पानी रहता है, जो यहां आने वालों की प्यास को तृप्त करता है। यहां श्री राम जी के पदचिह्न भी देखे जा सकते हैं।

रायगोपुरा :

"गोपुर" या "गोपुरम" का, अर्थ है "मन्दिर का प्रवेश द्वार"। विजयनगर साम्राज्य के दौरान, होयसाल नरेश विष्णुवर्धन द्वारा 1098 ई. के आसपास में निर्मित, प्रसिद्ध रायगोपुरा एक अधूरी संरचना है। यहां जटिल नक्काशी के साथ उभरे हुए चार स्तंभ हैं लेकिन कोई गोपुरम नहीं है।

इतिहास और पुरातत्व के छात्रों और विद्वानों के बीच यह एक लोकप्रिय संरचना है। ऐसा कहा जाता है कि इसे विशाल स्तंभों को बड़े बड़े पत्थरों से रातों-रात बनाया गया था। हालांकि, अधिक ऊंचाई पर होने के कारण यहां पहुंचने में कुछ कठिनाई तो होती है, फिर भी साहसी यात्री गोपुर के शीर्ष तक पहुंचते हैं, जहां से पूरे मेलकोट का दृश्य देख सकते हैं। इन खंडहरों को कई भारतीय फिल्मों में दिखाया गया है।

प्रोफेसर ताताचार्य ने बताया कि 14वीं शताब्दी के मुस्लिम आक्रमण के बाद से ही मन्दिर और आसपास की ऐतिहासिक कलाकृतियां खंडहर जैसी ही पड़ी थीं। राज्य सरकार के अनुरोध पर 2008 से भारत सरकार के भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने यहां के ऐतिहासिक परिवेश को देखते हुए, उसके ही अनुसार, इसके जीर्णोद्धार के कार्य शुरू किए हैं।

केले के पत्तों पर परोसा कलंबू:

सैर सपाटे के बीच यहां खानपान के लिए भी कई अच्छे होटल हैं। आम तौर पर होटलों में दक्षिण भारतीय व्यंजन जैसे इडली, डोसा, सांबर वड़ा ही मिलते हैं।

लेकिन श्रृद्धालु भक्तों और पर्यटकों के लिए खास व्यंजन भी बनाए जाते हैं। यह अलग बात है कि इनका नाम सुनकर आप एक बार चकरा जाएंगे। इस गांव का स्वनाम-धन्य व्यंजन कलंबू है। यह दिखने में खिचड़ी की तरह लगता है मगर इसके स्वाद में करी पत्ते और दक्षिण भारत के तेज मसालों से स्पेशल तड़का लगाया होता है और इसे केले के पत्तों पर ही परोसा जाता है। दाल, चावल, स्थानीय सब्जी, इमली के साथ तैयार किया गया यह व्यंजन कलंबू वाकई अलग है, जिनका स्वाद हमेशा जुबान पर याद रहेगा। केले के पत्तों पर परोसे गए कलंबू, पुलियोगरे (इमली के पानी से पकाया चावल), शक्करे पोंगल, खारा पोंगल, नींबू भात, बीसीवले भात जैसे कई व्यंजन हैं, जिनका स्वाद बस यहीं मिलता है। शाम ढलने के साथ ही कॉफी स्टालों पर चाय और कॉफी की चुस्कियां ली जा सकती है। चाय की प्याली के साथ यहां की नमकीन और मुर्क भी दी जाती है।

"अम्मा" का घर :

चेलुवनारायण स्वामी मन्दिर की ओर जाने वाले मार्ग पर ईस्ट चिथिरई स्ट्रीट पर तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता का जन्मस्थान (पुश्तैनी घर) है। इसी घर में 24 फरवरी,1948 को जयललिता का जन्म हुआ था। मेलुकोटे में तमिल आयंगर परिवार में जन्मी बेटी का नाम कोमलवल्ली रखा गया। उनके पिता जयराम एक वकील थे। वह सिर्फ दो साल की ही थीं जब उसके पिता का निधन हो गया और उनकी मां वेदवल्ली अपने बच्चों के साथ बैंगलोर में पिता के घर आकर रहने लगी। कहा जाता है कि उनके नाना अक्सर यहां आते रहते थे। समय बदला, वह फिल्म अभिनेत्री 'जय ललिता' बनीं, फिर राजनीति में आ गई, आगे की कहानी तो सब जानते हैं।

जयललिता का पुश्तैनी घर

फिलहाल, स्थानीय लोगों की एक एसोसिएशन इस घर की देखभाल करती है। इसमें जय ललिता की बहुत सी तस्वीरें, उनके द्वारा उपयोग किए गए कुछ अन्य सामान आदि को संजोया गया है। इसे संग्रहालय बनाने के लिए राज्य सरकार से बार बार मांग की जा रही है।

संस्कृत अनुसंधान अकादमी:

मेलुकोटे में संस्कृत वेदों और प्राचीन पांडुलिपियों के विशाल संग्रह को देखने के लिए संस्कृत अनुसंधान अकादमी जरूर जाएं। 1977 में स्थापित की गई, इस अकादमी में 11,000 से अधिक पांडुलिपियां और 35,000 पुस्तकें अब रखी हुई हैं। मेलुकोटे में एकमात्र शेष संस्कृत स्कूल है, जो संस्कृत वेदों के अध्ययन के के लिए जाना जाता था आज अपने अस्तित्व के लिए सरकार और कुछ संस्थाओं की सहायता से चलाया जा रहा है।

मेलुकोटे कैसे पहुंचें :

सबसे पास मैसूरू हवाई अड्डा (70 कि.मी.) है। मेलुकोटे से लगभग 26 कि.मी. की दूरी पर सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन पांडवपुरा है। मैसूर से आने आने वाली कुछ ट्रेनें यहां रुकती हैं।

कहां ठहरें :

मेलुकोटे एक छोटा प्राचीन शहर है और अभी तक एक पर्यटन गंतव्य के रूप में भी प्रचलित नहीं है। मेलुकोटे अहोबिला यात्री निवास में ठहरने की व्यवस्था है। मन्दिर के पास यदुगिरी

गेस्ट हाउस और कुछ गेस्ट हाउस भी हैं, जहां ₹500 की शुरुआत से कमरे मिल जाते हैं। अधिकतर बड़े होटल मेलुकोटे से 15 से 20 कि.मी. की दूरी के बीच मैसूर रोड पर हैं और वह मेलुकोटे की एक दिन की यात्रा की व्यवस्था करते हैं।

यहां के कुछ ग्रामीणों ने अपने घरों में लोगों को पेइंग गेस्ट के तौर पर ठहराने की व्यवस्था की है। इन घरों में ठहर कर दक्षिण भारतीय व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं। यहां ठहरने के दो लाभ हैं - एक स्थान के बारे में बेहतर जानने का मौका मिलता है और गांव के रहन-सहन खानपान और आस्थाओं को भी करीब से देखने- समझने का मौका मिलता है।

मेलकोट मन्दिर वन्यजीव अभयारण्य :

वर्ष 1974 में स्थापित, मेलुकोट मन्दिर वन्यजीव अभयारण्य को मुख्य रूप से 'काले हिरण' के संरक्षण के लिए बनाया गया था। इसे पक्षीविज्ञानियों के लिए स्वर्ग के रूप में जाना जाता है, जहां पक्षियों की 200 से अधिक प्रजातियां मिलती हैं। अभयारण्य में सफेद बबूल, बाकला, सफेद चंदन और बेर, साइकस पाम के पेड़, नागफणी आदि की बहुत मात्रा है।

मेलकोट मन्दिर वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य द्वार पर बनाई गई कलाकृतियां यहां आने वाले पर्यटकों का मन मोह लेती हैं।

यह अभयारण्य शहर से लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर है। यहां आने जाने के लिए आमतौर पर सरकारी बसें या टैक्सियां मिल जाती है।

मेलुकोटे में दो रातें बिता कर और यहां की यादें लिए हमने मैसूर के लिए प्रस्थान किया क्योंकि वहीं से हमें दिल्ली वापस आना था।

*** सम्प्रति : 'अतुल्य भारत' के पूर्व प्रबंध सम्पादक।**

दो गजलें * **घनश्याम दास बैरवा**

(1) इन्तिज़ार :

नज़र ना आये सूरत (1) कोई, **मुश्ताक़**(2) जिगर क्या कीजे,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे ।**
भोली सूरत, अफ़सुर्दा (3)दिल, बुझे अरमां(4),क्या कीजे,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे।**
दीवाने है बे-ख़याल(5), **फिरते गली**-गली, कूंचे-कूंचे(6) ,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे ।**
कैसे छूटे राह लगन की आस **की बाती जब भीजे** ,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे ।**
है खबर आने की,आते है वा'दा-**शिकन**(7),पता कीजे,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे ।**
बन आये इश्क़ में जान पर,मौत का शुक्रिया कीजे,
इन्तिज़ार का मज़ा लीजे, **इन्तिज़ार का मज़ा लीजे।**
गुज़र ना जाये घड़ियां, इन्तिज़ार **की** बेमज़ा ,
इस घड़ी में जी लीजे, इस घड़ी में मर लीजे ।।

उर्दू शब्दों के हिन्दी में अर्थ :

[(1)तरीक़ा, (2)**अभिलाषी**,
(3)बुझा हुआ,(4) **दिल की तमन्ना**,
(5) विचारहीन,
(6) बस्ती-बस्ती,
(7)अपनी बात से मुकरने वाला]

---

(2) आदमी :

समझता है हर आदमी ख़ुद को अलग, धड़कनें एक है ।
तकलीफें होती हैं जुदा-जुदा, राहगुजर ए मौत एक है।।
मेरी उमंग, तेरा लहू, **सबकी हसरतों की लगन एक है ।**
तेरे दर्द के हर दरिया में, **मेरे दर्द की तरंग एक है।।**
तक़दीरें होती हैं यहाँ जुदा,**हाथों की लकीरें एक है ।**
मसाइल ए जीस्त(1)है, जुदा, राह-ए-हिकमत(2) एक है ।।
जिंदगी की जद्द ओ जहद(3), **मायूसी की ख़लिश**(4) एक है ।
क़हक़हे(5) की खनक होती है जुदा, आंसूओं का नमक एक है ।।
अज़मत(6) की बुलंदियाँ है जुदा(7), ज़वाल की तड़प एक है।
सूरत ए तक़्सीम(8) है जुदा, इंक़िलाब (9)की राह एक है ।।
जुदा सही सूरतों में हम, **दस्तूर ए सुपुर्द ए ख़ाक ए इंसा एक है।**
आओ, करें इस्तिक़बाल-ए-इंसा(10), इंसां का इंसां से रिस्ता एक है।।

उर्दू शब्दों के हिन्दी में अर्थ :

[(1) जीवन की उलझनें ,
(2) बुद्धिमत्ता, (3) संघर्ष,
(4) चुभन ,(5) तेज हंसी,
(6) प्रतिष्ठा, (7)पतन
(8) बंटवारे की रूपरेख,
(9) क्रांति
(10) स्वागत

---

*सम्प्रति : सहायक निदेशक, भारतपर्यटन, कार्यालय सिंगापुर पर्यटन मंत्रालय ।

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार

पर्यटन उद्योग द्वारा कोविड-19 महामारी से लड़ाई में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए वित्त मंत्रालय द्वारा घोषित योजनाओं का स्वागत ।

01 जुलाई, 2021: केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 28 जून, 2021 को कोविड-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में भारतीय अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए 6,28,993 करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की, जिसमें देश में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, कई अन्य क्षेत्रों को सहायता समेत, पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता की भी घोषणा की गई है।

यात्रा एवं पर्यटन क्षेत्र के हितधारकों और पंजीकृत टूरिस्ट गाइडों के लिए योजना

कोविड प्रभावित क्षेत्रों हेतु नई ऋण गारंटी योजना के तहत, पर्यटन क्षेत्र में लोगों को कार्यशील पूंजी / निजी ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा ताकि वह कोविड-19 महामारी की वजह से उत्पन्न अपनी देनदारियों से मुक्त हो सकें और दोबारा से अपना काम शुरू कर सकें। इस योजना में राज्य सरकार और पर्यटन मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय स्तर के 10,700 पर्यटक गाइडों और पर्यटन मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त यात्रा और पर्यटन हितधारकों (टीटीएस) को शामिल किया जाएगा। टीटीएस 10 लाख रुपये तक का ऋण लेने के पात्र होंगे जबकि पर्यटक गाइड एक लाख रुपये प्रत्येक तक का ऋण ले पाएंगे। इसके लिए किसी प्रकार का प्रोसेसिंग शुल्क, पूर्व भुगतान शुल्क/ प्रतिबंधात्मक छूट नहीं होगी और अतिरिक्त समर्थक ऋणाधार की आवश्यकता भी नहीं होगी। पर्यटन मंत्रालय एनसीजीटीसी के माध्यम से इस योजना का संचालन करेगा।

पांच लाख पर्यटकों को निःशुल्क पर्यटक वीजा :

घोषणा के अनुसार, जब वीजा जारी करने शुरू हो जाएंगे, तब पहले पांच लाख पर्यटकों को बिना किसी शुल्क के वीजा जारी किया जाएगा। निःशुल्क वीजा का यह लाभ पहले पांच लाख पर्यटक वीजा (निःशुल्क वीजा) जारी करने के दौरान प्रति पर्यटक केवल एक बार ही मिलेगा। यह योजना 31 मार्च, 2022 तक अथवा पांच लाख वीजा जारी होने, जो भी पहले हो, तक लागू रहेगी।

वित्त मंत्रालय ने 16.06.2021 को भारत से सेवा निर्यात योजना (एसईआईएस) स्क्रिप्स (मुद्रा विनिमय की बराबरी पत्र) जारी करने की भी सहमति दी है। इससे पहले, पर्यटन उद्योग के कई हितधारकों ने सरकार से 2019-20 के लिए एसईआईएस स्क्रिप्स जारी करने की अपील की थी और विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने 2019-20 के दौरान किए गए निर्यात के लिए एसईआईएस हेतु आवंटन के लिए विस्तृत प्रस्ताव रखा था। सभी परिस्थितियों को ध्यान में

रखते हुए, वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) ने 2061 करोड़ रुपये के वित्तीय आवंटन के साथ 2019-20 के लिए एसईआईएस को जारी रखने के वाणिज्य विभाग के प्रस्ताव को इस शर्त के साथ सहमति दी कि यह राशि नए 'माइनर हैड' की उपलब्धता की प्रक्रिया का पालन करते हुए बजट व्यय के माध्यम से प्रदान की जाएगी।

उपर्युक्त फैसलों से इस उद्योग के हितधारकों को आवश्यक नकदी (चलनिधि) प्राप्त करने और निकट भविष्य में प्रचालन के लिए तैयार होने में काफी सहायता मिलने की उम्मीद है। इसी प्रकार, कोविड-19 महामारी की वजह से इस क्षेत्र में आई मंदी से प्रभावित सरकार द्वारा अनुमोदित पर्यटक गाइडों को भी इन फैसलों से राहत मिलने की आशा की जा रही है।

सरकार द्वारा घोषित इन कदमों का पर्यटन उद्योग ने स्वागत किया है। आईएटीओ के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आईसीपीबी के उपाध्यक्ष और क्रिएटिव ट्रैवल के संयुक्त प्रबंध निदेशक राजीव कोहली ने कहा, 'पर्यटन केंद्रित घोषणाओं का स्वागत है। यह सही दिशा में उठाया गया एक कदम है। तथापि, हम अनुरोध करते हैं कि इसमें 10 लाख रुपये की राशि बढ़ाई जाए। इस उद्योग को कोरोना महामारी से काफी गहरी क्षति पहुंची है और हमें ना सिर्फ बचे रहने के लिए सहायता की जरूरत है बल्कि अपने काम में सुधार के लिए भी सहायता की जरूरत है। वीजा की बात करें तो यह बहुत अच्छा कदम है लेकिन हम दुनिया को अतिथि देवो भव के सही मायने बताएं और वीजा को दिसंबर 2022 तक के लिए निःशुल्क कर दें। निश्चित रूप से आज की घोषणाएं सकारात्मक शुरुआत हैं लेकिन हमें उबरने में मदद के लिए जल्दी से अधिक सहायता की आवश्यकता है।'

देश में यात्रा संचालकों के शीर्ष संघ 'इंडियन असोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स' (आईएटीओ) के अध्यक्ष राजीव मेहता ने कहा, 'हम 31 मार्च, 2022 तक लागू पांच लाख 'फ्री वीजा' समेत पर्यटन उद्योग को दी गई कुछ राहतों के लिए माननीय प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री के आभारी हैं और पर्यटन उद्योग में पंजीकृत पर्यटक गाइडों और टूर ऑपरेटर्स समेत इस उद्योग को सहायता देते हुए प्रभावित क्षेत्रों को राहत देने के लिए पर्यटन मंत्री जी के भी आभारी हैं। यात्रा संचालकों और गाइडों को ऋण देने पर विचार करने के लिए आईएटीओ सरकार का धन्यवाद करता है लेकिन साथ ही अनुरोध भी करता है कि सरकार सभी मान्यता प्राप्त यात्रा संचालकों को एकमुश्त वित्तीय अनुदान देने पर विचार करे।'

इन घोषणाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए, पर्यटक गाइड्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष अशोक शारदा ने कहा, 'क्षेत्रीय गाइडों को कुछ वित्तीय सहायता देने और पहले पांच लाख पर्यटकों को वीजा शुल्क में छूट देने का पर्यटन मंत्रालय का फैसला स्वागत योग्य कदम है। पिछले 15 महीनों से बेरोजगार क्षेत्रीय गाइड मंत्रालय से कुछ राहत की उम्मीद कर रहे थे। हो सकता है कि यह बहुत अधिक नहीं हो, लेकिन यह जानकर अच्छा लगा कि हम लोग अभी तक अनाथ नहीं हैं।'

सरकार के इस कदम पर संतोष प्रकट करते हुए एसोसिएशन ऑफ डोमेस्टिक टूर ऑपरेटर्स ऑफ इंडिया की कार्यकारी समिति की सदस्य और अध्यक्ष, महिला सशक्तिकरण, सीएसआर गतिविधि और एलईओ प्रणेता, सुश्री एकता वत्स ने कहा, 'पर्यटन पुनरुद्धार की योजना के तहत पर्यटन क्षेत्र के लिए वित्तीय सहायता की घोषणा, वित्त मंत्रालय की ओर से बहुत सकारात्मक कदम है। निश्चित तौर पर इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए और यह सरकार की ओर से उठाया गया ऐसा कदम है जिसकी प्रतीक्षा लंबे समय से की जा रही थी। इससे निश्चित रूप से पर्यटन यात्रा उद्योग का पुनरुद्धार होगा।'

भारत में आतिथ्य और पर्यटन उद्योग को मजबूत बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा यात्रा डॉट कॉम के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

5 जुलाई, 2021: पर्यटन मंत्रालय ने भारत के आतिथ्य और पर्यटन उद्योग को मजबूत बनाने के लिए 2 जुलाई 2021 को यात्रा डॉट कॉम के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। भारतीय आतिथ्य और पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने वाले उपायों को लागू करने के लिए इसका आयोजन भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) और पर्यटन मंत्रालय के बीच व्यवस्था के तहत किया गया था।

इस समझौता ज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य उन आवासीय इकाइयों को स्पष्ट कवरेज प्रदान करने के लिए है,जिन्होंने ओटीए प्लेटफॉर्म 'साथी' (आतिथ्य उद्योग के लिए आकलन, जागरूकता और प्रशिक्षण के लिए प्रणाली) पर स्वयं को प्रमाणित किया है। यह समझौता ज्ञापन दोनों पक्षों को इकाइयों को 'निधि' और 'साथी' पर पंजीकृत करवाने और कोविड-19 को फैलने से रोकने के लिए उचित सुरक्षा उपायों के साथ स्थानीय पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने को भी रेखांकित करता है। इसका उद्देश्य उचित उपाय करने के लिए सटीक जानकारी प्रदान करना, साक्ष्य आधारित व लक्ष्य आधारित नीतिगत उपाय तैयार करना तथा सुरक्षित, सम्मानजनक और सतत पर्यटन को बढ़ावा देना भी है।

समझौता ज्ञापन के जरिए, चिन्हित क्षेत्रों में समग्र लाभ के लिए पर्यटन मंत्रालय और यात्रा डॉट कॉम मिलकर, भारतीय आतिथ्य और पर्यटन उद्योग में तकनीकी तथा रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कदम उठाने का प्रयास करेंगे। ऐसी भी आशा की जाती है कि भारत के आतिथ्य और पर्यटन उद्योग को सुदृढ करने के लिए भविष्य में और संगठन भी इस प्रकार के ओटीए समझौता ज्ञापन के लिए आगे आएंगे।

पर्यटन मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री राकेश कुमार वर्मा, उप महानिदेशक (होटल एवं रेस्तरां) श्री संजय सिंह, भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) के वरिष्ठ निदेशक डॉ. ए. राज, यात्रा डॉट कॉम के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट श्री आदित्य गुप्ता और उनके महाप्रबंधक श्री अक्षय मेहता की मौजूदगी में इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

श्री जी. किशन रेड्डी द्वारा केंद्रीय पर्यटन मंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण

8 जुलाई, 2021: केंद्रीय मंत्री श्री जी किशन रेड्डी ने आज नई दिल्ली स्थित शास्त्री भवन में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इसके साथ ही श्री श्रीपद येसो नाइक और श्री अजय भट्ट ने भी पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री किशन रेड्डी को पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री के साथ-साथ उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विकास का प्रभार भी सौंपा गया है। इससे पहले वह गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री का प्रभार संभाल रहे थे।

मीडिया से बात करते हुए श्री रेड्डी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय हमारे देश की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने और साथ ही पर्यटन क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के प्रधानमंत्री के 'नए भारत' के दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए काम करेगा।

श्री जी. किशन रेड्डी, जिन्हें लोग सम्मानपूर्वक 'किशनन्ना' भी कहते हैं, 2019 में सिकंदराबाद निर्वाचन क्षेत्र, तेलंगाना से 17 वीं लोकसभा के लिए संसद सदस्य चुने गए थे। श्री रेड्डी ने बाल-हृदय रोगियों के कल्याण हेतु उपचार जैसी कई अनूठी पहलें चलाई हैं, जो एक आंदोलन बन गई और उन्हें संयुक्त राष्ट्र के यूनिसेफ द्वारा आंध्र प्रदेश विधानसभा में सर्वश्रेष्ठ बाल-मित्र विधायक का पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ भी एक अभियान शुरू किया और उसमें लागों को संगठित किया। नई दिल्ली में आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें 54 से अधिक देशों के 193 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उन्होंने "सीमा सुरक्षा जागरण यात्रा और 'तेलंगाना पोरु यात्रा' भी आयोजित की हैं।

श्री अजय भट्ट पेशे से अधिवक्ता हैं और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य रह चुके हैं। वह उत्तराखंड से हैं और नैनीताल- उधमसिंह नगर निर्वाचन क्षेत्र से 17वीं लोकसभा के लिए चुने गए हैं। उन्होंने व्यापक रूप से यात्राएं की है और सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी गहरी रुचि है।

श्री श्रीपद येसो नाइक, पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने से पहले आयुष मंत्रालय में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) थे। वह गोवा से लोकसभा के लिए पांचवीं बार निर्वाचित हुए हैं। इससे पहले, उन्होंने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार) सहित विभिन्न मंत्रालयों में राज्य मंत्री के रूप में भी काम किया है। वह रक्षा मंत्रालय और अन्य विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य भी रहे हैं।

मंत्री जी द्वारा ब्रिक्स पर्यटन मंत्रियों की बैठक की अध्यक्षता

12 जुलाई, 2021: पर्यटन मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने आज ब्रिक्स पर्यटन मंत्रियों की बैठक की अध्यक्षता की। इस बार ब्रिक्स समूह की अध्यक्षता के करने हेतु भारत को नामित किया गया था। ब्रिक्स यानी ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका सभी सदस्य देशों के मंत्रियों ने इस बैठक में भाग लिया।

भारत ने ब्रिक्स देशों के बीच पर्यटन सहयोग को बढ़ावा देने के प्रभावी तरीके विकसित करने के लिए ब्रिक्स पर्यटन मंत्रियों की बैठक का आयोजन किया था। बैठक में अंतर ब्रिक्स पर्यटन सहयोग की समीक्षा की गई। बैठक का एक अहम पक्ष 'मिनिस्टर कम्यूनिक' को अपनाना था जो ब्रिक्स देशों के बीच सहयोग और पर्यटन को बढ़ावा देने पर परिणामी दस्तावेज है। 'मिनिस्टर कम्यूनिक' में यह स्वीकार किया गया कि कोविड-19 महामारी ने जन स्वास्थ्य को गंभीर रूप से खतरे में डाल दिया है और सतत विकास के लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिए भारी चुनौतियां पेश की हैं।

मंत्री जी ने ब्रिक्स सदस्य देशों के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि वह एक-दूसरे के पर्यटन उत्पादों और प्रस्तावों को अच्छी तरह समझें ताकि ब्रिक्स सदस्य देशों के बीच पर्यटकों की संख्या में और वृद्धि की जा सके। उन्होंने कहा कि पर्यटन में विरासत, संस्कृति, प्राकृतिक, वन्य-जीवन, पर्यावरण जैसे पर्यटन उत्पाद शामिल हैं जो ब्रिक्स देशों में परस्पर अधिक सहयोग और सूचनाओं के आदान-प्रदान का अवसर प्रस्तुत करते हैं।

इसके अलावा, यह माना गया कि भविष्य में पर्यटन का संवर्धन करने में, हरित पर्यटन ब्रिक्स देशों में पर्यटन उद्योग में स्थायी रूप से तेजी ला सकता है। ब्रिक्स गठबंधन के कुछ प्रमुख घटकों में, पर्यटन क्षेत्र की नीतियों, संरक्षण प्रयासों, सतत विकास लक्ष्यों में स्थिरता को मुख्यधारा में लाना, ऊर्जा को नवीनीकरणीय स्रोत में परिवर्तित करना, हरित पर्यटन के लिए संरक्षण आदि के प्रयास शामिल हैं, जो प्रकृति आधारित समाधानों में निवेश को प्रोत्साहित और नाजुक पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण में सहायता कर सकते हैं।

ब्रिक्स पर्यटन मंत्रियों की बैठक में जिम्मेदार और दीर्घकालिक पर्यटन के संवर्धन, पर्यटन की अवसंरचना में निवेश, पर्यटन उद्यमों के बीच घनिष्ठ संपर्क और मानव संसाधन विकास के क्षेत्रों में पर्यटन में सहयोग को मजबूत करने के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। मंत्रियों ने पर्यटन क्षेत्र में सहयोग के माध्यम से ब्रिक्स देशों की पूरी क्षमता को साकार करने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया।

प्रधानमंत्री जी द्वारा उत्तर प्रदेश के वाराणसी में प्रशाद परियोजनाओं का उद्घाटन और राष्ट्र को लोकार्पण

15 जुलाई, 2021: माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन कर, उन्हें राष्ट्र को लोकार्पित किया जिसमें 'प्रशाद योजना के तहत वाराणसी का विकास-चरण-II' के तहत पर्यटक सुविधा केंद्र और 'प्रशाद योजना के तहत वाराणसी में रिवर क्रूज का विकास' में अस्सी घाट से राजघाट तक क्रूज बोट का संचालन शामिल है। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ सहित, अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत संवर्धन अभियान (प्रशाद) एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जिसे पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014-15 में शुरू किया गया था। यह पूरी तरह भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित है और यह मुख्यत: तीर्थयात्रा और विरासत स्थलों के एकीकृत विकास से जुड़ी है। इस योजना का उद्देश्य बुनियादी अवसंरचना का विकास जैसे प्रवेश स्थल तक सड़क, रेल और जल परिवहन, अंतिम छोर तक पहुंच सुविधा (कनेक्टिविटी), पर्यटन की बुनियादी सुविधाएं जैसे सूचना केंद्र, एटीएम / मनी एक्सचेंज, पर्यावरण अनुकूल परिवहन के साधन, क्षेत्र में प्रकाश व्यवस्था और नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों से रोशनी, पार्किंग, पीने का पानी, शौचालय,

अमानती सामान घर, प्रतीक्षालय, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, शिल्प बाजार/ स्मारिका दुकानें/ कैफेटेरिया, वर्षा आश्रय, दूरसंचार सुविधाएं, इंटरनेट कनेक्टिविटी आदि उपलबध कराना है। 'प्रशाद' योजना के तहत वाराणसी का विकास-चरण ॥' को पर्यटन मंत्रालय ने फरवरी 2018 में 44.69 करोड़ रुपये लागत पर स्वीकृत किया था। इसके तहत 'पंचकोसी पथ', 'तीर्थयात्रा सुविधा केंद्र', 'रामेश्वर', 'सड़क विकास' और 'संकेतक बोर्ड' को सफलतापूर्वक पूरा कर राष्ट्र को समर्पित किया गया है। 'प्रशाद योजना के तहत वाराणसी में रिवर क्रूज का विकास' परियोजना को पर्यटन मंत्रालय ने 10.72 करोड़ रुपये के व्यय के साथ फरवरी 2018 में स्वीकृति प्रदान की थी। इसके तहत 'यात्री सह क्रूज व्हीकल', 'मॉड्यूलर जेट्टी, 'ऑडियो विजुअल इंटरवेंशन' और 'सीसीटीवी सर्विलांस' को भी सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद राष्ट्र को समर्पित किया गया है। प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय मानकों की सुविधाएं सृजित करने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी धनराशि का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए राज्य सरकार की प्रशंसा की।

वेबिनार : "अरुणाचल प्रदेश में बेली ट्रेल और गोरीचेन ट्रेक"

02 अगस्त 2021 : पर्यटन मंत्रालय की 'देखो अपना देश' श्रृंखला के तहत "अरुणाचल प्रदेश में बेली ट्रेल एंड गोरीचेन ट्रेक" शीर्षक से 31 जुलाई,2021 को 93वां वेबिनार आयोजित किया गया था। भारत एशिया के बाकी हिस्सों से अलग है, जिसमें पहाड़ और समुद्र शामिल हैं, जो देश को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई प्रदान करता है। उत्तर में गौरवशाली हिमालय से घिरा, यह दक्षिण की ओर फैला है और कर्क रेखा, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर के बीच हिंद महासागर में तक जाती है। यह देश अपने परिदृश्य, विरासत, कला और शिल्प, व्यंजनों के साथ, यात्रा के प्रति उत्साही लोगों के लिए पर्यटन के विभिन्न विकल्प प्रदान करता है।

इस वेबिनार में अरुणाचल प्रदेश के दो शानदार ट्रेक बेली ट्रेल और गोरीचेन ट्रेक पर चर्चा की गई। देखो अपना देश वेबिनार शृंखला एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत भारत की समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करने का एक प्रयास है। हिमालयी राज्य अरुणाचल प्रदेश में बेली ट्रेल एक ब्रिटिश अधिकारी, लेफ्टिनेंट कर्नल एफ.एम. बेली, द्वारा अपनाए गए ऐतिहासिक मार्ग पर आगे बढ़ता है। लेफ्टिनेंट कर्नल बेली ने जांग, मागो, लुर्टेम, पोटोक, चांगला, थुंगरी और चंदर के रास्ते त्वांग से बोमडिला तक ट्रेकिंग करते हुए इस क्षेत्र का पता लगाया था।

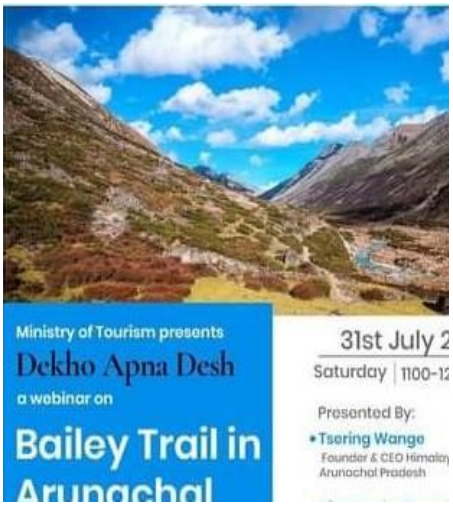

बेली ट्रेल में तराई के चरागाहों और शांत गांवों से लेकर प्रबल हिमनदों और आश्चर्यजनक पहाड़ी दृश्यों तक कई प्रकार के इलाके शामिल हैं। रास्ते में, मागो में गर्म पानी के झरने, जंगू में गरजते झरने और बर्फीली नदियां को देखते हुए, लगभग समुद्र तल से 16000 फीट ऊंचे पर्वतीय दर्रों को पार करते हैं।

वेबिनार के दौरान एक और खूबसूरत ट्रेक, अनिनी, दिबांग घाटी के 'सेवन लेक' ट्रेक पर चर्चा की गई। सेवन लेक्स ट्रेक अरुणाचल प्रदेश के सबसे सुन्दर रहस्यों में से एक है। दिबांग घाटी भारत में सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला अरुणाचल प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। यहां पर हरे भरे पहाड़ों, भारी वर्षा की नदियों, जगमगाते झरनों का अनुभव किया जा सकता है। समुद्र तल से लगभग 6456 फीट की ऊंचाई पर स्थित, अनिनी दिबांग घाटी का मुख्यालय है। बर्फ से ढके पहाड़ में कई झीलें मौजूद हैं।

गोरीचेन पर्वत समूह में समुद्र तल से 21,410 फीट की ऊंचाई पर मुख्य गोरीचेन के साथ पांच अन्य चोटियां शामिल हैं, जिन्हें 'व्हाइट जाइंट' के रूप में भी जाना जाता है। स्थानीय भाषा में शिखर को 'सा-नगा-फू' के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है 'संरक्षक देवता का स्थान'। गोरीचेन बेस कैंप का मार्ग तवांग से जांग, मागो, जिथांग होते हुए गोरीचेन बेस कैंप तक पहुंचा जा सकता है।

अरुणाचल प्रदेश भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के शानदार राज्यों में से एक है और इसमें कई ट्रेक मार्ग हैं जो एक साधारण गांव के ट्रेक से लेकर 'द बेली ट्रेल जैसे अधिक ऊंचाई वाले ट्रेक तक जाते हैं। कई ट्रेक मार्गों के अलावा, अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर की यात्रा की जा सकती है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, बौद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। ईटानगर को भोर की रोशनी वाले पहाड़ों की भूमि के रूप में भी जाना जाता है, जो अपनी अनूठी संस्कृति के साथ मैत्रीपूर्ण स्थानीय लोगों से मिलने पर एक आदर्श अनुभव प्रदान करता है। अरुणाचल प्रदेश की संस्कृति वास्तव में इस मायने में भिन्न है कि राज्य में उप-जनजातियों सहित 26 प्रमुख जनजातियां हैं और प्रत्येक जनजाति की परंपराओं और रीति-रिवाजों का अपना अनूठा अंदाज़ है। वेबिनार को श्री त्सेरिंग वांगे, संस्थापक और सीईओ, हिमालयन हॉलिडे, अरुणाचल प्रदेश और श्री हिमांग्शु, पूर्वोत्तर पर्यटन आधारित एक उद्यमी और शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

पर्यटन रोज़गार के सर्वाधिक अवसरों के सृजन की संभावनाओं वाला क्षेत्र

06 अगस्त 2021: पर्यटन संस्कृति, और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने 'ई-कॉन्क्लेव : रिज़िलीअन्स एंड द रोड टू रिकवरी' को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यटन रोज़गार के सर्वाधिक अवसरों के सृजन की संभावनाओं वाले क्षेत्रों में से एक है। पर्यटन हमेशा से देश में आर्थिक विकास का एक सशक्त कारक रहा है। वर्ष 2019 में इस उद्योग ने भारतीय

अर्थव्यवस्था में 194 बिलियन डॉलर का योगदान दिया और लगभग 40 मिलियन रोजगारों का सृजन किया, जो कुल रोज़गार का आठ प्रतिशत है।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मात्र आकर्षक स्थलों और विश्राम की गतिविधियों तक सीमित नहीं है, अपितु वह आर्थिक विकास के मूलभूत स्तम्भों में से एक बनकर उभरा है। उन्होंने उल्लेख किया कि पर्यटन क्षेत्र 10 लाख के निवेश पर 78 नौकरियां प्रदान कर सकता है, जबकि इसकी तुलना में विनिर्माण क्षेत्र 45 नौकरियों का ही सृजन कर सकता है। उन्होंने कहा कि पर्यटन उद्योग राष्ट्र पर प्रभाव के संबंध में अपने आप में विलक्षण है क्योंकि यह न केवल बड़े पैमाने पर विकास के संसाधक के रूप में ही कार्य नहीं करता, बल्कि देश की विनम्र शक्ति (सॉफ्ट पॉवर) को भी संवर्धित करता है।

मंत्री जी ने आगे कहा कि कोविड-19 महामारी के प्रहार ने पर्यटन उद्योग के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। इसलिए यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में नवाचार और पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है। मंत्री जी ने सभी भारतीयों से घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने का आह्वान करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा, "प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 73वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में सभी भारतीयों से वर्ष 2022 तक भारत के भीतर 15 स्थलों का दौरा करने का अनुरोध किया, जिससे हमारे देश के भीतर पर्यटन क्षेत्र का विकास होगा।"

मंत्रालय ने पर्यटन को बढ़ावा देने तथा निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए व्यापक उपाय किए हैं और मंत्रालय इस क्षेत्र में नई जान डालने तथा इसके सामने आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए विशेषज्ञों और हितधारकों के साथ लगातार संपर्क बनाए हुए है। मंत्री जी ने लॉकडाउन के दौरान पर्यटन मंत्रालय की "देखो अपना देश" पहल के तहत किए गए प्रयासों की सराहना की, जिसने पर्यटन का उत्साह बरकरार रखा है।

कोविड-19 टीके की 50 करोड़ खुराक ने बढ़ाया पर्यटन क्षेत्र का विश्वास।

09 अगस्त 2021: पर्यटन, संस्कृति और उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि कोविड-19 टीकाकरण के 50 करोड़ खुराक के मुकाम को पार करने से पर्यटन क्षेत्र के विश्वास में वृद्धि होगी।

मंत्री जी ने ट्विटर पर लिखा, "50 करोड़ कोविड टीके देने के साथ, हमने दुनिया के सामने यह साबित कर दिया है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र की निगरानी में, भारत अपने लोगों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के अथक परिश्रम और ठोस प्रयासों की मदद से महामारी से उबर रहा है ।

मंत्री जी ने कहा है कि टीकाकरण, पर्यटन के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम न केवल पर्यटन उद्योग को पटरी पर वापस लाने में मदद करेगा, बल्कि विदेशी पर्यटकों के मन विश्वास बढ़ाएगा और इस तरह से घरेलू पर्यटन में सुधार में सहायता देगा। उन्होंने सभी नागरिकों और पर्यटन हितधारकों से सहयोग करने और टीकाकरण के लिए आगे आने का आग्रह किया ताकि उन्हें कोरोना विषाणु से बचाया जा सके। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सभी लोगों को स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी किए गए प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए, जिसमें सामाजिक दूरी के नियम, मास्क पहनना और उचित दूरी रखना भी शामिल है।

मंत्री जी ने टीकाकरण की तेज गति के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में उठाए गए कई अग्रणी और सक्रिय कदमों को भी श्रेय दिया। उन्होंने आगे कहा कि आज हम जो परिणाम देख रहे हैं, वह मुख्य रूप से प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारी सरकार द्वारा किए गए अथक प्रयासों के कारण हासिल हुए हैं। सरकार ने टीके के विकास के लिए एक इनक्यूबेटर के रूप में काम किया और इसलिए हम दुनिया के किसी भी देश की तुलना में प्रतिदिन अधिक लोगों को टीका लगाने में सक्षम हुए।

मंत्री जी ने अग्रिम पंक्ति के कार्मिकों और अन्य चिकित्सा कर्मियों द्वारा किए गए कार्यों की भी सराहना की। उन्होंने कहा,"मैं सभी फ्रंट-लाइन स्वास्थ्य कर्मियों को सलाम करना चाहता हूं जिनमें डॉक्टर, नर्स, नगरपालिका कर्मी, आशा कार्यकर्ता और सरकारी कर्मचारी शामिल हैं। टीकाकरण कार्यक्रम शुरू होने से पहले ही उन्होंने कोविड-19 के खिलाफ 'सुरक्षा कवच' का काम किया है।"

भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) के पर्यटन मंत्रियों की बैठक

13 अगस्त 2021: भारत ने वीडियो काफ्रेंस के जरिए भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका (आईबीएसए) के पर्यटन मंत्रियों की बैठक का आयोजन किया। भारत की ओर से पर्यटन मंत्री श्री

जी.किशन रेड्डी, ब्राजील के पर्यटन मंत्री श्री गिलसन मचाडो नेटो और दक्षिण अफ्रीका के पर्यटन उप मंत्री श्री फिश अमोस महललेला ने 12 अगस्त 2021 को भारत की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए बैठक में उपस्थित थे ।

भारत द्वारा सदस्य देशों के बीच पर्यटन सहयोग को बढ़ावा देने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित की गयी, पर्यटन मंत्रियों की इस बैठक में आईबीएसए देशों के बीच पर्यटन सहयोग की समीक्षा की।

इस दौरान, पर्यटन मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने भारत सरकार के आक्रमणशील टीकाकरण कार्यक्रम पर प्रकाश डाला, जिसके तहत देश के लोगों को टीके की 50 करोड़ से अधिक खुराक दे दी गयी है। इसके साथ ही भारत टीकाकरण के लिहाज से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। तीनों देशों के मंत्रियों ने पर्यटन अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा भरने के लिहाज से घरेलू पर्यटन के महत्व पर जोर दिया क्योंकि यह घरेलू पर्यटन उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आगमन के लिए तैयार कर सकता है।

आईबीएसए पर्यटन मंत्रियों की बैठक ने पर्यटन क्षेत्र पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव को दूर करने के लिए पर्यटन में सहयोग को मजबूत करने के महत्व को स्वीकार किया। मंत्रियों ने पर्यटन क्षेत्र में सहयोग के माध्यम से आईबीएसए देशों की पूरी क्षमता को हासिल करने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया।

बैठक का महत्वपूर्ण पहलू आईबीएसए पर्यटन मंत्रियों का संयुक्त वक्तव्य को अपनाना था, जो यात्रा और पर्यटन क्षेत्र की स्थिति में तेज सुधार करने की दिशा में सहयोग और प्रोत्साहन पर परिणाम संबंधी एक दस्तावेज है। आईबीएसए दक्षिण-दक्षिण सहयोग और आदान-प्रदान को

बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार, ब्राजील संघीय गणराज्य की सरकार और दक्षिण अफ्रीकी सरकार के बीच एक त्रिपक्षीय, विकास संबंधी पहल है।

वेबिनार : **'एआईयू' के सहयोग से आजादी का अमृत महोत्सव- 'भारत@75'**

14 अगस्त 2021 : भारत के 75**वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर पर्यटन मंत्रालय ने** भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) **के सहयोग से एक वेबिनार का आयोजन किया। माननीय पर्यटन मंत्री श्री जी किशन रेड्डी ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। माननीय शिक्षा एवं** कौशल विकास **तथा उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर माननीय पर्यटन राज्य मंत्री श्री श्रीपद येसो नाइक तथा श्री अजय भट्ट,** एआईयू के अध्यक्ष, कर्नल डॉ. जी. **तिरुवासगम और,** सचिव (पर्यटन) श्री अरविंद सिंह भी **उपस्थित थे।**

प्रतिभागियों को भारत की वर्चुअल यात्रा पर ले जाने वाले सत्रों की एक वर्ष लंबी 12 एपिसोड आधारित **श्रृंखला के उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए,** माननीय पर्यटन मंत्री जी ने कहा, "हम आशा करते हैं **कि छात्र अगले एक वर्ष में अपनी पसंद के कोई भी** कार्य करने के लिए कम से कम 75 घंटे का समय **निकालेंगे। मेरा सुझाव है कि इसके लिए छात्र इन** 75 **घंटों को अपनी पसंद की किसी भी अन्य गतिविधियों** में समर्पित कर सकते है, **जिसमें छात्र अपने पैतृक गांवों के स्वच्छ भारत अभियान या गांव के सरपंच, महापौर या स्थानीय प्रतिनिधि के साथ राष्ट्रीय ध्वज** फहराने के अभियान, **हरित आवरण को बढ़ाने के लिए** पेड़ लगाने, अनाथालय में पढ़ाने, **वृद्धाश्रम में स्वयंसेवा करने या डिजिटलीकरण और गरीबों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने में मदद करने जैसे कार्यकलापों में** शामिल हो सकते हैं।"

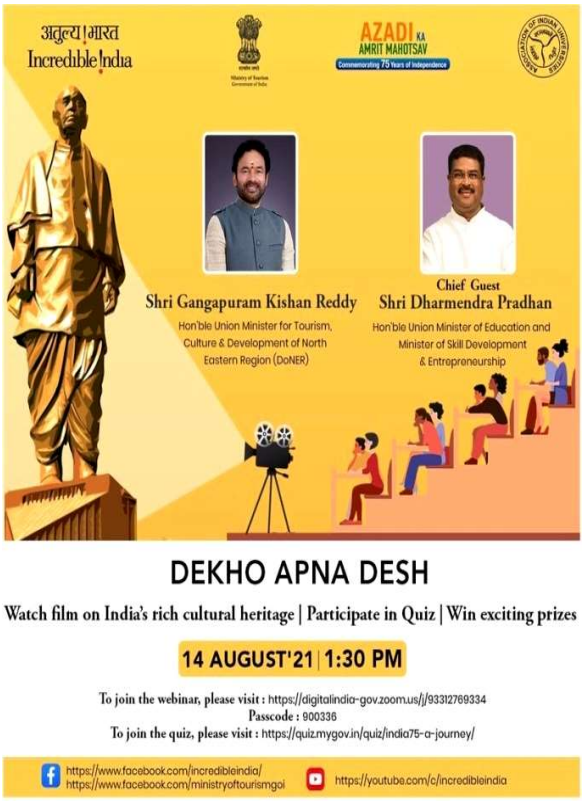

मंत्री महोदय ने कहा, "**आजादी का अमृत महोत्सव न केवल भारत की आजादी के** 75वें वर्ष का उत्सव है, **बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए भी एक बेहतर भविष्य का रास्ता बनाएगा और उनकी** भागीदारी के साथ, **भारत विकास और प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा। वास्तव में,** हमारे युवाओं की **'आजादी का अमृत महोत्सव'** में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। **प्रधानमंत्री जी ने सही कहा है कि महोत्सव केवल आजादी के पिछले** 75 वर्षों के बारे में नहीं है, **बल्कि अगले** 25 वर्षों के लिए **एक साझा दृष्टिकोण विकसित करने की परिकल्पना है। हमें यह सुनिश्चित करने की**

आवश्यकता है कि 2047 की राह प्रगति और समृद्धि वाला हो और इसे हासिल करने के लिए, मैं युवाओं से विश्व गुरु के रूप में भारत@100 के पथप्रदर्शक और शिल्पकार बनने का आग्रह करता हूं।"

शिक्षा और कौशल विकास तथा उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष का उल्लेख किया। उन्होंने देश के युवाओं और छात्रों की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम शुरू करने के एक अभिनव विचार के लिए पर्यटन मंत्रालय और भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ को धन्यवाद दिया। श्री प्रधान ने हमारे महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह, खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आजाद के बलिदानों के बारे में बताया और कहा कि कैसे युवा हमारे देश के विकास और प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा थे। पर्यटन मंत्रालय द्वारा एआईयू के सहयोग से आज शुरू किए गए कार्यक्रम की प्रासंगिकता जिसमें न केवल विश्वविद्यालय के छात्र, बल्कि स्कूली छात्र भी इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। यह हमारी समृद्ध संस्कृति और विरासत का संरक्षण कर रहा है और साथ ही प्रगति और विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपने युवाओं को अपने गौरवशाली अतीत के बारे में शिक्षित करें और साथ ही उन्हें वैश्विक नेतृत्व करने के लिए तैयार करें।

पर्यटन राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण और इसके महत्व के बारे में बताया।

पर्यटन राज्य मंत्री श्री श्रीपद येसो नाइक ने "देखो अपना देश" श्रृंखला के माध्यम से देश के छात्रों और युवाओं तक पहुंचने के लिए पर्यटन मंत्रालय की पहल का उल्लेख किया। श्री नाइक ने

आगे कहा कि 12 एपिसोड की यह श्रृंखला भारत की संस्कृति और विरासत से लोगों को रूबरू कराएगी और भारत की उपलब्धियों के बारे में बताएगी।
श्री अरविंद सिंह, सचिव (पर्यटन) ने गुजरात के साबरमती आश्रम से मार्च 2021 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत की स्वतंत्रता के 75 सप्ताह तक चलने वाले स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव के बारे में बताया। श्री सिंह ने आगे कहा कि यह जरूरी है कि हमारे बच्चे और युवा भारत के गौरवशाली अतीत और एक भव्य भविष्य के समृद्ध चित्रपट से परिचित हों।

उद्घाटन कार्यक्रम में 20 मिनट की फिल्म 'इंडिया@75-ए जर्नी' का सीधा प्रसारण किया गया। फिल्म को सांस्कृतिक संवाद द्वारा लिखा, निर्देशित और संपादित किया गया। यह फिल्म भारत के युवाओं को भारत की समृद्ध संस्कृति, विशाल विरासत, अनंत ज्ञान और उसकी अदम्य भावना के बहुरंगी ताने-बाने की सराहना करने में मदद करने का एक प्रयास है ताकि वे इस प्राचीन भूमि के गौरवशाली आकार दे सकें।
सुश्री रूपिंदर बरार, अपर महानिदेशक (पर्यटन), ने गणमान्य व्यक्तियों और उपस्थित लोगों का स्वागत किया। वेबिनार की शुरुआत राष्ट्रगान से हुई। कर्नल डॉ. जी. थिरुवासगम, अध्यक्ष, भारतीय विश्वविद्यालय संघ ने अपने अभिभाषण में आज के युग में ज्ञान के महत्व पर जोर दिया।
समापन भाषण में सुश्री (डॉ.) पंकज मित्तल, महासचिव, एआईयू ने कार्यक्रम में स्कूली छात्रों, विश्वविद्यालय के छात्रों, युवाओं की भागीदारी और छात्रों के समग्र विकास के बारे में बताते हुए सभी का धन्यवाद किया।
वेबिनार के समापन से पहले सुश्री बरार ने फिर से उस वेबसाइट https://rashtragaan.in/ के बारे में याद दिलाया जहां कोई भी अपनी आवाज में राष्ट्रगान रिकॉर्ड कर सकता है और उस पर अपलोड कर सकता है। लाइव वेबिनार में 7,633 लोगों ने भाग लिया और पर्यटन मंत्रालय के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से लगभग 16,800 लोगों ने वेबिनार में भाग लिया। Mygov वेबसाइट पर प्रदर्शित ऑनलाइन क्विज में शाम 6 बजे तक 10,650 लोगों ने भाग लिया।

लेह में तीन दिवसीय विशाल पर्यटन कार्यक्रम "लद्दाख : नई शुरुआत, नए लक्ष्य"

26 अगस्त 2021: संघ शासित प्रदेश लद्दाख के उप राज्यपाल श्री राधा कृष्ण माथुर और पर्यटन, संस्कृति एवं उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने आज लेह में विशाल पर्यटन कार्यक्रम "लद्दाख : नई शुरुआत, नए लक्ष्य" को संबोधित किया। पर्यटन मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी आभासी माध्यम से कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान "लद्दाख के लिए एक पर्यटन विजन" दस्तावेज का विमोचन किया गया, जिसमें लद्दाख क्षेत्र के समग्र विकास पर बल दिया गया है। इस दस्तावेज में सतत पारिस्थितिकी प्रक्रियाओं, स्थानीय सामग्री और मानव

संसाधनों के सृजन की पृष्ठभूमि में पर्यटन को प्रोत्साहित करने की कल्पना की गई है। इस कार्यक्रम के अवसर पर लद्दाख के संसद सदस्य श्री जामयांग सेरिंग नामग्याल, संघ शासित प्रदेश लद्दाख के पर्यटन एवं संस्कृति सचिव श्री के. महबूब अली खान, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार में सचिव श्री अरविंद सिंह तथा अन्य गणमान्य अतिथि भी शामिल हुए।

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, संघ शासित प्रदेश लद्दाख प्रशासन और एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एटीओएआई) के साथ मिलकर 25-28 अगस्त, 2021 तक 'लद्दाख: नई शुरुआत, नए लक्ष्य' शीर्षक वाले इस कार्यक्रम का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य साहसिक, सांस्कृतिक और जिम्मेदार पर्यटन के पहलुओं पर जोर देने के साथ ही, एक पर्यटन स्थल के रूप में लद्दाख में पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योग से जुड़े हितधारकों को स्वदेशी उत्पादों के बारे में जानकारी और देश के बाकी हिस्सों के टूर ऑपरेटर्स/ खरीदारों के साथ संवाद के लिए स्थानीय हितधारकों को एक मंच उपलब्ध कराना है।

अपने सम्बोधन में लद्दाख संघ शासित क्षेत्र के उप राज्यपाल श्री राधा कृष्ण माथुर ने ऐसे नए पर्यटन उत्पादों का उल्लेख किया, जिनकी लद्दाख द्वारा शीतकालीन पर्यटन, विज्ञान आधारित पर्यटन आदि के रूप में यात्रियों को पेशकश की जा सकती है। श्री माथुर ने कहा कि लद्दाख में यात्रियों के लिए सांस्कृतिक और विरासत पर्यटन की पेशकश करने की काफी संभावनाएं हैं। यह उल्लेख करते हुए उन्होंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, कि यूनेस्को द्वारा बौद्ध मंत्रोच्चार को लद्दाख की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में पहचान की है। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए पर्यटन मंत्रालय की सराहना की।

पर्यटन, संस्कृति एवं उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने आभासी माध्यम से अपने संबोधन में कहा कि पिछले 40 वर्षों के दौरान लद्दाख में पर्यटन में काफी वृद्धि हुई है। लद्दाख 'ऊंचे दर्रों की भूमि' है, जिसमें प्राकृतिक सुंदरता के आनंद से लेकर ट्रेकर्स, बाइकर्स, साइकिल चालक, पर्वतारोहियों आदि के लिए साहसिक अवसरों तक हर पर्यटक को कुछ न कुछ प्रदान किया जाता है।

साथ ही, हेमीज, अल्की, थिकसे के बौद्ध मठ लद्दाख को एक सांस्कृतिक और विरासत का केंद्र बनाती हैं। मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने लद्दाख में पर्यटन की व्यापक संभावनाओं के दोहन के लिए 'लद्दाख: नई शुरुआत, नए लक्ष्य' कार्यक्रम शुरू किया है और यह एक ऐसा मंच है जो देश के दूसरे हिस्सों के टूर ऑपरेटर्स व ग्राहकों को लद्दाख के स्थानीय हितधारकों के साथ संवाद करने हेतु एक मंच उपलब्ध कराता है। उन्होंने आगे कहा कि पर्यटन मंत्रालय ने 'लद्दाख विजन दस्तावेज' भी तैयार किया है, जिसमें लद्दाख में पर्यटन विकास से संबंधित सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई है। केंद्र सरकार ने पर्यटक वाटर स्क्रीन प्रोजेक्शन मल्टीमीडिया शो और पर्यटकों के अन्य आकर्षण के लिए 23.21 करोड़ रुपये का योगदान भी दिया है और प्रशाद योजना के अंतर्गत चौकीहंग विहार परियोजना भी विकसित की जा रही है। है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि लद्दाख जैसे स्थानों में पर्यटन के लिए सामुदायिक भागीदारी का विकास काफी अहम है। श्री रेड्डी ने पेशेवर कुशल कार्यबल तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ समग्र पर्यटन विकास को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन भारत में सबसे बड़े रोजगार देने वाले क्षेत्रों में से एक है। प्रधान मंत्री जी ने पर्यटन को सेवा उद्योग में 12 चैंपियन क्षेत्रों में से एक के रूप में नामित किया है।

श्री अरविंद सिंह, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि लद्दाख साहसिक खेलों के लिए एक स्वर्ग है। इसके दुर्गम इलाके और बहती नदियां ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग, कैम्पिंग, पर्वतारोहण और बाइकिंग जैसी गतिविधियों के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराते हैं। लद्दाख क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पर्यटन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। श्री सिंह ने कहा कि कोविड 19 महामारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। तथापि, अब सुधार के संकेत दिखने लगे हैं और लद्दाख इस सुधार में आगे रहने वालों में से एक है, साथ ही पर्यटकों के लिए सबसे ज्यादा पसंदीदा स्थलों में से एक बना हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि पर्यटन की शुरुआत के साथ ही, मंत्रालय ने कोविड 19 सुरक्षा एवं स्वच्छता दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए

"साथी" पहल को लागू कर दिया है। अब तक, 10,000 से अधिक आवास इकाइयों ने साथी के तहत पंजीकरण कराया है।७

पर्यटन मंत्रालय ने देखो अपना देश जैसे विभिन्न अभियानों और पहलों के माध्यम से घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लद्दाख को बढ़ावा दिया है, जिसमें लद्दाख पर एक समर्पित वेबिनार आयोजित किया गया था।

लद्दाख के सांसद श्री जामयांग सेरिंग नामग्याल ने कहा, मुझे विश्वास है कि इस कार्यक्रम से न केवल लद्दाख के पर्यटन क्षेत्र को प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी एक मजबूती मिलेगी। इस कार्यक्रम में हमें एक नया दृष्टिकोण मिलेगा कि हम प्रदेश में कैसे एक सतत और जिम्मेदार पर्यटन विकसित कर सकते हैं।

श्री नामग्याल ने पर्यटन के लिए 'वर्ष भर के गंतव्य' के रूप में लद्दाख को प्रोत्साहन देने के साथ ही साथ लद्दाख में शीतकालीन पर्यटन और शीतकालीन खेलों की संभावनाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने एक महीने की अवधि के लिए जान्सकर शीतकालीन पर्यटन महोत्सव और शीतकालीन खेल महोत्सव के आयोजन पर जोर दिया, साथ ही कारगिल में पर्यटन को प्रोत्साहन देने का भी अनुरोध किया।

लद्दाख के पर्यटन एवं संस्कृति सचिव श्री के महबूब अली खान ने "लद्दाख के लिए एक पर्यटन विजन" दस्तावेज तैयार करने के लिए पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि इस दस्तावेज से इस प्रदेश के लिए पर्यटन नीति को अंतिम रूप देने में सहायता

मिलेगी। उन्होंने कहा कि पर्यटन नीति के लिए विशेषज्ञ सलाहकार नियुक्त किए गए हैं और बहुत जल्द लद्दाख की अपनी एक पर्यटन नीति होगी।

लद्दाख के उप राज्यपाल के सलाहकार श्री उमंग नरुला ने विजन दस्तावेज तैयार करने के लिए पर्यटन मंत्रालय का आभार प्रकट किया।

उद्घाटन सत्र के बाद, पैनल चर्चाओं में विकास, संपर्कता, अवसंरचना, सतत और समुदाय आधारित विकास, लेह में एडवेंचर पर्यटन के अवसरों व चुनौतियों और कम चर्चित क्षेत्रों में होमस्टे पर्यटन की संभावनाओं के लिए नए क्षेत्रों पर बल देने के साथ लद्दाख में पर्यटन के समग्र विकास और स्थानीय समुदाय व महिलाओं के सशक्तिकरण में इनकी भूमिका जैसे विभिन्न विषयों को शामिल किया गया।

कार्यक्रम में लगभग 150 प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें टूर ऑपरेटर, होटल व्यवसायी, राजनयिक, होमस्टे मालिक, भारत सरकार, लद्दाख प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और मीडिया से जुड़े लोग शामिल थे। तीन दिवसीय कार्यक्रम में प्रदर्शनी, पैनल चर्चा, बी2बी बैठक, टेक्निकल टूर, सांस्कृतिक संध्या से लेकर लद्दाख की पर्यटन सुविधाओं व पर्यटन उत्पादों का प्रदर्शन शामिल है।

गुवाहाटी में पूर्वोत्तर राज्यों के पर्यटन और संस्कृति मंत्रियों का दो दिवसीय सम्मेलन।

14 सितंबर 2021: पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के विकास और सम्पर्क से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के पर्यटन और संस्कृति मंत्रियों के दो दिवसीय सम्मेलन का गुवाहाटी में आयोजन किया गया।

पर्यटन, संस्कृति और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने एक सम्मेलन की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पर्यटन एक बहुत बड़ा परिवर्तनकारी साबित हो सकता है और देश में, विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र में, सामाजिक-आर्थिक बदलाव ला सकता है।

इसके साथ ही, पर्यटन मंत्रालय अपनी विभिन्न योजनाओं और प्रमुख पहलों के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्र को ब्रांडिंग और विपणन में भी सहायता प्रदान कर रहा है। 'प्रशाद' योजना के तहत भी मंत्रालय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में कई परियोजनाओं के लिए लगभग 200 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की है।

पर्यटन मंत्रालय पूर्वोत्तर क्षेत्र में आधारभूत संरचना, वास्तविक क्षमता और कौशल विकास पर विशेष जोर दे रहा है। मंत्रालय ने विषय आधारित पर्यटन परिपथों के एकीकृत विकास पर केंद्रित 'स्वदेश दर्शन' योजना के अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए 16 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है।

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है और समग्र रूप से एक ब्रांड के रूप में पूर्वोत्तर को बढ़ावा देना होगा तथा सम्पर्क और इस क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं को विकसित किए जाने की नितांत आवश्यकता है।

इस अवसर पर, संसदीय कार्य और संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यटन का विकास इस सम्मेलन का मुख्य विषय है। पूर्वोत्तर राज्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है और प्रत्येक राज्य में अद्वितीय प्रतिभा और क्षमता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी संरचना के विकास से पर्यटन के विकास में भी वृद्धि होगी और इससे पर्यटन क्षेत्र में विकास स्वचालित रूप से अन्य संबद्ध क्षेत्रों को विकसित करने में मदद करेगा और इससे राष्ट्र के विकास में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री के अनुसार पूर्वोत्तर भारत के विकास के बिना देश का समग्र विकास संभव नहीं है।

सम्मेलन में विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ उद्योग जगत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य प्रतिभागियों को पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा की जा रही कई परियोजनाओं और पहलों से अवगत कराना था।

अरुणाचल प्रदेश में परशुराम कुंड के विकास की आधारशिला

23 सितंबर 2021: पर्यटन, संस्कृति और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने माननीय जलशक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ आज अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में परशुराम कुंड के विकास की आधारशिला रखी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में उद्घाटन के लिए यहां परशुराम कुंड आकर खुशी हो रही है। यह एक ऐसा तीर्थस्थल है, जिसका भारत के लिए बहुत महत्व है।

तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत संवर्धन अभियान (प्रशाद) योजना के तहत "अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में परशुराम कुंड का विकास" नाम से इस परियोजना को पर्यटन मंत्रालय द्वारा जनवरी 2021 में 37.88 करोड़ रुपये की लागत से अनुमोदित किया गया था। इसके तहत स्वीकृत घटकों में कुंड क्षेत्र का विकास,पर्यटक सूचना केंद्र, कियोस्क, मेला ग्राउंड के आसपास का विकास, व्यू प्वाइंट, स्मारिका वस्तुओं की दुकानें, प्रवेश मार्ग और पार्किंग क्षेत्र, हिल्स व्यू पॉइंट, आहार क्षेत्र/ प्रसादम केंद्र, तीर्थयात्री प्रतीक्षा हॉल, वर्षा आश्रय स्थल, वस्त्र बदलने के कक्ष, जलापूर्ति तथा जल निकासी प्रणाली, दर्शक दीर्घा,अन्य सार्वजनिक सुविधाएं और ढलानों का स्थिरीकरण शामिल हैं।

वेबिनार : "इनक्रेडिबल इंडिया एडवेंचर : एक्सपीरियंसिंग द एवरेस्ट"

25 सितंबर, 2021: पर्यटन मंत्रालय ने आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत ने भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) के सहयोग से भारत के 75 वें स्वतंत्रता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर, 14 अगस्त 2021 से 12 धारावाहिकों की एक वेबिनार श्रृंखला शुरू की गई, जो प्रतिभागियों को अतुल्य भारत की एक आभासी (वर्चुअल) यात्रा पर ले जाती है। इस श्रृंखला में शुक्रवार, 24 सितंबर 2021 को, "इनक्रेडिबल इंडिया एडवेंचर: एक्सपीरियंसिंग द एवरेस्ट - आज़ादी का अमृत महोत्सव" शीर्षक से दूसरा धारावाहिक आयोजित किया गया था।

इस धारावाहिक में, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों ने माउंट एवरेस्ट और हिमालय के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अभियान पर अपनी आश्चर्यजनक अविश्वास्य कहानियों

को साझा किया और साहसिक खेल गतिविधियों जैसे स्कूबा डाइविंग, पैराग्लाइडिंग, पैरासेलिंग, बंजी जंपिंग आदि के अनुभवों के बारे में बताया। पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सुश्री संतोष यादव, श्री अतुल करवाल, आईपीएस और श्री रवींद्र कुमार, आईएएस ने वेबिनार में अपने अनुभव और चुनौतियों को साझा किया।

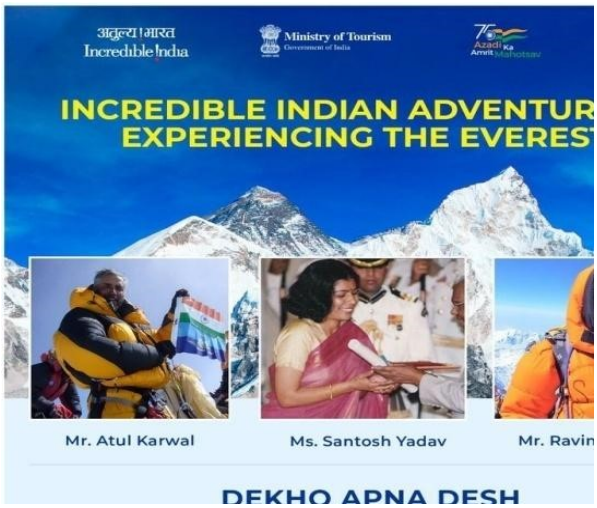

पर्यटन मंत्रालय आज़ादी का अमृत महोत्सव की यात्रा में, भारत के गौरवशाली अतीत और भव्य भविष्य से परिचित कराने के लिए बच्चों और युवाओं पर ध्यान दे कर रहा है। बच्चे और युवा हमारे अतुल्य भारत की ऊर्जा और ताकत हैं। मजबूत सांस्कृतिक मूल्यों के साथ और भारत को वैश्विक नेतृत्व के पथ पर आगे ले जाने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें हमारे राष्ट्र की विविधता की शक्ति से अवगत कराया जाए। श्रृंखला का प्रत्येक धारावाहिक भारत की सांस्कृतिक विरासत के बारे में विविध विषयों और "अतुल्य भारत" के बारे में जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित है। वेबिनार के दौरान, सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद के निदेशक और भारतीय पुलिस सेवा के 1988 बैच के अधिकारी, श्री अतुल करवाल ने मई 2008 में एवरेस्ट शिखर की चढ़ाई के दौरान अपने अनुभवों और चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने अंडमान और लक्षद्वीप द्वीप समूह में स्कूबा डाइविंग, मनाली-लेह-खरदुंगला रोड पर साइकिल चलाना, कैलाश मानसरोवर के लिए साइकिल चलाना और कैलाश पर्वत की परिक्रमा और लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश की यात्रा जैसी अन्य साहसिक गतिविधियों का अनुभव भी साझा किया।

श्री करवाल ने कहा कि अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और सख्त अनुशासन का पालन करें तो आपको लक्ष्यों को प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता है। श्री करवाल ने गुजरात में विभिन्न स्थानों पर पुलिस अधीक्षक और पुलिस उपायुक्त के रूप में कार्य किया है। उन्हें सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक, विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और उनके प्रतिष्ठित कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। श्री करवाल एक बहुत अच्छे मैराथन धावक हैं। उन्हें मार्शल आर्ट्स में ब्लैक बेल्ट का खिताब प्राप्त है और स्कूबा डाइविंग और स्काई डाइविंग में वे प्रशिक्षित हैं।

अगली सम्मानित अतिथि सुश्री संतोष यादव ने प्रतिभागियों को पर्वतारोहण और उपलब्धियों की एक बहुत ही प्रेरणादायक यात्रा पर लेकर गईं। सुश्री यादव की पर्वतारोहण की यात्रा हिमालय के बारे में उनकी जिज्ञासा और एक जुनून के साथ शुरू हुई। इस जुनून और जिज्ञासा के कारण ही

उन्होंने उत्तराखंड में उत्तरकाशी के नेहरू पर्वतारोहण संस्थान (एनआईएम) में प्रशिक्षण प्राप्त किया और उन्हें पर्वतारोहण के लिए सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार के रूप में चुना गया। सुश्री संतोष यादव एवरेस्ट शिखर को दो बार फतह करने वाली दुनिया की पहली महिला हैं और उन्हें न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अग्रणी महिला पर्वतारोही और नायिका के रूप में माना जाता है। सुश्री यादव को पर्वतारोहण के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। सुश्री संतोष यादव भारत-ताइवान सेसर कांगड़ी-I, भारत-जापानी कंचनजंगा अभियान आदि जैसे कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय अभियानों की भी सदस्य रही हैं।

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के जिला मजिस्ट्रेट, श्री रवींद्र कुमार, एक पूर्व मर्चेंट नेवल अधिकारी, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, एक पर्वतारोही, लेखक, वक्ता और एक समाज सेवी हैं। श्री कुमार पहले आईएएस अधिकारी हैं जिन्होंने 2013 में और फिर 2015 और 2019 में एवरेस्ट चोटी को फतह किया है। माउंट एवरेस्ट पर उनके अभियान ज्यादातर एक उद्देश्य के साथ थे जैसे स्वच्छ भारत अभियान, जल संरक्षण आदि के बारे में भारत के लोगों से अपील करना और एक वृत्तचित्र "शिखर से पुकार" में इसे आश्चर्यजनक ढंग से प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने भारत में अन्य आकर्षक ट्रेक, भारत में साहसिक खेलों के अनुभव जैसे स्कूबा डाइविंग, पैराग्लाइडिंग, रिवर राफ्टिंग, बंजी जंपिंग के अनुभवों को भी साझा किया। श्री कुमार को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें सिक्किम खेल रत्न पुरस्कार, विशेष खेल सम्मान, काशी रत्न पुरस्कार और कई अन्य सम्मान शामिल हैं। उन्होंने राज्य सरकार और केंद्रीय मंत्रालयों में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है।

पर्यटन मंत्रालय में अपर महानिदेशक, सुश्री रूपिंदर बरार और भारतीय विश्वविद्यालय संघ की महासचिव, सुश्री (डॉ.) पंकजा मित्तल ने वेबिनार की अध्यक्षता की। वेबिनार में 6,814 लोगों ने राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन (एनईजीडी) प्लेटफॉर्म और यूट्यूब पर सजीव सत्र के माध्यम से भाग लिया। वेबिनार पर आधारित प्रश्नोत्तरी में 4,185 प्रतिभागियों ने भाग लिया और प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया।

विश्व पर्यटन दिवस, 2021 का आयोजन

27 सितंबर 2022 : माननीय लोकसभा अध्यक्ष, श्री ओम बिड़ला ने आज विश्व पर्यटन दिवस, 2021 के उपलक्ष में पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में "समावेशी विकास के लिए पर्यटन" विषय पर मुख्य अतिथि व्याख्यान दिया। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री बिरला ने कहा कि कोविड के बाद भारत में पर्यटन क्षेत्र तेजी से अपने पुराने रूप में वापस लौट रहा है। हमें प्रतिबद्ध और सामूहिक प्रयासों से यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत दुनिया में

सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थल के रूप में उभरे। जिस तरह से हमने सामूहिक रूप से कोविड-19 को हराया,उसी प्रकार हमारी सामूहिक शक्ति और समन्वित प्रयास हमारी अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाएंगे। चूंकि पर्यटन, अर्थव्यवस्था और रोजगार के विकास कारकों में से एक है, इसलिए हमें इस क्षेत्र के और अधिक विकास के लिए विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भौगोलिक विविधता दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। भारत में पर्यावरण, अध्यात्म, शिक्षा और चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। भारत की घरेलू और विदेश नीति ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक सक्षम वातावरण प्रदान किया है। हमारा लक्ष्य, भारत को पर्यटन स्थल के रुप में पहले स्थान पर लाना होना चाहिए।

इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पर्यटन के अनुकूल स्थलों को विकसित करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास किए जाने जाने की आवश्यकता है। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय, दोनों, स्तरों पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों का पूरी सक्रियता से उपयोग किया जाना भी जरूरी है।

उन्होंने आगे कहा, "मेरा सुझाव है कि पर्यटन के संवर्धन के लिए कार्य योजना तैयार करते समय ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए महत्वाकांक्षी और सतत प्रयासों को भी शामिल किया जाना चाहिए। इससे हस्तशिल्प जैसे अन्य ग्रामीण उत्पादों की मांग पैदा होगी और यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक मजबूती प्रदान करने में सहायक होंगे।"

देश में बहुत से पर्यटन स्थल हैं, जिनके बारे में जानकारी का अभाव है। मेरा एक और सुझाव है कि ऐसे अल्प ज्ञात पर्यटन गंतव्यों को भारत के पर्यटन मानचित्र पर शामिल किया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग इन स्थलों के बारे में जान सकें।

श्री बिरला ने निधि 2.0 (आतिथ्य उद्योग का राष्ट्रीय एकीकृत डेटाबेस) का भी विमोचन किया और "भारत पर्यटन सांख्यिकी: 2021 एक नज़र में" जारी किया। श्री बिरला ने आशा व्यक्त की कि निधि 2.0 डेटा बेस, इस प्रयास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के महासचिव श्री जोराब पोलोलिकशविली का एक वीडियो संदेश प्रदर्शित किया गया। अपने वीडियो संदेश में उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि पर्यटन हमारे समाज को महामारी के प्रभाव से उबरने में मदद कर सकता है और यह उन लोगों को आशा की उम्मीद प्रदान करता है जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। दुनिया के कई हिस्सों में, पर्यटन धीरे-धीरे शुरू हो गया है और पर्यटन के विकास से बड़ी एयरलाइंस से लेकर छोटे पारिवारिक व्यवसाय तक और सबसे बड़े शहरों से लेकर गरीब समुदायों तक हर क्षेत्र को लाभ प्राप्त होना चाहिए। इसका यही मतलब है कि हम किसी को पीछे नहीं छोड़ेंगे। "भविष्य में आगे बढ़ने के लिए, समावेशी निर्णय हमारे क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे"।

पर्यटन मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, "पर्यटन क्षेत्र उन कुछ क्षेत्रों में से एक है, जिन्हें इस महामारी के कारण सबसे अधिक हानि उठानी पड़ी है और पर्यटन की जल्द बहाली इस क्षेत्र के फायदे और विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में नागरिकों को पहले ही 85 करोड़ से अधिक कोविड टीके लगाए जा चुके हैं। तेज़ी से जारी टीकाकरण की रणनीति के साथ, हम अब नए वर्ष की शुरुआत में देश को पर्यटन के लिए फिर से खोलने के काफी करीब पहुंच गए हैं। टीकाकरण अभियान पर लगातार ध्यान देने के लिए हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हैं।"

पर्यटन राज्य मंत्री श्री श्रीपद येसो नाइक ने अपने संबोधन में कहा कि पर्यटन का पुनरुद्धार वैश्विक अर्थव्यवस्था की बहाली के कारक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैश्विक, क्षेत्रीय और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं पर इसके प्रभावों के लिए दोनों, विकसित और विकासशील देशों के लिए पर्यटन उद्योग की स्थिरता प्रासंगिक है। उन्होंने आगे कहा कि पर्यटन के लिए एक जिम्मेदार आचरण को अपनाने से, यह न केवल पर्यटन उद्योग बल्कि स्थानीय समुदायों के उत्थान में भी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाएगा, जिससे पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन को बनाए रखते हुए क्षेत्र में लोगों का सशक्तिकरण और विकास होगा। मंत्रालय ने महामारी से हुए नुकसान की भरपाई करने के लिए प्रौद्योगिकी का पूर्ण उपयोग करने के लिए एक विस्तृत रणनीतिक योजना बनाई है। इस अवसर पर पर्यटन राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट, पर्यटन सचिव श्री अरविंद सिंह, पर्यटन महानिदेशक, श्री कमलावर्धन राव, यूएनईपीके प्रमुख, श्री अतुल बगई, तथा पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के अलावा यात्रा एवं आतिथ्य उद्योग के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

13-14 सितंबर 2021 **को गुवाहाटी में आयोजित किए गए पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों के पर्यटन और संस्कृति मंत्रियों के दो दिवसीय सम्मेलन में असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा, संस्कृति और संसदीय कार्य राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल और पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी और पर्यटन एवं रक्षा राज्य श्री अजय भट्ट तथा अन्य गणमान्य अतिथि।**

***

आज के कार्यक्रम में घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने और नए पर्यटन उत्पादों के विकास में सहयोग के लिए पर्यटन मंत्रालय और आईआरसीटीसी के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

रपटा घाट, मंडला का एक दृश्य

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,कमरा नं-2, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली -110001

पर्यटक हैल्पलाइन 1800111363 लघु कोड : 1363 [24X7]